होली का विकृत स्वरूप

होली गीतों पर एक चिंतन!

लेखिका: रिंकू ताई

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना:

आज होली यह पर्व बड़ी विकृत तरीके से जगह-जगह मनाया जाता है। कही लोग अंडे एक दूसरे पर फोड़ रहे हैं। कहीं पर दीवारों और फर्नीचर के पेंट और वार्निश के रंगों से होली खेलकर त्वचारोगों को बुलाया जा रहा हैं। कहीं लोग नशे में धुत है। कहीं-कहीं पर मर्यादाएं लांघी जा रही है जिससे कई पुलिस केसेस हर साल दर्ज हो रही है। और इन सबके चलते हिंदुओं का ज्ञान देने वाले कई विज्ञापन आपको जगह जगह देखने मिल जाते हैं।
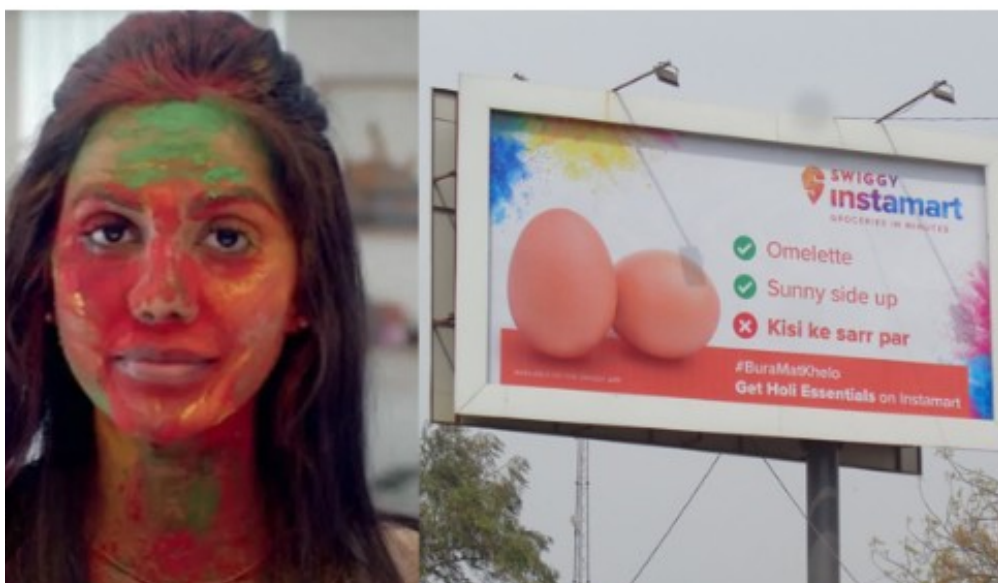
कुछ उदाहरण

आज यह विकृत स्वरूप जिन कारणों से है उनको बढ़ावा किसने दिया? यह प्रश्न चिंतन का विषय है। पर क्या होली इस विकृत मानसिकता को बढ़ावा देने वाला पर्व है या इसे सोच समझकर विकृत किया गया है? आइए इस पुस्तिका से समझते हैं की होली को विकृत करने मे सिनेमा के गानों का कितना योगदान हैं?

इस चिंतन पुस्तिका में आप जानेंगे होलीका उत्सव का मूल स्वरूप क्या है? क्यों यह उत्सव मनाया जाता था? और किस तरह से मनाया जाता था? आप पढ़ेंगे कुछ हिंदी सिनेमा के गीतों के बारे मे जो अक्सर होली मिलन के अवसर पर बड़े जोर शोर से बजाए जाते हैं। और देखने मे ये भी आता हैं की हिन्दी फिल्मों के सेट के जैसा या टीवी सेरियल्स के सेट के जैसा व्यवस्थापन और ताम झाम होली मिलन पर किया

जाता हैं। यह होली मिलन का आयोजन क्या उचित है? हिन्दी गीतों के बारे मे ही यहा चर्चा की गई हैं।

होली मनाते फिल्मी सितारे

यह पुस्तिका लिखने के पीछे का उद्देश्य केवल इस पर्व की गरिमा बनाए रखने के लिए चिंतन करना है। तथा उपाय क्या कर सकते? इसका उत्तर ढूंढना भी है।

होली पर ज्ञान

कोई बड़े हिन्दू त्योहार पर धर्म विरोधी ताकते हिन्दू जन मानस को नीचा दिखाने के लिए और अपने आप को बड़ा ज्ञानी बताने के लिए सक्रिय हो जाती हैं। आज हम देखते हैं कि जैसे ही होली आई है कई बड़े-बड़े व्यवसायिक संघटन (अरेSSS कंपनियां) अपने विज्ञापन इस तरह देती है जैसे मानो होली मनाएंगे तो बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। पर्यावरण का दुनिया भर का ज्ञान केवल होली के समय पर

इन विज्ञापनों में, सामाजिक संचार माध्यम पर कई नीले निशान वाले खातों पर, इस तरह दिया जाता है जैसे मानो साल भर तो बहुत अच्छा पर्यावरण रहता है।

आज अभीव्यक्ति की स्वतंत्रता (अरेsss फ्रीडम ऑफ स्पीच एण्ड इक्स्प्रेशन) के नाम पर हर कोई मुंह खोल के जो मन मे आता है वह सामाजिक संचार माध्यम पर लिख रहा है, बोल रहा है। जैसे-जैसे होली नजदीक आ रही है वैसे-वैसे आपको होलीका कैसे मूलनिवासी थी और कैसे सनातन पुरुष प्रधान संस्कृति ने उसकी बलि ली इस पर आधारित कई लेख मिल जाएंगे, कई वीडियो मिल जाएंगे। पर उसमें होलीका कश्यप ऋषि की पुत्री थी यह मूल तथ्य कहीं पर भी नहीं रहेगा। एक बालक को जीवित जलाने के लिए चिता पर बैठने वाली स्त्री कैसे किसी का आदर्श हो सकती है? होलीका चिता पर प्रल्हाद जी को लेकर उन्हें जीवित जलाने की मंशा से ही बैठी थी। होलिका को पीड़ित बताने के पहले यह भी जानना जरूरी है कि उसके कर्म क्या थे?

एक स्त्री से पूरा समाज प्रेम, करुणा, दया, वात्सल्य इन भावनाओं की अपेक्षा करता है ना की होलीका की तरह किसी बालक को जीवित जलाने की। और एक महिला को प्रेम, करुणा, दया, वात्सल्य यही भावनाएं पूर्ण करती हैं| यह सकारात्मक भावनाएं जरा भी किसी व्यक्ती को बुजदिल या कमजोर नहीं करती। सोचिए अगर यह सकारात्मक भावनाएं इस जगत से मीट गई तो क्या होगा?

इन दिनों यह भी आपको बार-बार पढ़ने में आएगा की किस तरह हिंदू समाज महिलाओं पर अत्याचार करता है और एक महिला को जलाकर त्यौहार मनाता है। उपलब्ध इतिहास के अनुसार ऐसी कोई घटना नहीं है जिस पर किसी महिला को होलीकादहन के समय जीवित जलाया गया हो। होलीकादहन एक विष्णु भक्त के सकुशल होने तथा एक आसुरी प्रवृत्ति वाली महिला का अंत होने के कारण मनाया जाता है।

पर आज हमारी यह हालत क्यों हुई की हर कोई हमारे ही त्योहार पर हमें ज्ञान देता है? इस प्रश्न का उत्तर हम हिंदू ही है। कैसे? यह जानने के लिए तो आपको पूरी पुस्तिका पढ़नी पड़ेगी।

ये कुछ ऐसे लेखों के उदाहरण हैं।

कृष्ण भक्ति और रंगपंचमी

होली का नारायण के साथ क्या संबंध हैं ये मैंने पहले ही बताया हैं। रंगपंचमी उत्सव कृष्ण को समर्पित है। कृष्णभक्ति का पर्व है। तो प्रश्न यह उठता है कि यह आज इतना विकृत क्यों हो गया? क्या हम कृष्ण भक्ति करते हैं होलि के समय? यह प्रश्न जब हम अपने आप से पूछते हैं तो कहीं ना कहीं कोई उत्तर नहीं मिलता। और फिर से हम ये सोचने लगते हैं 'कहां गई कृष्ण भक्ति?'

बिल्कुल इंदिरा गांधी की लगाई हुई इमरजेंसी के पहले तक होली और रंगपंचमी कृष्ण भक्ति में डूबी होती थी। आज बरसाना जैसी कुछ एक जगह छोड़ दे तो इस पर्व पर कृष्ण भक्ति कही नजर ही नहीं आती। ऐसा क्या हो गया की कृष्ण भक्ति

होली और रंगपंचमी से विलग हो गई? बस इसी प्रश्न का उत्तर अब आगे के कुछ पन्नों में आपको मिलेगा।

हिंदी सिनेमा के दुखी सीन

हमेशा से ही हिंदी सिनेमा भारतीय त्योहारों को मनहूस बताने की कोशिश करता आया है। दामिनी जैसी एक फिल्म आती है और वह सुपरहिट हो जाती है जबकि फिल्म में होली को बलात्कार का मौका बताया गया? हमने देखी तभी तो फिल्म हिट हुई ना!

अगर कोई जेम्स आफ बॉलीवुड जैसा विचार प्रवर्तक आता है और फिल्मों की यह गंदगी बड़े अभ्यास पूर्ण तरीके से सबके सामने लाता है तो फिर वह क्या गलत करता है? इतने सालों तक हमारे त्योहार हमारे ही देश की फिल्मों में गलत तरीके से बताए गए और आज भी यह सिलसिला भारतीय संस्कृति को मिटाने के लिए जारी है उसके पीछे कहीं ना कहीं हिन्दू समाज कारण हैं। भारत की जनसंख्या का अधिकतर हिस्सा हिन्दू धर्म को मानता हैं। हमने ही ये ऐसी फिल्मे देखी हैं और हम ही जो आज भी हमारे त्योहारों पर इन फिल्मों के अर्थहीन गीतों को सुनते और सुनाते हैं। रेडियो पर, टीवी पर सब जगह ये गाने इसीलिए चलाए जा रहे हैं क्यू की हम सुन और देख रहे हैं।

हम ही हैं जो होली के बॉलीवुड सोंग्स यूट्यूब पर सर्च करते हैं और उन्हें जोर-जोर से हमारे होली पर्व पर बजाते हैं। इन गीतों का अर्थ, इनमें बताए गए डांस स्टेप्स और गीतों में जो होली आयोजन बताया गया है वह विकृत और विकृत होता जा रहा है। अब समय आ गया है कि हम खुलकर कहें हिंदू त्योहारों का विकृत स्वरूप चित्रित करना बंद करें।

स्वतंत्र भारत में और इतना ही नहीं ब्रिटिश काल के भारत में भी सबसे ज्यादा फिल्मों की कमाई अगर किसी समुदाय से होती थी तो वह हिंदू समुदाय था। हिंदू समुदाय के लोग मनोरंजन के लिए शुरू से फिल्में देखते आए हैं। यह फिल्में, फिल्मों

के कलाकार अगर प्रसिद्ध हो पाए हैं तो वह केवल उनके हिंदू दर्शकों की वजह से। खून की होली जैसे डायलॉग पर सीटियां बजाने वाले ज्यादातर हिंदू ही थे। होली के गानों में भीगती हुई लड़की को देखकर तालियां बजाने वाले ज्यादातर हिंदू ही थे। और आज भी होली के अश्लील गाने लूप में बज रहे हैं तो वह किसी हिंदू के होली मिलन कार्यक्रम में ही। अगर हम ही इस अश्लीलता को बार-बार सुन रहे हैं तो फिर अन्य लोगों को आसानी से मौका दे रहे हैं कि वह हमें सिखाएं 'हमने त्यौहार कैसे मनाना?'

लिजेंडरी डायलॉग 'तारीख पर तारीख' की फिल्म 'दामिनी' के सीन का स्क्रीनशॉट

होलिका उत्सव का मूल स्वरूप

आगे बढ़ने से पहले होली का उत्सव का मूल स्वरूप समझ कर लेते हैं। होली भारतीय सौर वर्ष के समाप्त होने के पहले का पर्व है। इस समय प्रकृति विविध रंगों में रंगी रहती है और होली तथा रंग पंचमी इन्ही रंगों को सम्मान देनेवाले पर्व है।

वैसे होलीका दहन से लेकर रंगपंचमी तक यह उत्सव दो पर्वों का है। पर आजकल केवल दो दिन होली मनाई जाती है, पहले दिन होलिका दहन होता है और दूसरे दिन रंग से हम उत्सव मनाते हैं।

होलीकादहन

प्राचीन काल की भक्त प्रल्हाद की कथा होलिकादहन से जुड़ी है और यह कथा सभी को पता है। कश्यप ऋषि के पुत्र हिरण्यकश्यप अपनी सत्ता तीनों लोकों में प्रस्थापित करना चाहते थे। आज हम हिरण्यकश्यप को असुर जाति का मानते हैं। परंतु जन्म से वे एक ऋषिपुत्र थे। हिरण्यकश्यप अपने कर्मों के कारण असुर बने। होलीका हिरण्यकश्यप की बहन थी। होलीका जन्म से ऋषिकन्या थी पर अपने कर्मों के कारण असुरी बनी। हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रल्हादजी बहुत बड़े नारायणभक्त थे और प्रल्हादजी की नारायणभक्ति हिरण्यकश्यप को पसंद न थी। इसी कारण प्रल्हादजी को कई यातनाएं दी गई और उनकी हत्या के भी कई प्रयास किए गए।

ऐसे ही असंख्य प्रयासों में से एक था जलती चीता पर उनकी भुआ होलीका के साथ बैठना। होलिका को वरदान में एक दुशाला मिली थी जो अग्नि से रक्षा कर सकती थी। होलीका चिता पर वह दुशाला ओढ़ कर प्रल्हादजी को लेकर बैठी थी। पर वह कहते हैं ना ईश्वर के भक्तों को स्वयं ईश्वर बचाने आते हैं। तो बस वायुदेव ने अपना चमत्कार दिखाया और वह दुशाला प्रल्हादजी के शरीर पर जा गिरी। चिता पर

बैठी होलीका भस्म हो गई। प्रल्हादजी नारायण का जाप करते हुए सकुशल उस चिता के नीचे उतर गए।

होलिकादहन के पीछे विज्ञान

होलिका दहन सनातन संस्कृति का एक विशिष्ट पर्व है। पुराने जमाने में लकड़ियाँ एवं गोबर के कंडे शुद्ध घी के साथ इस दिन जलाए जाते थे।

किसी भी पेड़ की फरवरी और मार्च महीने में छटाई करना आवश्यक होती है। कुछ टहनियां ऐसी भी होती है जो पेड़ों पर ही सूख जाती है और वह पेड़ों के लिए भार हो जाती है। ऐसी टहनियां भी पेड़ों से काटना आवश्यक होता है। अगर छटाई ना की जाए तो वह पेड़ सही ढंग से बढ़ नहीं पाएंगे।

यह छाटी हुई और सूखी हुई टहनियों को एकत्रित कर होलीकादहन किया जाता था। आज भी देहातों में ऐसी सूखी हुई टहनियों को ढूंढ कर होलीकादहन किया जाता है। गोबर के कंडे और देसी गाय का घी होलीका पर चढ़ाया जाता है और कपूर से अग्नि दी जाती है।

अब कुछ महाज्ञानी कहेंगे कि यह सूखी लकड़ियाँ होलिका में एक साथ जलाने से क्या फायदा? उनका उपयोग तो भोजन पकाने के लिए क्यू नहीं करते थे?

पहले के जमाने मे और आज भी कई गावों मे जहा होलिकादहन शांति से होता हैं वहाँ पर सार्वजनिक होलिका दहन के लिए हर घर से पाच या ग्यारह लकड़ियाँ, पांच या ग्यारह गोबर के उपले, एक छोटी कटोरी भर के शुद्ध देसी गाय का घी, एक नारियल, गुड या मिश्री, और थोड़ा सा कपूर दान मे लेकर ही होलिकादहन किया जाता हैं। अगर कोई अपने घर पर वैयक्तिक होलिकादहन करना चाहता हैं तो वो भी पाच लकड़ियाँ, पाच गोबर के उपले, थोड़ा घी, एक नारियल, गुड या मिश्री, और कुछ कपूर के साथ होलिका को बनाता हैं और उसका पूजन कर उसे प्रज्वलित करता हैं। इससे ज्यादा कोई सार्वजनिक होली के लिए लेता नहीं और कोई अपनी वैयक्तिक होली मे भी जलाता नहीं।

अगली सुबह तक होली ठंडी हो जाती हैं और उसकी राख शरीर पर मली जाती हैं। अगर होली मे केवल ऊपर लिखी सामग्री का ही उपयोग हुआ हो तो ऐसी राख आप भी अपने शरीर पर मल सकते हैं। इससे त्वचा को ठंडक मिलती हैं। पेपर, रबड़ के

टायर, प्लास्टिक यह कचरा अगर आप जलाएंगे तो निश्चित ही पर्यावरण के लिए धोखा होगा और ऐसे कचरे की राख शरीर पर मलनी भी नहीं चाहिए। बची हुई राख आप अपने घर मे या खेत मे लगे पौधों को दे सकते हैं जिससे एक अच्छा उर्वरक (अरेsss फर्टिलायजर) आपके पौधों को मिलेगा जो नत्र की कमी को पूरा करेगा। अगर पेड़ों की भी सुखी और अतिरिक्त टहनियाँ काट कर चूल्हे मे जलायी जाती हैं तो उसकी भी राख खेतों मे डाल सकते हैं।

आज फसल होने के बाद पराली जला दी जाती है। इस परली के धुएं से हर साल प्रदूषण की समस्या सामने आती है। पर क्या पहले के जमाने में खेत में ही सारा कचरा जला दिया जाता था? नहीं पहले के जमाने में या आज भी कई जगहों पर कभी भी फसल के बाद में खेत में जो जैविक कचरा है उसे जलाया नहीं जाता। उसके पर गोमूत्र डालकर उसकी खाद बनाई जाती है या उसका कंपोस्ट बनाया जाता है। पर जिन्हें कंपोस्ट की मेहनत नहीं करनी है वे लोग इसे सीधा-सीधा जला देते हैं। जलने से जमीन का सूक्ष्मजैविक चक्र (अरेsss माइक्रोबियल साइकिल) बिगड़ जाता है और जमीन की पोषक गुणवत्ता खराब हो जाती है।

फरवरी मार्च महीने में ठंडी की फसल का समय खत्म हो जाता है। फिर से एक बार पूरे खेत में जैविक कचरा रहता है। इस कचरे को इकट्ठा कर इसके दो भाग किए जाते हैं। एक भाग का कंपोस्ट बनाया जाता है और दूसरे को गोबर के कंडों के साथ जलाया जाता है। इस जलाए हुए हिस्से की राख खेतों में डाल देने से कई पोषक तत्व जमीन को मिलते हैं जिससे अगली फसल में फायदा होता है। होली की राख भी इसी तरह सार्वजनिक जगहों पर लगे हुए पेड़ों के तनों में डालने से उन्हें खाद मिलती है।

कई बार सूखी हुई टहनियों में नीम जैसे औषधि वृक्षों की टहनियां भी होती है जिनकी राख औषधिय गुणों से युक्त होती है। ये राख वृक्षों के लिए, खेत की फसल के लिए प्रतिजैविक औषधी (अरेsss एंटीबायोटिक) की तरह काम करती है।

आज हम इस कारण को नहीं जानते, क्योंकि पिछले बाराहसो सालों से भारत की इस पवित्र भूमि पर कई लुटेरे आक्रमण होते गए और यह वैज्ञानिक ज्ञान कहीं ना कहीं इन लुटेरों की सत्ता के समय धूमिल होता गया। पर अब वक्त आ गया है कि हम उस खोए हुए ज्ञान को फिर से संजोके रखें। हमारी प्रथाओं को हमें समझने की

जरूरत है और उसी हिसाब से प्रथाओं को शुद्ध रूप में मनाने की भी आवश्यकता है।

रंगपंचमी

पहले दिन जो होलिका दहन किया उसकी राख रंगपंचमी तक आज भी कई जगहों पर शरीर पर उबटन की तरह लगाई जाती है। इसके पीछे का कारण मैंने पहले ही बताया है। जब राख शरीर पर मलते हैं तो फिर रंग कहा से होली से जुड़ गए?

इस समय प्रकृति चारों ओर अपने रंग बिखेर रही होती है। वृक्षों पर से पत्ते गिर चुके होते हैं। पलाश, गुलमोहर, कृष्णकमल, इत्यादि जैसे कुछ वृक्ष होते हैं जिन पर फूलों का बहार आता है। फूलों का अपना एक नाजुक स्वभाव होता है, उनकी तासीर ठंडी होती है। फूलों का उपयोग करके कई सौन्दर्य प्रसाधन (अरेsss कॉस्मेटिक) बनाए जाते हैं। उनमें फूलों की मात्रा कितनी रहती है यह तो पता नहीं पर रासायनिक तत्व बहुत रहते हैं यह बात हमें समझना जरूरी है।

पुराने जमाने में और आज भी कुछ जगहों पर फूलों की होली खेली जाती है। या इन फूलों को छांवमें सुखाया जाता है और हल्दी के साथ पीसकर इनका गुलाल बनाया जाता है। हल्दी त्वचा के लिए एक वरदान है। अगर उसके साथ औषधीय गुण वाले फूलों का पाउडर है तो कई त्वचा रोगों के लिए वह अत्यंत लाभकारी उपाय है। फूलों को या फूलों के गुलाल को अगर शरीर पर मल दिया जाए तो ऋतुपरिवर्तन की वजह से होने वाले कई शारीरिक समस्याओं का उपाय हो सकता है।

अगर हमें पारंपरिक तौर पर फूलों के गुलाल से ही होली माननी है तो हमारे घर के आसपास की खाली जगह पर हमें पलाश, गुलमोहर, गुलाब, कृष्णकमल जैसे पेड़ों

को लगाना चाहिए। इनके फूलों का उपयोग कर हम अच्छे से होली मना सकते हैं। और फूलों से गुलाल बनाने के लिए कई लोगों को रोजगार भी मिल सकता है। परंपरा को हम जितना शुद्ध करते जाएंगे उतना फायदा हमें होता रहेगा।

पलाश के पत्तों से पत्रावलि या पत्तल बनते हैं। यह पत्तल कागज, प्लास्टिक या थर्माकोल के बने थाली और कटोरियों से कई ज्यादा अच्छे हैं। क्यू की इनका जैविक विघटन (अरेsss बायोलॉजीकल डिसइन्टीग्रेशन) होता हैं तो यह पर्यावरण के अनुकूल हैं। पर झूठे पर्यावरणवादी कभी आपको पलाश के पत्तलों पर भोजन करते हुए नहीं दिखेंगे। ये पत्तल बनाने का व्यवसाय भी कई रोजगार निर्मित करता हैं।

फूलों के गुलाल और पत्तल का उत्पादन करने के लिए कई पौधे भी लगाने पड़ेंगे। ऐसे पौधे लगाने से पर्यावरण भी शुद्ध हो जाएगा और इनकी देखभाल के लिए फिर से रोजगार उत्पन्न होंगे। सनातन की परम्पराए अर्थव्यवस्था को मजबूत करती इसीलिए भारत सोने की चिड़िया था।

होली के हिन्दी सिनेमा के गीत

इस पुस्तिका में आगे कई हिन्दी गानोंपर विश्लेषण दिया गया हैं जो होली पर्व पर फिल्माए गए हैं। यह सभी गीत अपने-अपने समय पर सुपरहिट रहे हैं और आज भी हम इन्हे सुनते हैं। होली के जो अन्य सीन है उनका समावेश इस पुस्तिका में नहीं है। क्योंकि फिल्म का सीन तभी देखा जाता है जब फिल्म देखी जाती है पर गाने हमेशा सुने जाते हैं और गानों के बोल कहीं ना कहीं अपना असर छोड़ते हैं।

आप हर रोज एक ही भजन सुनिए और आप हर रोज एक ही दुख भरा गाना सुनिए, दोनों का अलग-अलग असर आपके व्यक्तित्व पर होगा। अगर आप भजन सुन रहे हैं तो निश्चित ही आप भक्तिभाव के धनी बनेंगे। अगर आप दुख भरे गाने ही सुन रहे हैं तो कहीं ना कहीं अवसाद आपको घेर ही लेगा। अगर आप हर रोज अश्लील गाने सुन रहे हैं तो कहीं ना कहीं आपके बरताव में वो झलकेगा।[1]

पारंपरिक भजनों को छोड़कर हमने सिनेमा के गाने होली मिलन के आयोजन पर बजाना शुरू किया है। इन गानों के अनुसार होली छेड़छाड़ का मौका, बदले का मौका, बलात्कार का मौका बन गया है। ऐसी फिल्मों को, ऐसे गानों को हमने ही प्रसिद्ध किया है क्योंकि हम ही देखने जाते हैं और हम ही ऐसे गानों को सुनते हैं।

१) होली:

१९४० मे एक फिल्म प्रदर्शीत हुई होली। फिल्म की शुरुआत ही होली के सीन से होती हैं। फिल्म की कहानी से ये अभिप्राय निकलता हैं की अगर आपको कोई गरीब लड़की पसंद आजाये तो कुछ मत सोचो, उसके घर के सभी पुरुषों को झूठे केस मे पुलिस के हवाले कर दो और बाद मे उस लड़की को अगवा कर उसके साथ जबरदस्ती विवाह कर लो।[2] अपहरण कर विवाह यह एक सामाजिक समस्या हो गई हैं[3], कही इसके बीज ऐसी फिल्मों ने तो नहीं बोए?

फिल्म मे एक होली का गीत हैं 'फागन की रुत आई रे'। गाने के बोल सुनकर आपको ऐसे लगेगा जैसे ये गाना कृष्ण को समर्पित हैं। पर आखिर मे ये गीत महिला के यौवन पर आकार खत्म होता हैं।[4] कृष्ण का नाम ले लेने से कोई अश्लील गीत भजन नहीं बनता हा पर भक्ति भावना जरूर आहत हो जाती हैं।

[1] https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/music/news/item-songs-to-disappear-from-tv-screens/articleshow/18611348.cms

[2] https://en.wikipedia.org/wiki/Holi_(1940_film)

[3] https://timesofindia.indiatimes.com/city/bengaluru/over-46-minor-girls-kidnapped-for-marriage-each-day-in-2021-ncrb/articleshow/94039605.cms

[4] https://www.oyelyrics.com/phaagan-ki-rut-aayi-re-lyrics-holi-amrit-lal-sitara-devi

२) औरत:

१९४० के पहले तक भारतीय सिनेमा में प्राचीन इतिहास पर आधारित फिल्में बनती थी। १९४० आते आते फिल्मों में अन्य विषयों पर भी चित्रण शुरू हो गया था खासकर सामाजिक समस्याओं पर। १९४० के दशक मे महबूब खान ने फिल्म बनाई 'औरत'। इस फिल्म मे दो होली के गीत हैं। पहला 'जमुना तट शाम खेले होली' और दूसरा 'आज होली खेलेंगे साजन के घर'।

'जमुना तट शाम खेले होली' इस गीत को भजन की तरह आज भी गाया जाता हैं। इस गीत के बोल मे अथवा इसके चित्रण मे कोई आपत्ति नहीं हैं। यह गीत राधा और कृष्ण के होली का वर्णन है।[5]

इसी फिल्म का दूसरा गीत हैं 'आज होली खेलेंगे साजन के घर'। इस गीत का पूरा अर्थ यह निकलता हैं की प्रेमिका अपने प्रेमी के घर जाकर ही होली खेलना चाहती है। प्रेमिका को ही प्रेमी से मिलने की जिद है। प्रेमिका एक १६-१७ साल की कन्या हैं और अपने प्रेमी से मिलने के लिए और उसके साथ होली मनाने के लिए आतुर है।[6]

इस गीत में प्रेम विवश प्रेमिका दिखाई गई है। कहीं पर भी इस गीत में त्यौहार वाला या भक्ति वाला कोई भाव ही नहीं है। १९४० के दशक से लेकर आजतक बाली उम्र का प्यार सबसे पवित्र होता हैं और वही सच्चा होता हैं ये हर एक फिल्म मे बताया गया हैं। पर सच तो ये हैं की बाली उम्र मे लड़के लड़कियाँ अगर अपनी पढ़ाई पर ध्यान देंगे या कोई स्किल सीखेंगे तो उनके लिए ज्यादा अच्छा रहेगा।

३) शादी:

१९४१ की फिल्म 'शादी' मे होली पर चित्रित गीत के बोल हैं 'भिगोई मोरी साड़ी रे'। गीत की नायिका पहले ही बोल रही हैं की होली के अवसर पर रंग खेलते समय उसकी चोली (स्त्रियों का एक तरह छाती पर पहनने का वस्त्र, सहसा अंतरवस्त्र) न

[5] https://genius.com/Sardar-akhtar-jamuna-tat-shyaam-khelen-hori-lyrics

[6] https://www.youtube.com/watch?v=PNkvWwgtAT4

भिगाई जाए।[7] होली के साथ चोली को जोड़कर महिला को वस्तुनिष्ट बनाया गया हैं। शादी यह फिल्म जयंत देसाई ने निर्देशित की हैं।[8]

४) सावरियाँ:

१९४९ की फिल्म 'सावरियाँ' का गीत 'जरा बच के' होली पर चित्रित हैं। इस गीत के बोल के अनुसार लड़की ने होली के दिन बच के रहना चाहिए क्यू की कोई पिचकारी मारेगा तो कोई कलाई मरोड़ेगा। सब लोग भांग पीकर होली खेलने चले हैं। [9] महिलाओं को छेड़ना और भांग पीना होली हैं ये आशय देने वाला ये गीत तब का हैं जब देश मे संविधान भी लागू नहीं हुआ था। इसी चलन के गीत आज भी फिल्मों मे होली के अवसर पर बताए जाते हैं। नशे और होली को जोड़ता हुआ यह शायद पहला फिल्मी गाना भारतीय सिनेमा के इतिहास मे बना हैं।

५) जोगन:

१९५० में एक फिल्म आई 'जोगन'। इस फिल्म में 'डालो रे रंग डालो रे रसिया' यह गाना होली पर चित्रित किया गया है। पूरे गाने का अर्थ है प्रेमीका प्रेमी के साथ लाज शर्म भूल कर होली के मौके पर एक होने के लिए तैयार है। [10]

यह फिल्म केदार शर्मा ने दिग्दर्शित की थी। इस फिल्म में नायिका का नाम मीराबाई (नरगिस दत्त उर्फ फातिमा रशीद) है जो एक विवाहित स्त्री है। नायिका पराए पुरुष विजय (मो. यूसुफ़ खान) जो नास्तिक है उससे प्रेम करती हैं।[11] पूरी फिल्म ही हिन्दू भावनाओं को आहत करती हैं। यह फिल्म विवाहबाह्य प्रेमसंबद्धों को बढ़ावा देती हैं। पर यह अपने जमाने मे सुपरहिट हुई थी क्यू की हम हिन्दू ही मीरा के भजनों से प्रभावित होकर इसे देखने गए थे। राजस्थान की संत परंपरा में मीराबाई एक महान कृष्णभक्त संत होकर गई है। उनके कई भजन इस फिल्म में हैं।

[7] https://www.hindilyrics4u.com/song/bhigoi_mori_saari_re.htm

[8] https://www.imdb.com/title/tt0214109/

[9] https://www.hindilyrics4u.com/song/zara_bach_ke_maro_pichkari_kalai_tumhari_na_lachke.htm

[10] https://lyricsing.com/jogan/daro-re-rang-daro-re-rasiya.html

[11] https://en.wikipedia.org/wiki/Jogan_(film)

मीराबाई कृष्ण की भक्त थी। इस फिल्म में जो मीरा नाम का किरदार है वह पर-पुरुष के प्रेम में अंधी हो चुकी हैं। भक्तिमय होना और प्यार में अंधा होना दोनों में उत्तर और दक्षिण का फर्क है। पर इस फिल्म में दोनों को एक ही रंग में रंगा है। और यह एक ट्रेंड बन चुका हैं की प्रेम और भक्ति को एक ही तराजू मे तोला जाए। मीराबाई जैसी महान हिन्दू संत की भक्ति की तुलना एक विवाहबाह्य प्रेमसम्बद्ध से कैसे की जा सकती हैं?
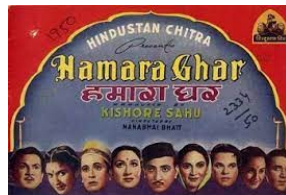
६) हमारा घर:

१९५० की फिल्म 'हमारा घर' का गीत 'रंग भरी होली आई' होली पर आधारित हैं। इस गीत के बोल के अनुसार मस्ती मे डूबे लोगों की टोली मस्ती मे झूमती गोकुल के गाव जा रही हैं। मुरली की धुन पर लड़की अर्थात राधा नाच रही हैं। लड़के ने उसपर पिचकारी मारी तो उसकी साड़ी गीली हो गई हैं। बीच सड़क पर नाचती इस लड़की की सब लड़के ठिठोली कर रहे हैं।[12] मो. रफी का ये गीत भीगी लड़की और सब लड़के उसे किस तरह छेड़ते हैं इसका का उल्लेख करता हैं। राधा कृष्ण का संदर्भ लेकर इस आशय का गीत केवल होली पर ही क्यू हैं?

७) माशूका:

१९५३ की फिल्म 'माशूका' मे 'होली खेले नंदलाला' यह गीत होली पर चित्रित हैं। गीत मे नंदलाला का नाम है पर इसका कृष्ण भक्ति से कोई लेना देना नहीं हैं। गीत के बोल के अनुसार लड़का और लड़की कृष्ण और राधा हैं और होली खेल रहे हैं। लड़की की चोली गीली हो गई हैं फिर भी लड़का रुकने के लिए तैयार नहीं हैं। फिर वो लड़की को छेड़ता हैं। लड़की को चिंता होती हैं की अगर अब इस गीली चुनरी को कोई देख लेगा तो वो क्या सोचेगा। उसपर लड़का झूठ बोलने की सलाह देता हैं।[13] कृष्ण ही छेड़ने वाला क्यू हैं?

[12] https://www.hindilyrics4u.com/song/rang_bhari_holi_aayi.htm

[13] https://www.hindilyrics4u.com/song/holee_khele_nandalala_biraj_me.htm

८) आन:

१९५३ की फिल्म 'आन' का होली पर गाना है 'खेलो रंग हमारे संग'। इस गाने का आशय है की एक महिला याने के फिल्म की नायिका (नादिरा) शारीरिक संबंध के लिए तरस रही है।[14] होली के इस गीत के माध्यम से महिला की वासना को आम बना दिया गया है।

इस फिल्म के हीरो मो. यूसुफ़ खान और निर्देशक महबूब खान हैं। 'अपने अपहरणकर्ता से प्रेम करो क्यू की वह अच्छा इंसान हैं' ऐसा कुछ प्लॉट इस फिल्म मे दिखाया गया हैं।[15] छेड़नेवाला, अपहरण करने वाला, बलात्कार करने वाला ही सच्चा प्रेमी हो सकता हैं ऐसा संदेश १९५० के दशक से कई फिल्मों के माध्यम से सिनेमा मे दिया गया हैं। असली प्रेमी का यह चित्रण कुमारी कन्याओं के मन पर यह अंकित कर रहा हैं की अगर कोई पुरुष ऐसा नहीं हैं तो वो उन्हे कभी सुखी नहीं कर सकता। ऐसी मानसिकता वाले लड़के से प्रभावित होती हैं और फिर अपने जीवन को दुखों से भर लेती हैं। कोई समझाने का प्रयास करे तो उत्तर देती हैं, 'मेरा वाला ऐसा नहीं हैं!'

९) राही:

१९५३ मे प्रदर्शित फिल्म 'राही' मे 'होली खेले नंदलाला' ये गीत होली पर चित्रित हैं। यह फिल्म अंग्रेजी मालिकों के चाय बागानों के मजदूरों पर आधारित हैं। गीत के बोल पहले नंदलाला और उनके सखाओं की होली के बारे मे बताते हैं। फिर रब्बा रब्बा करते हुए फिल्म की नायिका का शारीरिक वर्णन हैं। उसके बाद अत्याचारी ईसाई ब्रिटिश मालिक की पत्नी को परेशान करते वक्त 'रामा रामा' का उद्घोष हैं।[16] रावण ने भले ही राम की पत्नी का अपहरण किया हो पर राम ने मंदोदरी को कभी परेशान नहीं किया और न ही राम सेना के किसी भी सैनिक ने ये किया फिर राम का नाम लेकर अत्याचारी ब्रिटिश अफसर की बीवी को छेड़ने का क्या औचित्य हैं?

---

[14] https://www.hindilyrics4u.com/song/khelo_rang_hamaare_sang_aaj.htm

[15] https://www.youtube.com/watch?v=-sKvSX42_ZU

[16] https://www.youtube.com/watch?v=wnJNkbGhnv4
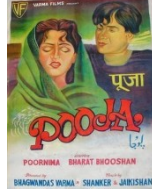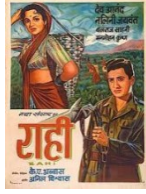
१०) पूजा:

१९५४ में 'पूजा' नामक फिल्म आई। इस फिल्म में होली पर चित्रित दो गीत है। पहला गीत हैं 'रंग खेलों रसियाँ' और दूसरा गीत हैं 'होली आई प्यारी प्यारी'।

'होली आई प्यारी प्यारी' इस गीत के बोल के अनुसार लड़की अपने पिया से कहती हैं की होली आई हैं इसीलिए पिया ने उसे भिगाना चाहिए। आगे लड़की कहती हैं की लड़के के नैन शराबी हैं।[17] शराब और प्रेम का क्या नाता हैं? शराबी नैनो वाले से ही प्रेम होना चाहिए ऐसा संदेश इस गीत से दिया गया हैं। ये गीत जिस जमाने का हैं उस जमाने मे कोई एकाध ही व्यक्ती शराब का आदि होता था। पर अब ये आधुनिकता के नाम पर जरूरी हो गया हैं।

'रंग खेलों रसियाँ' इस गीत के प्रेम है पर अभी तक संबंध नहीं हुआ है तो प्रेम कुंवारा है ऐसा अभिप्राय देने वाला यह गीत, आगे ये गीत पत्थर की लकीर खींचता हैं की होली पर ही प्रेम का कुंवारापन दूर हो सकता है और तब ही प्रेम सच्चा और पवित्र हो सकता हैं।[18] इस गीत में केवल वासना को बढ़ावा दिया गया हैं, कहीं पर भी पारंपरिक राधा-कृष्ण भक्ति नहीं है।

यह फिल्म भगवानदास वर्मा ने निर्देशित की हैं और इसके हीरो हेरोइन भारत भूषण तथा मेहरबानों मो. अली (पूर्णिमा) हैं। ये मेहरबानों मो. अली सीरीअल किसर इमरान हाशमी की दादी भी हैं।[19] इस फिल्म के गीत हसरत जयपुरी उर्फ इकबाल हुसैन और शैलेन्द्र ने लिखे हैं। ज्यादा तर गीत मो. रफी ने लता मंगेशकर के साथ गाए हैं। यह फिल्म एक बालविधवा के जीवन पर आधारित हैं।[20] हिन्दू समाज कैसे एक महिला से परिवार तथा सुखी जीवन का अधिकार छीनता हैं ये इस फिल्म मे बताया गया हैं। फिल्म जिस समय प्रदर्शीत हुई थी उस समय विधवाओं के पुनर्विवाह भी होना शुरू हो गए थे लेकिन फिर भी हिन्दू समाज को विकृत दिखाने हेतु यह फिल्म प्रदर्शित की गई।

---

[17] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_ayi_pyari_pyari_bhar_pichakari_rang_de_chunariya_hamaari_part1.htm

[18] https://www.youtube.com/watch?v=zmDP0eKU8aA&t=14s

[19] https://en.wikipedia.org/wiki/Purnima_(Hindi_actress)

[20] https://www.imdb.com/title/tt0374137/

११) इंसानियत:

१९५५ मे आई फिल्म 'इंसानियत' का गीत 'तेरे संग खेल के' होली पर चित्रित हैं। गीत का चित्रण राधा कृष्ण के मंदिर मे किया हैं। लड़का लड़की को कृष्ण और राधा कहा गया हैं। लड़की अपने प्रेमी के साथ होली खेल कर बदनाम हो गई हैं। प्रेम की ये बदनामी आरती की थाल हाथ मे लेकर नृत्य कर बताई जा रही हैं।[21] लड़की की बदनामी क्यू हो रही हैं ये बताने के लिए मंदिर और आरती का समय क्यू चुनते हैं सिनेमावाले?

यह फिल्म १९५० के दशक मे प्रदर्शीत हुई थी। फिल्म 'पलेतूरी पीला' इस तेलुगु फिल्म का पुनर्निर्माण हैं। मो. यूसुफ़ खान और देवानंद की फिल्म एक बागी सिपाही की कहानी हैं।[22] सेना के सिपाहियों को बागी बताने का चलन देश की स्वतंत्रता के बाद से ही फिल्मों मे हैं। ये चलन सेना की छवि धूमिल कर रहा हैं।
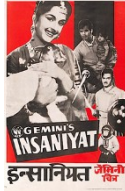
१२) दुर्गेश नंदिनी:

१९५६ में फिल्म 'दुर्गेश नंदिनी' प्रदर्शित हुई थी। इस फिल्म में होली पर चित्रित गाने के बोल है 'मत मारो श्याम पिचकारी'। आपको बोल पर से लगेगा कि इस गीत में राधा और कृष्ण के होली का वर्णन होगा, भजन जैसा आप इसे सुन सकते हैं; पर नहीं ऐसा कुछ नहीं है इस गीत में! इस गीत के माध्यम से योगेश्वर कृष्ण को एक ऐसे लड़के की तरह बताया गया है जो सुंदर लड़कियों के साथ होली खेलना चाहता है और उन्हें छेड़ता है। श्याम अर्थात श्रीकृष्ण होली के बहाने लड़कियों को छेड़ने का काम अपने बाली उम्र मे याने टीनेज में ही करता है और वह सब लड़कियाँ भी बाली उमर की है। शाम के साथ उसकी प्रेमिका इस बाली उम्र में लाज शर्म त्याग कर प्रीत निभाने के लिए कुछ भी करने के लिए है।[23]

इसी फिल्म मे एक और गीत हैं 'प्यार के रंग मे' और ये भी होली के अवसर पर ही चित्रित हैं। लड़की बाली उम्र की हैं और वो अपने प्रेमी के साथ होली खेलना चाहती

[21] https://www.youtube.com/watch?v=0NTgM7eDW_M&t=2s

[22] https://www.imdb.com/title/tt0273681/

[23] https://www.hindilyrics4u.com/song/mat_maro_shyam_pichkari.htm

हैं। वो प्रेम के रंग मे ही रंगना चाहती हैं।[24] प्यार करने और संबंध बनाने के लिए आतुर एक किशोरी पर ये गीत कितना उचित हैं?

कानूनी तौर पर एक कन्या १८ वर्ष के पश्चात विवाह योग्य होती है और एक लड़का २१ वर्ष के पश्चात विवाह योग्य होता है।[25] भारत में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन, इत्यादि अनेक धर्म के लोग रहते हैं; पर किसी भी धर्म में विवाह के पूर्व शारीरिक संबंधों की मान्यता नहीं है। पर भारतीय सिनेमा सामाजिक और धार्मिक नियमों की धज्जियां उड़ता आया है।

ये फिल्म बंकिम चंद्र चटोपाध्याय के उपन्यास दुर्गेशनंदिनी पर आधारित हैं, जो इतिहास की घटनाओं से प्रेरित एक प्रेमकथा हैं। इस कथा मे कितनी सत्यता होगी ये कहना मुश्किल हैं। कहानी अकबर के जमाने की हैं। उपन्यास मे यह संदेश दिया गया हैं की एक हिन्दू लड़का किसी भी कीमत पर एक मुस्लिम लड़की का प्रेम स्वीकार नहीं कर सकता और न ही उससे विवाह कर सकता हैं।[26] पर वास्तविक जगत मे कई मुस्लिम लड़कियाँ हिन्दू पुरुषों से विवाह कर सुखी हैं।

१३) अंजान

१९५६ की फिल्म 'अंजान' का गीत 'होली की आई बहार' होली पर चित्रित हैं। इस गीत मे गाव के सभी लोग होली आयोजन मे एकत्रित होकर साथ मे बैठे हैं। जाती के नाम पर कोई उच्च नीच इन लोगों के बीच नहीं दिख रही। लड़कियाँ नृत्य कर रही हैं। महिला अपने प्रेमी के साथ की होली का वर्णन अपनी सखियों को सुना रही हैं। गीत की नायिका अपने प्रेमी के समक्ष आकार प्रेम के सामने वो विवश हो गई हैं ऐसा बताती हैं।[27]

१४) एक गाव की कहानी

१९५७ की फिल्म 'एक गाव की कहानी' का गीत 'दिन होली का' होली पर चित्रित हैं। गीत के प्रारंभ मे कृष्णजी को लेकर भक्त पदयात्रा करते हैं। इस गीत का चित्रण

[24] https://www.youtube.com/watch?v=8Tor-bBmWsc

[25] https://www.ezylegal.in/blogs/what-is-the-legal-marriage-age-in-india

[26] https://en.wikipedia.org/wiki/Durgeshnandini

[27] https://www.youtube.com/watch?v=zOleair8sns

बिल्कुल वैसा हैं जैसे पारंपरिक तरीके से भारत के किसी देहात मे होली खेली जाती थी। महिला और पुरुष अपने अपने होली खेल रहे हैं।[28] कही कुछ अभद्रता नहीं हैं। ऐसी सादगी भरी होली अब कही देखने नहीं मिलती।

१५) मदर इंडिया:

१९५७ मे असंख्य पुरस्कार जीती हुई तथा भारत की और से अकैडमी अवॉर्ड के लिए भेजी गई फिल्म 'मदर इंडिया' आई। इस फिल्म मे भी होली पर एक गीत चित्रित हैं जिसके बोल हैं 'होली आई रे कन्हाई'। इस फिल्म मे नायिका (फातिमा रशीद) के बेटे जब जवान हो जाते हैं तब गाव मे सार्वजनिक होली उत्सव के समय इस गीत का चित्रण किया गया हैं। पूरा गीत शंकरजी की मूर्ति सामने फिल्माया गया हैं। कई बार शब्द से ऐसे लगता हैं जैसे यह गीत श्रीकृष्ण को स्मरण करते हुए लिखा और गाया हैं; परंतु ऐसा नहीं हैं। गीत मे अपने आप को कृष्ण समान मानने वाला लड़का (सुनील दत्त) महिलाओं को छेड़ता हैं, उनके साथ हाथापाई करता हैं। इस गीत मे जब रामू सावकार की बेटी के हाथ मे अपनी माँ के कंगन देखता हैं तो वो उसके साथ हाथापाई करने लगता हैं।[29] श्रीकृष्ण की उपमा देता हुए कोई लड़का ऐसी अभद्रता करते हुए बताना नारायण के भक्तों की भावनाओं को आहत करता हैं।

इस फिल्म के निर्देशक महबूब खान थे और सुनील दत्त की बीवी फातिमा रशीद (नरगिस दत्त) नायिका थी। पूरी फिल्म किस तरह बनिए अत्याचारी होते हैं और वासना के अंधे होते हैं ये बताने के लिए ही बनाई गई। इस फिल्म ने बनिया और सावकार के प्रति समाज मे द्वेष फैलाने की पूरी कोशिश की थी। देश के समाज को विकृत बताने वाली यह फिल्म अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की तत्कालीन कॉंग्रेस सरकार ने भेजी थी।[30] और बादमे तिलकधारी, माला पहनने वाले और चोटी रखने वाले खलनायक मानो सिनेमा जगत का ट्रेंड बन गए। ये ट्रेंड आज भी चल ही रहा हैं।

इस फिल्म मे नायिका के दो बेटे हैं जिसमे से एक का नाम बिरजू (सुनील दत्त) हैं। वो गाव की हर लड़की को छेड़ता हैं। बिरजू लालची, व्याभिचारी और लक्ष्मीपूजक सावकर के अत्याचार को खत्म करने के लिए डाकू बन जाता हैं।[31] फिल्म के

---

[28] https://www.youtube.com/watch?v=ed89p_QtnsU

[29] https://www.youtube.com/watch?v=g2RcxYED96g

[30] https://www.imdb.com/title/tt0050188/

[31] https://www.youtube.com/watch?v=Ss7lc5kB0BY

अनुसार, अगर कोई आपके ऊपर अत्याचार कर रहा है तो आप कानून का सहारा मत लो खुद हथियार उठाओ और अत्याचार करने वाले को खत्म कर दो। सामाजिक विद्वेष, लड़कियों के साथ छेड़छाड़, डकैती जैसे अपराधों को ये फिल्म बढ़ावा देती हैं।

१९५० के दशक से कृष्ण को छेड़ने वाला छिछोरे प्रेमी के रूप मे बताया गया है जबकि वास्तविकता यह है की कृष्णा उनकी १६१०८ पत्नियां तथा उनकी सखी द्रोपदी के मानरक्षक है। भारतीय सिनेमा होली के गीतों में कृष्ण का नाम लेकर योगेश्वर श्रीकृष्ण का चरित्र धूमिल करता आया है।
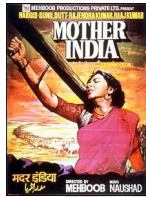
१६) खोटा पैसा:

१९५८ की फिल्म 'खोटा पैसा' का गीत 'होली हैं सखी' इसी श्रेणी मे हैं। इस गाने का आशय यह हैं की एक प्रेमीका के लिए उसका भीगा अंग जब उसका प्रेमी देखता हैं तभी होली हैं अन्यथा होली नीरस हैं।[32] गीत के चित्रण मे लड़का (जॉनी वॉकर) ध्यान लगाने की कोशिश कर रहा हैं और उसे गाव की सारी लड़कियाँ मिल कर छेड़ रही हैं। लड़की उसे उस ध्यान साधन को त्यागने के लिए प्रेरित करती हैं। ध्यान करने की कोशिश करने वाले लड़के के हावभाव या तो चिड़चिड़ाहट के हैं या द्विअर्थी (दोगले) हैं।[33]

ऐसे ही सन्यास लेने की प्रथा को सिनेमा के माध्यमसे कलुषित बताया गया हैं। इस गीत मे लड़कियाँ मिलकर एक लड़के को छेड़ रही हैं, ये थोड़ा नहीं बहुत अजीब हैं। आज एक तरफा कानून का सहारा लेकर बदमाश किस्म की लड़की पहले खुद लड़के के गले पड़ती हैं और फिर बाद मे उस लड़के को झूठे केस मे फसा भी देती हैं।

इस फिल्म की कहानी एक ऐसे लड़के की है जिसे उसका प्रेम नहीं मिलता तो वो सन्यासी बनने निकल पड़ता हैं। उसे रोकने उसकी प्रेमीका आ जाती हैं।[34] इस फिल्म के अनुसार अगर प्रेमीका से विवाह नहीं हो सकता तो सब कुछ छोड़ दो, भले ही

[32] http://hindi.lyricsgram.com/song/holi-hai-holi-hai-sakhi-18270

[33] https://www.youtube.com/watch?v=eO5CAjDXdw0

[34] https://www.imdb.com/title/tt0267639/

बूढ़े माता पीता बेसहारा हो जाए। भारतीय फिल्मों मे प्रेम ही जीवन का लक्ष हैं ऐसा बार बार बताया गया हैं। आज कही न कही प्रेम मे मिली असफलता से आत्महत्याओं की खबरे आती उस नकारात्मकता के बीज सिनेमा ने ही समाज मे बोए हैं।

१७) नवरंग:

१९५९ में फिल्म आई नवरंग। उसमें एक बहुत प्रसिद्ध गाना है 'अरे जा रे हट नटखट'। इसके नृत्य प्रस्तुति के कारण यह गीत अपने आप में सुंदर कलाकृति हैं। गीत मे नटखट लड़के को बालकृष्ण और लड़की को राधा की उपमा दी गई हैं। लड़की गरियाने मे भी सक्षम हैं और उसकी धमकी भी लड़के को देती हैं। लड़का लड़की के गालों पर से होली का रंग उड़ाना चाहता हैं और वो लाज शर्म छोड़ देने के लिए लड़की से कहता हैं। गीत का चित्रण गणेशजी की मूर्ति के सामने किया गया हैं। गणेशजी इस गीत का नृत्य देखकर प्रभावित हो जाते हैं और हाथी के रूप मे अवतरित हो जाते हैं।[35] होली के दिन लाज, शर्म, हया सबकुछ त्याग देना चाहिए ऐसा संदेश इस गीत से दिया गया हैं। पूरे गाने के आशय के अनुसार बालकृष्ण एक छेड़खानी करने वाला लड़का है।

फिल्म की कथा एक हिन्दू राजकवि के जीवन पर आधारित हैं। विवाहित कवि के घर का पारंपरिक वातावरण हैं इसीलिए कवि अपनी पत्नी के साथ समय नहीं बीता पाता हैं ऐसा चित्रण उस हिन्दू परिवार का किया गया हैं। राजकवी की नौकरी जाने के बाद, उसके पत्नी के पिता उसकी पत्नी को अपने घर वापस ले जाते हैं।[36] इससे फिल्म निर्माता ने ये संदेश दिया हैं की बेटी का पती अगर कमाता न हो तो बेटी को उसके संसार से विमुख कर अपने घर लेकर आना चाहिए, भलेही बेटी के ससुराल मे कोई दुखद घटना हो जाए उसे वापस नहीं भेजना चाहिए। बेटी के पिता का यह चरित्र भारतीय कुटुंब व्यवस्था पर आघात करने वाला हैं। पती अगर कमाता नहीं हो या किसी मुश्किल दौर से गुजरता हो तो उसे अकेले तनहा छोड़ देना चाहिए ये मिथ्या नारीवाद इस फिल्म के माध्यम से परोसा गया हैं।

[35] https://www.youtube.com/watch?v=5JbMjD2IAxA

[36] https://en.wikipedia.org/wiki/Navrang
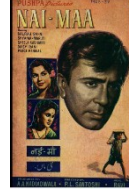
१८) नई माँ:

१९६० मे फिल्म आई 'नई माँ'। होली पर चित्रित इस फिल्म के गीत के बोल हैं 'होली आई होली रंग गुलाल उड़ाती'। गाना शुरू होता हैं तब ऐसे लगता हैं जैसे नखरेवाली कपटी प्रेमीका को प्रेमी मनाने आया हो। फिर छेड़खानी और महिला के अंतर्वस्त्र भिगाने वाली बात कही गई हैं।[37] माना होली मे आप भीगते हैं पर कहा तक भीगते हैं और कहा तक भिगाना हैं ये शब्दों मे कहने की आवश्यकता नहीं।

फिल्म की कहानी एक सौतेली माँ को दुनिया की सबसे बुरी महिला साबित करती हैं।[38] इसका असर यह हुआ हैं की पुनर्विवाह मे जो नए रिश्ते बनते हैं उन रिश्तों मे पहले से ही एक अनदेखा जहर घुल चुका हैं। आज विधवा, विधुर तथा तलकशुदा पुनर्विवाह जैसी मांग हो रही हैं। पर सौतेले रिश्तों को इस तरह निर्दयी बताकर, खासकर बालकों के मन मे जहर घोल दिया जा रहा हैं। यह कुटुंब व्यवस्था के लिए घातक कहानी हैं।

१९) कोहिनूर

१९६० की फिल्म 'कोहिनूर' का गीत 'तन रंग लो जी' होली पर चित्रित हैं।

इस गीत मे महिला को एकदम झीनी सी साड़ी पहनाई गई हैं। पूरे कपड़ों मे भी महिला के वक्षस्थल तथा नितंब (अरेsss हिप) पर फोकस किया गया हैं। लड़का सभी लड़कियों पर पिचकारी से रंग डाल रहा हैं। लड़की आगे कहती हैं की बनवारी राधा संग होली खेल रहे हैं और अनाड़ी ने पिचकारी मार कलाई पकड़ी हैं। कृष्ण को बड़ी चतुराई से यहा अनाड़ी कह दिया गया हैं।[39] इस फिल्म के मुख्य कलाकार मो. यूसुफ़ खान और महजाबिन बानो उर्फ मीना कुमारी[40] हैं।[41]

---

[37] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_aayi_holi.htm

[38] https://www.imdb.com/title/tt0269601/

[39] https://www.hindilyrics4u.com/song/tan_rang_lo_ji.htm

[40] https://en.wikipedia.org/wiki/Meena_Kumari

[41] https://en.wikipedia.org/wiki/Kohinoor_(1960_film)
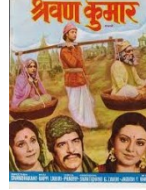
२०) श्रवण कुमार:

१९६० की फिल्म 'श्रवण कुमार' का गीत 'हे रंग रँगीलों' ये होली पर चित्रित गीत हैं। ये रामायण के कालखंड पर आधारित फिल्म हैं। होली के गीत मे ग्वाल और ग्वालनों का उल्लेख हैं। गीत के चित्रण मे लड़का और लड़की अपने मित्रपरिवार के साथ होली मना रहे हैं। लड़का और लड़की एक दूसरे के जबरन रंग लगाते हुए दिखाए गए हैं। हर होली गीत की तरह इस गीत मे भी केवल महिलाओं के कपड़ों का और उनके गीले होने या रंगने का उल्लेख हैं।[42]

२१) कृष्ण भक्त सुदामा:

१९६१ की फिल्म कृष्ण भक्त सुदामा इस फिल्म मे 'होली मे कौन कुवारी' ये होली पर चित्रित गीत हैं। बोल के अनुसार होली के दिन कौन सी लड़की कुवारी हैं और कौनसी महिला सुहागन हैं ये कहना मुश्किल हैं, क्यू की आज सभी लाल हो जाती हैं। यह गीत कृष्णजी अपने स्वप्न मे देख रहे हैं।[43] काम-क्रीडा के बाद चेहरे और शरीर पर आनेवाली लालिमा और होली के रंग की लालिमा मे कोई अंतर नहीं हैं ऐसा इस गीत से प्रतीत होता हैं। समाज के नियमों के अनुसार केवल सुहागन अर्थात विवाहित स्त्री ही केवल अपने पती के साथ काम-क्रीडा कर सकती हैं। 'कृष्ण भक्त सुदामा' इस भक्तिमय फिल्म मे इस अर्थहीन होली गीत का क्या औचित्य हैं?
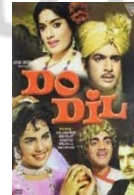
२२) दो दिल:

होली रे होली बम बबम बम यह १९६५ में आई दो दिल फिल्म का कैफ आजमी ने लिखा हुआ गाना है।[44] गीत के बोल बिरज की होली का संदर्भ देते हैं। भांग की

[42] https://www.youtube.com/watch?v=fHf10Na_a64

[43] https://www.youtube.com/watch?v=r07ZHZYB2CU

[44] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_re_holi_bam_babam_bam_lahri.htm

गोली भी मुह मे हैं। फिर लड़का, जीसे गीत मे बनवारी अर्थात कृष्ण कहा गया हैं, ऐलान करता हैं की हर उस लड़की पर रंग पड़ेगा जिसकी चोली को रंग नहीं लगा हैं। लड़की के कपड़ों का वर्णन करते हुए गीत आगे बढ़ता हैं। लड़की की उम्र बाली हैं और वो अपनी नजर से सब पर जुल्म करती हैं। लड़की के साथ छेड़छाड़ होती हैं और उसकी कलाई मरोड़ी जाती हैं।[45]

बम बबम बम यह शिवजी से जुड़ी धुन है। भांग और महिला के गीले वस्त्र इन दो कल्पनाओं को होली और शिवजी के साथ जोड़कर इस गीत में बड़े कुशलता से बताया गया है। राधा कृष्ण की भक्ति में या किसी भी देवता की भक्ति में नशा कहां किया जाता है? ऐसा कोई प्रमाण नहीं हैं की शिवभक्ति या होली मे भांग का सेवन करना चाहिए। होली और शिव जी के साथ भांग का अर्थात नशे का संबंध केवल भारतीय सिनेमा में ही बताया गया है। बनवारी अर्थात कृष्णा यह नाम भी इस गाने में उपयोग में लाया गया है। बनवारी लड़कियों की चोली लहंगा भीगने में खुश हो रहा है ऐसा इस गाने में बताया गया है। केवल हिंदी सिनेमा ही नहीं भारत के अनेक प्रादेशिक भाषाओं के फिल्मों में भी मान मर्यादा रक्षक श्री कृष्ण को मान मर्यादा का भक्षक बताया गया है। श्री कृष्ण से इतनी घृणा क्यों?

इस गीत मे लड़की का वर्णन लड़कों को लुभाने वाली की तरह किया गया हैं। लड़कियों ने अपनी पूरी ऊर्जा बस लड़कों को लुभाने मे ही खर्च करना चाहिए ऐसा संदेश इस गीत के माध्यम से दिया गया हैं।

इस गीत के गायक मो. रफी है और उनके गीतों को हिंदुओं ने ही अपने माथे पर बैठाया है। बड़ी सफाई से हिंदू आस्थाओं का अपमान और हिंदू परंपराओं को विकृत करने वाले कई गायको में से एक मो. रफी रहे हैं।

२३) फूल और पत्थर:

१९६६ की फिल्म 'फूल और पत्थर' का गीत 'लाई हैं हजारों रंग' होली पर चित्रित हैं। शकील बदायूनी के लिखे इस गीत की शुरुआत मे एक छोटा बालक श्रीकृष्ण के रूप मे पेड़ के नीच खड़ा हैं। एक कमरे मे जखमी धर्मेन्द्र विधवा महजबीन बानो उर्फ मीना कुमारी के साथ हैं और दोनों एक दूसरे को देख रहे हैं। आसपास का पूरा मोहल्ला होली मना रहा हैं। लड़कियों नृत्य मे वक्षस्थल तथा कमर को उभारकर दिखाते स्टेप्स हैं। इस गीत क बोल के अनुसार, प्यार तो केवल जोराजोरी अर्थात

[45] https://www.youtube.com/watch?v=7vJQDEnIVrE

बलात स्पर्श एवं आलिंगन करने पर ही प्रदर्शीत होता हैं, और प्यार वाला ऐसा रंग कन्हैया ही बरसाते हैं। इस गीत मे महजबीन बानो के हावभाव शर्म और कामुकता से भरे हैं।[46] छेड़छाड़ और जोर जबरदस्ती को प्रेम बताया गया हैं और इस प्रेम का संबंध कृष्ण से जोड़ दिया गया हैं।

ओ पी रल्हान की इस फिल्म की कहानी एक हिन्दू विधवा (महजाबिन बानो) के जीवन से जुड़ी हैं। इस विधवा को उसके ससुराल वाले मरने के लिए छोड़ कर चले जाते हैं। फिर इस विधवा को एक चोर (धर्मेन्द्र) बचा लेता हैं। फिर दोनों बिना विवाह के एक साथ धर्मेन्द्र के घर रहने चले जाते हैं। इस तरह दोनों का रहना पड़ोसियों को पसंद नहीं आता। और कैसे हिन्दू समाज एक विधवा के जीवन मे दुख घोलता हैं बस यही इस फिल्म मे बताया गया हैं।[47] जिस समय की ये फिल्म हैं उस समय के लोग बिना विवाह के एक पुरुष और महिला का साथ मे रहना स्वीकार नहीं करते थे – इसे आजके समय मे लीव इन कहते हैं।

विवाह समाज की ऐसी प्रथा हैं जो एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व से बांध देती हैं और फिर जो संतान इस विवाह से उत्पन्न होती हैं उसका उत्तरदायित्व भी इस विवाहित जोड़े का होता हैं। लीव इन मे अक्सर जिम्मेदारियाँ छोड़कार भागने वाले ही मिलेंगे - फिर चाहे वो पुरुष हो जो जवानी ढलने के बाद मुह मोड लेता हैं या फिर महिला हो जो पुरुष के पास का पैसा खत्म होने के बाद किसी और के साथ चली जाती हो या फिर दोनों जो ऐसे संबंधों से जन्म लिए बच्चे का प्रेम से पालन नहीं करते, उसे एक बोझ समझने लगते हैं। और ये लोग जिम्मेदारियों से इसके लिए भागने मे सक्षम रहते हैं क्यू की कोई कानून इस तरह के रिश्तों के लिए नहीं बने हैं।

२४) छोटा भाई:

१९६६ की फिल्म 'छोटा भाई' का गीत 'बाजे बाजे मृदंग' होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार आपको ये राधा और कृष्ण की होली का वर्णन करेगा। बोल के अनुसार कृष्ण का नाम बदनाम हैं, लड़कियों ने और महिलाओं ने हमेशा कृष्ण से

---

[46] https://www.youtube.com/watch?v=TMQ2MTt5jgY

[47] https://www.jiocinema.com/movies/phool-aur-patthar/3849284/watch?utm_source =WatchAction&utm_medium=MovieWatchAction&utm_campaign=phool-aur-patthar

बचकर रहना चाहिए।[48] आसानी से कृष्ण को एक बदनाम व्यक्ति बता दिया गया। कृष्ण भक्त वत्सल हैं, पर न जाने क्यू उन्हे ऐसा बताया जाता हैं?

२५) डाकू मंगल सिंह:

१९६६ की मुमताज की फिल्म 'डाकू मंगल सिंह' का गीत 'आया होली का त्योहार' होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार होली के त्योहार पर एक लड़की पनघट पर जा रही थी तब किसी ने उसे रंग दिया, एक लड़का खेत की तरफ जा रहा ठ तब किसी ने उसे रंग दिया। इस घटना के बारे मे किसी भी तरह की चर्चा मे लोग इस बात का अलग ही अर्थ लेंगे और लड़की बदनाम हो जाएगी। फिर लड़का लड़की को अपनी और खिचने के लिए उसकी साड़ी पकड़ लेता हैं। लड़के के रंग लगाने से लड़की मुह छिपकर रोई हैं और ऐसा रंग लगाते समय लड़के ने जुल्म किया हैं। बीच मे बीच मे एक बूढ़ा व्यक्ती जवान लड़की के साथ नृत्य करते हुए भी दिखाया गया हैं।[49] जब किसी महिलाका उत्पीड़न (अरेSSS मोलेस्टैशन) होता हैं तब महिला जरूर कहती हैं की उसके साथ कुछ गलत हुआ हैं और इस गाने के बोल के हिसाब से होली के दिन यही महिला के साथ होता हैं।

२६) आबरू:

१९६८ मे फिल्म आबरू प्रदर्शीत हुई। इस फिल्म मे एक होली पर चित्रित गीत हैं, 'आई आई रे होली'। प्रेमी के हिसाब से प्रेमीका के होंठ गुलाबी हैं और नैन शराबी। होली के दिन प्रेमीका की मस्त जवानी छाई हैं। प्रेमीका आगे प्रेमी से कहती हैं की देखो कोई ऐसा काम न करना जिससे उसकी बदनामी हो जाए। पर प्रेमी अपने मन की इच्छा पूरी कर प्रेमीका से कहता हैं 'घबराओ मत हम प्रेमी हैं तुम राधा और मैं मोहन हूं, इसीलिए प्यार का ये बंधन टूट नहीं सकता'।[50] सिनेमा के ऐसे गीतों ने राधा कृष्ण के पवित्र प्रेम को वासना का रंग दे दिया हैं।

२७) माता महाकाली:

[48] https://www.hindilyrics4u.com/song/baje_mridang_kanha_khele_rang_radha_ke_sang_biraj_me.htm
[49] https://www.youtube.com/watch?v=Iu6O1gGql-k
[50] https://www.hindilyrics4u.com/song/aai_aai_re_holi.htm

१९६८ की फिल्म 'माता महाकाली' इस फिल्म मे 'रंग रँगीलों फागन आयो' ये गीत होली पर चित्रित हैं। होली के गीत मे ग्वाल और ग्वालनों का उल्लेख हैं। हर होली गीत की तरह इस गीत मे भी केवल महिलाओं के कपड़ों का और उनके गीले होने या रंगने का उल्लेख हैं। लड़की का आचल घड़ी घड़ी गिर रहा हैं। लड़की की आखे कजरी हैं, उसकी आखों से वो दिल पर कटारी चलाती हैं और इस बात का उल्लेख रामजी का नाम लेकर किया गया हैं।[51] इस गीत मे लड़के को ग्वाला और छैला कहा गया हैं। रामजी का उल्लेख लेकर किसी महिला का ऐसा वर्णन क्यू किया गया हैं?

२८) मेरा दोस्त:

१९६९ मे आई मुमताज की फिल्म 'मेरा दोस्त' का 'डालेंग रंग डालेंगे' ये गीत होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार बस होली के दिन रंग लगा कर लड़का लड़की को अपना बना लेता हैं। होली के बहाने लड़का लड़कियों को छेड़ता हैं। लड़का हाथ पकड़ता हैं लड़की की कलाई मरोड़ता हैं।[52] भीगी हुई लड़की और उस लड़की की छेड़छाड़ ही फिल्मी होली गीतों मे बार बार बताया गया हैं।

२९) मस्ताना:

१९७० मे आई फिल्म मस्ताना मे एक होली गीत हैं जिसके बोल हैं, 'होय नंदलाला होली खेले बिरज मे धूम मची हैं'। ब्रजबाला यानी कृष्ण भक्त लड़की के भीगे हुए अंग का वर्णन कर इस गीत की शुरुआत होती हैं। नृत्य मे लड़की को छेड़ना, वक्षस्थल तथा कमर पर छूना ही होली हैं ऐसे आशय के गीत के बोल। महिलाओं और लड़कियों को रंग लगाने वाले लड़के को अर्थात नायक को मुरलीवाला, नंदलाला इन नामों से पुकारा गया हैं। ये सारे नाम कृष्ण के हैं।[53] इतना ही नहीं आगे इस गीत मे एक बालक को कृष्ण की वेशभूषा मे लाया जाता हैं जो लड़कियों की मटकी फोड़ेगा और लड़कियों के पीछे भागेगा। वो मटकी भी जमीन पर पटक कर फोड़ देता हैं। फिर गीत मे एक और नायिका को बताया गया हैं जो अपने

[51] https://www.hindilyrics4u.com/song/rang_rangilo_fagun_aayo.htm
[52] https://www.hindilyrics4u.com/song/dalenge_rang_dalenge_apna_tumhe_bana_lenge.htm
[53] https://www.hindilyrics4u.com/song/nandlala_holi_khele_biraj_me_dhum_machi_hai.htm

नायक के साथ दूसरी जगह होली खेल रही हैं। लड़की भीगती हुई बताई गई हैं। साड़ी पहनी इस दूसरी नायिका के वक्षस्थल (अरेsss चेस्ट) पर फोकस किया गया हैं।[54]

इस गानेके माध्यम से ये संदेश दिया गया हैं की श्रीकृष्ण भीगी लड़कियों को ताड़ते हैं, उनके साथ रंग खेलेन के बहाने उनकी चूड़ियाँ तक तोड़ देते हैं। ब्रज की होली का ऐसा वर्णन कही पर भी नहीं लिखा हैं। फिर भी सिनेमा के इस गीत मे यह अश्लील वर्णन क्यू हैं? कृष्ण लीला मे मटकी फोड़ने का संदर्भ हैं पर वो माखन, दूध, दही या छाछ का सेवन करने के लिए हैं। जमीन पर पटक कर अगर कृष्ण मटकी फोड़ते थे तो माखन, दूध, दही या छाछ का सेवन कैसे करते थे? अन्न तथा पंचगव्य को पूजनीय मानने वाले कृष्ण कभी उनका आदर कैसे कर सकते हैं?

मस्ताना फिल्म तेलुगु सिनेमा सत्तेकलापु सत्तेया का पुनर्निर्माण (अरेsss रीमेक) हैं। जी हा हिन्दी फिल्म जगत उस जमाने मे भी दक्षिण की फिल्मों का पुनर्निर्माण करता था। इस फिल्म मे एक छोटी बालिका नयनतारा की एक अंजान, अधेड़ उम्र के आदमी, मस्ताना (मेहमूद) के साथ मित्रता को चित्रित किया गया हैं।[55] ऐसी किसी अंजान व्यक्ती के साथ मित्रता अपहरण, मानव तस्करी, लैंगिक शोषण, तथा हत्या तक अंजाम दे सकती हैं।

३०) सस्ता खून महंगा प्यार:

१९७० मे आई सस्ता खून महंगा प्यार मे 'होली आई रे होली आई' यह होली गीत हैं। इस गीत के बोल मे लड़की भीग जाती हैं और फिर उसके भीगे शरीर का वर्णन हैं। ऐसी लड़की को देखकर लड़के की जवानी बहक गई हैं और ये बात वो रामजी की कसम खाकर बताता हैं। लड़का उसके बाद लड़की को बीच डगरिया छेड़ता हैं।[56] इस गीत का आशय हैं की अगर आपको कोई जवान लड़की दिख रही हैं तो

[54] https://www.youtube.com/watch?v=zcaWbulK2Nw&t=3s

[55] https://www.youtube.com/watch?v=1pM3LeAv7Rs

[56] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_hai_holi_aayi_re_holi_aayi.htm

आप रामजी की कसम खाकर अपने बिगड़े ताल की छिपा सकते हैं। क्यू भाई आपकी गंदी नजर की जिम्मेदारी रामजी क्यू ले?

ये फिल्म एक डाकू के दो बेटों की हैं। दो भाइयों मे से एक डाकू हैं और दूसरा ईमानदार पोलीसवाला।[57] ऐसे रिश्ते केवल सिनेमा मे ही हो सकते हैं। असल मे इसके विपरीत सब होता हैं।

३१) होली आई रे:

१९७० की 'होली आई रे' फिल्म होली के गीत 'अंग अंग मे अगन लगती, मगन जगाती, झूमती गाती होली आई'। ये गीत गाव की सार्वजनिक रंगपञ्चमी उत्सव को दर्शाता हैं जहा गाव के सभी लोग एक होकर होली खेल रहे हैं। गाव के जमीनदार का कामातुर बेटा समर किसी तरह गाव की भोली भाली गरीब लड़की सुहागी को होली के मौके पर अपने जूठे प्रेमजाल मे फास लेता हैं। समर सुहागी को विवाह का वचन देता हैं और उसके साथ अपनी वासना को पूरा करता हैं। इसका नतीजा सुहागी गर्भवती हो जाती हैं। फिल्म के मुख्य कलाकार माला सिन्हा और शत्रुघ्न सिन्हा हैं।[58]

फिल्म की शुरुआत ही होली को वासनपूर्ति का अवसर बताते हुई की गई हैं। फिल्म मे कन्हैयालाल नामक एक अपराधी बताया गया हैं। सिनेमा के खलनायक का नाम हिन्दू देवी-देवताओं से संबंधित रखना एक बुरा चलन हैं जो समाज मे हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति घृणा को बढ़ावा देता आया हैं। विवाह का आश्वासन देकर शारीरिक संबंध बनाना कानूनी अपराध हैं। विवाह पूर्व शारीरिक संबंध बना लेना ये आजकी प्रवृत्ति हो चुकी हैं। लड़कियाँ भी इसके लिए राजी हो जाती हैं। लड़कियाँ आजके मजे के लिए आनेवाले कल मे होनिवाली तकलीफों को देखती नहीं। ऐसी हरकतों की वजह से होने वाला रासायनिक असंतुलन (अरेsss हार्मोनल इम्बैलन्स) काफी पीड़ादायक होता हैं जो लंबे समय तक शरीर को बीमार करता हैं।

[57] https://www.indianfilmhistory.com/movie/sasta-khoon-mehnga-pyar

[58] https://en.wikipedia.org/wiki/Holi_Ayee_Re

३२) पराया धन:

१९७० मे फिल्म आई पराया धन, उसका गीत 'होली रे होली रंगों की होली' अपने जमाने का प्रसिद्ध गीत था। इस गीत मे भी लड़का और लड़की को कृष्ण और राधा की उपमा दी गई हैं। लड़का लड़की को भिगाता हैं, भीगी हुई लड़की की कलाई मरोड़ता हैं। होली मे सब खुशियां मना रहे हैं तभी जेल से भागा एक अपराधी उस गाव मे घुस जाता हैं।[59] फिल्म के खलनायक का प्रवेश होली के अवसर पर बता कर होली को फिर से मनहूस बताने का प्रयत्न यहा किया गया हैं। होली के अवसर पर लड़कियों से छेड़छाड़ को इस तरह बढ़ावा दिया गया हैं।

इस फिल्म की कहानी एक बेटी और उसके पिता के रिश्ते पर चित्रित हैं। और इस चित्रण मे बेटी को एक अपराधी ये बताता हैं की उसके पिता कितने बुरे मनुष्य हैं और बेटी उस अंजान अपराधी पर भरोसा भी रखती हैं।[60] 'माता पिता को कोई पराया आदमी बुरा साबित करने की कोशिश करें तो उसपर भरोसा कर लो पर उन माता पिता पर भरोसा मत करो जिन्होंने तुम्हें पाला हैं' ऐसा संदेश यह फिल्म देती हैं। सिनेमा ने हमेशा ये संस्कार दिया हैं की अगर दुनिया मे सबसे बड़ा कोई दुश्मन हैं तो वो तुम्हारे अपने माँ पिता हैं। इसका असर कुटुंब व्यवस्था पर हो रहा हैं। इस फिल्म के मुख्य कलाकार राकेश रोशन तथा हेमामालिनी हैं।

३३) कटी पतंग:

१९७१ की फिल्म 'कटी पतंग' का गीत 'ओय बबुआ होली हैं' होली पर चित्रित हैं। राजेश खन्ना के इस गीत की शुरुआत भांग रगड़ने से होती हैं। लड़की ने लो वेस्ट घुटने के नीचे तक का घागरा पहना हैं। लड़कियों को जमीन पर लेता कर रंग लगाया जा रहा हैं। लड़की के कपड़े भीगाने की बात हैं। फिर एक विधवा (आशा पारेख) अपना दुखड़ा गाकर सुनाती हैं।[61] ये राजेश खन्ना के हर होली गीत मे भांग और नशा क्यू बताया गया हैं? और होली के समय पर ही एक विधवा का दुख सिनेमा मे क्यू बताया जाता हैं? पती को खोने का दुख हर महिला को होता हैं पर उसका इस तरह दिखावा कोई नहीं करती। ऐसे गीतों ने यही संदेश दिया हैं की एक विधवा का तो कोई जीवन ही नहीं होता। पर वास्तविकता यह हैं की विधवा पर अगर किसी बालक या परिवार के किसी अन्य सदस्य की जिम्मेदारी हैं तो वो अपने

[59] https://www.youtube.com/watch?v=YdHIMSiwsEo

[60] https://www.imdb.com/title/tt0067553/

[61] https://www.youtube.com/watch?v=VGQRMUqya3s

सारे दुखों को बाजू कर उन जिम्मेदारियों को बड़ी कुशलता से निभाने मे लग जाती हैं।

३४) हरी दर्शन:

१९७२ की फिल्म 'हरी दर्शन' का गीत 'हो खुल खुल खुल' यह होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार होली के अवसर पर लड़के चाहते हैं की लड़कियाँ उन्हे लुभाए। लड़कियों ने गाल के साथ साथ चुनरी और चोली पर भी लड़कों से रंग लगवाना लेना चाहिए। फिर राजा आकार इस होली उत्सव को रोक देता हैं।[62] उस जमाने मे फिल्मों मे ही कोई राजा होली उत्सव रोकता था लेकिन अब कुछ जगहों पर ऐसे फरमान निकाले जाते हैं वो भी उस देश मे जहा ज्यादातर लोग होली पर्व मनाते हैं। हरी दर्शन जैसी धार्मिक फिल्म मे भी चोली का संदर्भ देनेवाला गीत क्यू हैं?

३५) ग्रहण:

१९७२ की नूतन अभिनीत फिल्म 'ग्रहण' मे 'आज बिरज मे' होली के अवसर पर चित्रित गीत हैं। इस गीत मे महिलाये नही नाच रही। सभी पुरुष एकसाथ बैठकर शराब पी रहे हैं।[63] होली पर शराब पीकर ही तो अपराध या अपघात होते हैं।

३६) फागुन:

१९७३ की फिल्म 'फागुन' का 'पिया संग खेलों फागुन आयो रे' ये गीत होली पर चित्रित हैं। मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखे इस गीत के बोल के अनुसार गली गली मे होली मे गुलाल उड़ाया जा रहा हैं। फागुन आया है इसीलिए गली गली मे पुरुष महिलाओं के साथ जोरा-जोरी (छेड़छाड़) कर रहे हैं। गीत के शुरुआत मे ही कुछ महिलाये भांग रगड़ते हुए बताई गई हैं। पूरा गीत एक पारिवारिक माहौल मे चित्रित किया गया हैं जहा परिवार के बुजुर्ग भी बैठे हैं। नायिका अपने पती की राह देख रही है तथा उसके न आने की व्याकुलता वो खुलकर सबके सामने प्रकट करती

[62] https://www.youtube.com/watch?v=pOEZpM4AVoA

[63] https://www.youtube.com/watch?v=oIMa6kIfkiY

हैं। फिर उसका पती सबके सामने आता हैं और खुलकर दोनों जोर जबरदस्ती स्पर्श वाली होली खेलते हैं। ये सब घर के सभी सदस्यों के सामने चल रहा हैं।[64]

भांग और होली का क्या संबंध हैं? किस पुराण कथा मे ये कहा गया हैं की कृष्ण की भक्ति की जगह भांग पीकर होली के दिन ही अपनी कामुकता का प्रदर्शन करना चाहिए? पती और पत्नी के रिश्ते मे प्यार और सहवास अत्यंत आवश्यक हैं इसीलिए उसे पूरे साल करिए। केवल होली का ही दिन क्यू मिला हैं प्रेम के पाठ पढ़ाने के लिए? जिस काल मे ये गीत प्रदर्शित हुआ था तब हिन्दू समाज मे महिलाये और पुरुष अलग अलग होली खेलते थे और आज भी कई जगहों ऐसी ही होली होती हैं। आधुनिकता बताने के लिए लाज शर्म को त्याग कर पती-पत्नी ने सबके सामने प्रेम करना चाहिए ऐसा सिनेमा मे ही दिखाया गया हैं। इसका असर ये हो रहा हैं की नए विवाहित जोड़े प्रेम भी सबके सामने कर रहे हैं और जब झगड़े होते तब भी सबके सामने तू तू मैं मैं करने लगते हैं – विवाह इनके लिए एक मजाक और तमाशा बन गया हैं।
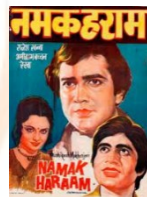
३७) नमक हराम:

१९७३ की अमिताभ बच्चन की फिल्म 'नमक हराम' का गीत 'होय सा रा रा' होली पर चित्रित हैं। ये गीत बहुत छोटा हैं पर अपना असर रखता हैं। गीत मे दो लड़के जबरदस्ती लड़की को पकड़कर घसीटते हुए ले जाते हैं और रंग लगाते हैं। और उस गीत के बोल के अनुसार नंदलाल ब्रज मे होली खेल रहे हैं।[65] कृष्ण का नाम लेकर ऐसा गीत चित्रित कर फिल्म के निर्देशक को क्या कहना हैं?

३८) आपकी कसम:

१९७४ की सुपरहिट फिल्म 'आप की कसम' का गीत 'जय जय शिव शंकर' आज भी इसे सुनकर लोगों के पैर थिरकते हैं। इसमे शिव का नाम लिया हैं तो इसे भजन मत

[64] https://www.youtube.com/watch?v=TzFIbPkoBKo
[65] https://www.youtube.com/watch?v=QJbbtssNyzw

समझ लेना। गीत के बोल के अनुसार लड़का (राजेश खन्ना), लड़की (मुमताज) और बाकी अन्य लोग भांग के प्याले पिए जा रहे हैं। भांग इतनी पी ली हैं की वो अपने आप को संभाल नहीं पा रहे। नशे के कारण एक ही चीज चार दिख रही हैं। भांग का नशा इतना चढ़ गया हैं की लड़का और लड़की अपने घर नहीं जा सकते।[66]

इस गीत का चित्रण यहा तक की फिल्म के कई सीन्स का चित्रण कश्मीर घाटी मे हुआ था। इस गीत का शूटिंग श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर और गुलमार्ग के रानी मंदिर के परिसर मे हुआ था।[67] वैसे ये गीत महाशिवरात्री पर्व पर आधारित हैं पर होली मे भी सुना जाता हैं। मंदिर के परिसर मे नशे की हालत मे, ये प्रेमगीत चित्रित कर क्या संदेश इस गीत के निर्माता देना चाहते थे? आज भी ये दोनों मंदिर कश्मीर घाटी मे स्थित हैं, पर कश्मीर टूर का पैकेज बेचने वाले आपको इनका कोई जिक्र भी नहीं करेंगे और आपको पता नहीं रहा तो आप जाएंगे कैसे? अगर आप इस पुस्तिका को पढ़ने के बाद कभी जीवन मे कश्मीर घाटी अपनी छुट्टियाँ मनाने गए तो इन दोनों स्थलों पर दर्शन अवश्य करें।

'आप की कसम' इस फिल्म के लेखक रमेश पंत हैं। फिल्म की कहानी के अनुसार लड़का लड़की पहले प्रेमविवाह करते हैं। फिर दोनों के बीच कही से संदेह निर्माण हो जाता हैं और विवाद उत्पन्न हो जाता हैं। ये विवाद खत्म होने का नाम नहीं लेता तो दोनों अलग होने के बारे मे सोचते हैं। पती पत्नी के बीच झगड़े होते रहते हैं। एक दूसरे पर कभी कभी संदेह भी होता हैं। पर ये गृहकलेश आपसी चर्चा से भी सुलझाए जा सकते हैं। परिवार के अन्य सदस्य ऐसे झगड़ों का निवारण करने मे सहायता कर सकते हैं। शक के आधार पर झगड़े कर लो और फिर अलग हो जाओ ये अब सामाजिक चिंता का विषय हो चुका हैं।
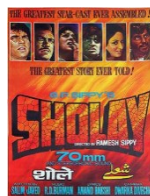
३९) शोले:

[66] https://www.hindilyrics4u.com/song/hey_jai_jai_shiv_shankar_kaanta_lage.htm

[67] https://www.youtube.com/watch?v=5zXS9OwlSjA

१९७५ की लोकप्रिय फिल्म 'शोले' का गीत 'होली के दिन' हैं। इस गीत के बाद गाव मे डाकुओं का हमला होता हैं और मातम छा जाता हैं। गीत के पहले का अमजद खान का संवाद 'होली कब हैं होली..' और फिर पूरा सीन होली को मनहूस बताने के लिए काफी हैं।[68] शराब पीकर फिल्म का हीरो वीरू (धर्मेन्द्र) होली खेलने के लिए आता हैं। वो फिल्म की हेरोइन बसंती (हेमामालिनी) को छेड़ता हैं। पूरा गाव होली मनाने एकत्रित होता हैं। हीरो और हेरोइन के नृत्य के स्टेप्स छेड़छाड़ से भरे हैं तथा अश्लील हावभाव हैं।[69] यही नशे से जुड़ा हुआ गीत होली मनाने वाले जोर शोर से बजाते हैं। इसपर वैसे ही अश्लील नृत्य को भी किया जाता हैं। होली के साथ नशा जोड़ा गाया हैं।

इस गीत के बोल के अनुसार होली के दिन दुश्मन भी गले मिलते हैं अर्थात होली बंधुभाव बढ़ाने वाला पर्व हैं। फिल्म के अनुसार उस गाव मे रहीम चाचा रहते हैं, पर इस गीत मे वो अथवा उनके परिवार का कोई भी किसी को गले लगते नहीं दिखाया गया। अगर पूरे गीत मे कोई एक दूसरे के गले लग रहा हैं तो वो फिल्म का नायक वीरू फिल्म की नायिका। फिल्म का खलनायक गब्बर (अमजद खान) इसी गीत के बाद गाववालों से अपनी दुश्मनी निभाने आता हैं। होली के लिए शब्दों मे सकरात्मकता और पूरे दृश्य मे नकारात्मकता इस फिल्म मे दिखाई गई हैं। होली को मनहूस तथा मार्तम वाली बताने मे इस फिल्म ने कोई कसर नहीं छोड़ी हैं। और फिर से याद दिला दु की इस कहानी और फिल्म के सवादों को हमने ही प्रसिद्ध किया हैं।

४०) जखमी:

१९७५ की फिल्म 'जखमी' मे होली पर चित्रित गीत के बोल 'दिल मे होली जल रही' हैं। इस गीत के अनुसार, होली का मतलब जखमी दिल के जख्म भरनेवाला बदला लेने का अवसर हैं।[70] फिल्म का नृत्य महिला के शरीर के कुछ अंगों को प्रदर्शीत करता हैं। पूरा सीन रास्ते पर लोग एकठ्ठा होकर नाचते गाते होली खेल रहे हैं ऐसा बताया गया हैं।[71] यह गीत बदले की भावना को बढ़ावा देता हैं।

68 https://www.youtube.com/watch?v=_mMgACjwbOU
69 https://www.youtube.com/watch?v=ohL3YK_5dec
70 https://www.hindilyrics4u.com/song/zakhmee_dilo_ka_badla_chukane.htm
71 https://www.youtube.com/watch?v=JpJAtSyooiQ

फिल्म की कहानी के अनुसार नायक आनंद (सुनील दत्त) को हत्या की सजा सुनाई जाती हैं। न्यायाधीश अपना यह फैसला बदले इसके लिए नायक के भाई न्यायाधीश की बेटी को अगवा कर लेते हैं। इस काम को अंजाम देने के लिए वो होली का दिन चुनते हैं। यह फिल्म हुमयू मिर्झा ने लिखी हैं और इसके निर्माता ताहिर हुसेन हैं।[72]

किसी का अपहरण करना कानूनी अपराध हैं। एक न्यायाधीश को मजबूर कर उनसे अपने हिसाब का निर्णय लिखवाना भी कानूनी अपराध हैं। पर सिनेमा सुपरहिट हो, इसके लिए अपराध को बढ़ावा देनेवाली कहानियाँ बताई जाती हैं। अगर न्यायप्रणाली का कोई फैसला आपको पसंद न आए तो आपने अपराध का मार्ग अपनाना चाहिए ऐसा संदेश इस फिल्म मे दिया गया हैं।

४१) अंधेरा:

१९७५ की भूतिया फिल्म 'अंधेरा' मे दो होली गीत हैं 'होली हैं रे'। गीत के नृत्य मे महिला के नितंब, कमर और वक्षस्थल पर फोकस किया गया हैं। गीत के बोल के अनुसार भोली लड़की भीगी हैं। चोली भी भीगी हैं। फिर एक लूँगी पहने आदमी की सबके सामने लूँगी उतार दी जाती हैं। लड़का और लड़की को कृष्ण और गोपी की उपमा दी गई हैं और अश्लील नृत्य करते करते ये गीत हैं।[73]

४२) जिद:

१९७६ की फिल्म 'जिद' का गीत 'होली हैं भाई होली हैं' होली पर आधारित हैं। बोल के अनुसार जीजा अर्थात बहन का पती अपनी जवान साली को उसकी जवानी कैसे बर्बाद हो रही हैं ये बता रहा हैं। होली के मौके पर जवान साली ने लाज शर्म को त्याग देना चाहिए और अपने सच्चे प्रेमी के साथ चोली गीले होने तक होली खेलनी चाहिए। जो दीवाना आज होली खेलने आया हैं वही सच्चा प्रेमी हो सकता हैं।[74]

[72] https://en.wikipedia.org/wiki/Zakhmee
[73] https://www.youtube.com/watch?v=1vgXc-D1Edc
[74] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_hai_ho_ho_la_la_la.htm

हिन्दू रीतियों के अनुसार बड़ी बहन का पती आदरणीय होता हैं। परंतु भारतीय सिनेमा के हिसाब से जीजा और साली ने लाज शर्म छोड़कर आपस मे अश्लीलता भरी बातें करनी चाहिए भलेही इसमे बड़ी बहन का घर क्यू न टूट जाए!

४३) जमाने से पूछो

१९७६ की फिल्म 'जमाने से पूछो' मे होली पर चित्रित किशोर कुमार के गीत के बोल 'अजी एक संग' हैं। गीत के बोल के अनुसार होली आई हैं तो अंग मिला लो। लड़के को पवन झकोला कहा गया हैं जो कलियों को (लड़कियों) को चूमता हैं। लड़की की मस्त जवानी छाई हैं। चोली भीग गई हैं। फिर भी लड़की पर पिचकारी मारी जा रही हैं। लड़के गोकुल के छोरे हैं जो राधा को रंग लगाकर ही मानेंगे।[75] ये गीत मो. रफी, मो. शारदा और किशोर कुमार ने गाया हैं और सिनेमा के एवरग्रीन गीतों मे से एक हैं। इस फिल्म का निर्देशन अबरार अली ने किया हैं। कादर खान तथा मुराद प्रमुख भूमिका मे हैं।[76]

होली मे राधा, गोकुल और भीगी चोली को फिर से जोड़ा गया हैं। फिर ऐसे गीत सुनकर अगर चौराहे पर बैठे बेरोजगार, दबंग, बदमाश लफड़े किस लड़की को जबरन होली के दिन रंगते हैं तो इसमे जितनी गलती उन लड़कों की हैं उतनी ही इन गानों की हैं। फिल्मों मे देवी राधा को केवल वस्तुनिष्ट (अरेऽऽऽ आब्जेक्टिफाइ) बनाया गया हैं। इसीलिए आज सामाजिक संचार माध्यमों पर खुले आम हिन्दू देवियों का चारित्रहनन किया जाता हैं। देवी-देवताओं का चरित्रहनन करना कानूनी अपराध हैं। अगर लड़के सालभर भी आती-जाती हर लड़की को छेड़ते हैं तो इसमे भी बराबर की गलती ऐसे गीतों की हैं।

४४) आप बीती:

१९७६ की हेमामालिनी की फिल्म 'आप बीती' का गीत 'नीला पीला हरा' होली पर चित्रित हैं। गीत मे लड़की अपने घर के बूढे ईमानदार पहरेदार के साथ नृत्य कर रही हैं। लड़की की कलाई उसी बूढ़े पहरेदार (प्रेमनाथ) ने पकड़ रखी हैं। कुछ लोग

[75] https://www.youtube.com/watch?v=U0j1fgt0oDM
[76] https://en.wikipedia.org/wiki/Zamane_Se_Poocho

भांग रगड़ते हुए दिखाए हैं। खलनायक की सिगरेट पीते हुए एंट्री हैं जो लड़की का अपहरण करने हेतु आए हैं। दो खलनायिकाये रूह अफजा जैसे शर्बत मे नशे की दवा मिलाती हैं। और फिर चारों खलनायक मिलकर लड़की का अपहरण कर लेते हैं।[77] होली के अवसर पर अपराध को बढ़ावा इस गीत मे दिया गया हैं।

४५) बालिका बधू:

१९७६ की फिल्म 'बालिका बधू' का गीत 'आओ रे आओ' होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के हिसाब ये ब्रिज की होली का वर्णन हैं और राम को याद कर कृष्ण की होली की शुभकामनाए सबको दी जा रही हैं। शिवजी के मंदिर के सामने लड़की की चोली गीली की गई हैं। एक तरफ छत पर से फिल्म का नायक (सचिन पिलगावकर) दुखी मन से होली देख रहा हैं। वो दुखी होकर जब छत पर बैठता हैं तब उसके घर से ही कोई जोड़ा छत पर आता हैं जो आपस मे जोराजोरी कर एक दूसरे को रंग लगाते हैं और उस समय राम और कृष्ण के नाम का उद्घोष कर गीत का आखिरी अंतरा गाया जाता हैं।[78] यह फिल्म तरुण मजूमदार ने निर्देशित की हैं।[79] महादेव के सामने लड़की के विशेष वस्त्र गिल होना या पती-पत्नी जब आपस मी अकेले मे प्रणय की भावना से एकदूसरे के समीप आ रहे हैं तब राम और कृष्ण का नाम लेना, अपने आप मे बड़ा विचित्र हैं।

४६) भूख:

१९७८ की शत्रुघ्न सिन्हा की फिल्म 'भूख' का 'बलमा अनाड़ी' होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के शुरुआत मे ही लड़की की चोली का बुरा हाल रंग बरसाकर लड़कों ने कर दिया हैं। नृत्य के कुछ स्टेप्स कामुक रूप से बहकाने वाली (अरेsss सेक्सुअली सिडक्टिव) हैं। होली के मौके पर खलनायक ठाकुर के आदमी कुछ बुरे इरादे से गाव के लोगों के बीच घुस जाते हैं।[80] इस फिल्म की कहानी के अनुसार सवर्ण जमीनदार सूखाग्रस्त गाव के पीड़ितों को अन्याय पूर्वक अपना बंधुआ मजदूर बनाता हैं और

[77] https://www.youtube.com/watch?v=PReNRpLUTJw
[78] https://www.youtube.com/watch?v=usL8Cv5qIyQ
[79] https://en.wikipedia.org/wiki/Balika_Badhu_(1976_film)
[80] https://www.youtube.com/watch?v=bq8gZF2kGqQ

उनपर अत्याचार करता हैं। अगर गाव के लोग बंदुआ मजदूर हो गए थे तो उन मे से ही किसी एक का बेटा गाव के बाहर जाकर डॉक्टर कैसे बन गया? बंदुआ मजदूर को कोई मेहनताना नहीं दिया जाता था।

कामुकता और अपराध दोनों को बढ़ावा देने वाला ये एक और गीत केवल हिन्दू पर्व होली पर ही चित्रित हैं। होली के अवसर पर ही ऐसे अश्लील बोल वाले गीत सिनेमा मे बताए जाते हैं। महिला के कपड़ों को भी छूना कानूनी अपराध की श्रेणी मे आता हैं और यहा खुले आम महिला के कपड़ों का बुरा हाल करने की बात की जा रही हैं। ऐसे गीत ही महिला उत्पीड़न का कारण बनते हैं।
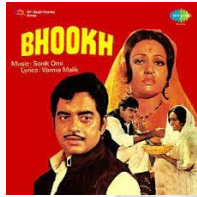
४७) डाकू और जवान:

१९७८ की फिल्म 'डाकू और जवान' का गीत 'मेरे देश के रंग प्यारे प्यारे' ये होली पर चित्रित गीत हैं। आनंद बक्शी के इस गीत के बोल मे राष्ट्रभक्ती और होली दोनों के महिला को वस्तुनिष्ट बनाना भी शामिल हैं। भारत के तिरंगे को मान देते हुए गीत की शुरुआत होती हैं और फिर स्त्री के चेहरे, शरीर और कपड़ों का वर्णन हैं। देशभक्ती के गीत मे महिला का वस्तुनिष्ट वर्णन क्यू हैं? इस गीत के शुरुआत मे सभी कलाकार भारत का नक्शा बनाकर खड़े हैं। तीन रंग की डफलिया लिए कुछ लोग तिरंगे के रूप मे लहरा रहे हैं। फिर लड़का लड़की साथ मे नृत्य करते हैं और उसमे भी लड़की के भाव लज्जा और कामुकता का मिश्रण हैं। देशभक्ति के गीत मे ऐसे भाव क्यू दिए गए हैं? आगे जमीन पर जय किसान के नारे के साथ कम्युनिस्ट चिन्ह की खुरपी भी हैं। फिर फिल्म के खलनायक के प्रवेश के साथ यह गीत खत्म हो जाता हैं।[81]

४८) गोपाल कृष्ण:

१९७९ मे आई फिल्म 'गोपाल कृष्ण' मे 'आयो फागुन हठीलों' ये गीत होली पर आधारित हैं। फिल्म कृष्ण के चरित्र पर आधारित हैं तो यह गीत भी कृष्ण और

[81] https://www.facebook.com/Only-MohdRafi-Sahab-115286346550730/videos/song-578mere-desh-ke-rang-pyare-pyare-neyare-neyaremovie-daku-aur-jawaan-1978/2656721374425012/

राधा की होली का चित्रण हैं। गीत की शुरुआत मे ही लड़का (सचिन पिलगावकर) और लड़की (ज़रीना वाहब), जो कृष्ण और राधा के किरदार मे हैं, नृत्य कर रहे हैं और लड़का कहता हैं 'गोरी चोली पर पीलों रंग डारन दे'। फिर डांस करते हुए लड़का लड़की की पीठ सहलाता हैं।[82]

इस बात का कोई प्रमाण नहीं हैं की कृष्ण खुले आम राधा को अथवा महिलाओं को छेड़ते थे। पर सिनेमा मे कृष्ण को ऐसा ही बताया गया हैं। कृष्ण की वेशभूषा से कोई कृष्ण नहीं हो जाता। जो मानरक्षक हैं उसे इस फिल्म मे चोली भिगोने वाला बता दिया। इसके कारण ही सामाजिक संचार माध्यम पर कृष्ण के चरित्र हनन की कई पोस्टस हमे देखने मिलती हैं।

४९) देशद्रोही:

१९८० की फिल्म 'देशद्रोही' मे भी एक होली गीत हैं जिसके बोल 'होली खेलत नंदलाल, होली हैं होली हैं होली हैं' हैं। गीत की शुरुआत मे नायिका (सायरा बानो) कुछ पुरुषों के उछल उछल कर नृत्य करती हैं। फिर एक आदमी की तरफ इशारा कर कहा जाता हैं की होली हैं इसीलिए वो शराब और भांग पी कर नशे मे धुत हैं। पर असल मे वो एक मृतदेह होता हैं। होली का सहारा लेकर सायरा बानो अपने अन्य साथियों के साथ इस लाश को अश्लील नृत्य करते हुए ठिकाने लगाने के लिए ले जाती हैं। रास्ते मे तंग और भीगी चोली वाली लड़की और उसके साथी एक ऑन ड्यूटी कोतवाल के साथ भी बत्तमीजी करते हैं। और फिर ये सब लोग उस लाश को हातगाड़ी पर लादकर सागर मे डुबो देते हैं। इस गीत ने बाकी गीतों से भी भयंकर तरीके से होली इस पर्व का अपमान किया हैं। खून करना, लाश छिपाना, पोलीसवाले के साथ ड्यूटी के समय किसी भी तरह का बुरा बर्ताव करना ये सब कानून की दृष्टि मे अपराध हैं और ये सब इस गीत मे होली के अवसर पर चित्रित किया गया हैं।[83]

५०) खून खराबा:

---

[82] https://www.youtube.com/watch?v=g9IPqvVxXMQ

[83] https://www.youtube.com/watch?v=ZAwIc0U6WA0

१९८० की फिल्म 'खून खराबा' का गीत 'भांग को ऐसे छान' होली पर चित्रित हैं। सभी पुरुष घोंट घोंट कर भांग पीते हुए नाचते हैं। इतनी भांग पीकर लड़का नशे मे गिर पड़ा हैं। फिर लड़की अपने प्रेमी को मनाने वहा आती हैं।[84] प्रेमियों मे रूठना मनाना चालू रहता हैं पर उसे इस तरह सबके सामने करने की क्या जरूरत हैं? दिखावे के प्यार ने विवाह व्यवस्था मे जहर घोलने का ही काम किया हैं।
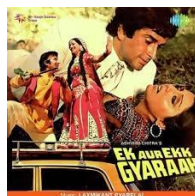
५१) एक और एक ग्यारह:

१९८१ की फिल्म 'एक और एक ग्यारह' मे 'गरीबों की होली तरंग वाली' यह होली गीत हैं। गीत की शुरुआत शिव जी पूजा से होती हैं। मिठाई मे भांग मिलाकर खिलाई जाती हैं। लड़की के भीगे शरीर और कपड़ों का जिक्र भी आगे हैं।[85]

५२) सिलसिला:

१९८१ मे अमिताभ बच्चन की फिल्म 'सिलसिला' आई थी। इस फिल्म का मशहूर गीत 'रंग बरसे' आज भी हर होली मिलन के आयोजन मे बजाया जाता हैं। गीत के बोल के अनुसार रंग बरस रहा हैं। लड़की की चुनरी भीग गई हैं। लड़की का यार थाली मे परोसा हुआ जोना खा रहा हैं, लड़की का यार पान का बिड़ा भी खा रहा हैं, बेला चमेली की सेज पर लड़की का यार सो रहा हैं और ये सब देख कर बलम तरस रहा हैं। इस गीत मे लड़की का यार अलग हैं और बलम अलग हैं।[86]

गीत का नृत्य और कलाकारों के हावभाव अश्लील हैं तथा लड़की के भीगे अंगों को प्रदर्शित करते हैं। गीत मे एक विवाहित पुरुष अन्य किसी महिला के साथ होली मना रहा हैं और वही उसकी पत्नी ये सब देख रही हैं और उस अन्य महिला का पती भी ये सब देख रहा हैं। गीत का नायक (अमिताभ बच्चन) पराई स्त्री (रेखा) की चुनरी खिचता हैं। वो उसी के साथ नृत्य करता हैं। उसकी पत्नी (जया बच्चन) को वो पूरे गीत मे देखता भी नहीं। ये बात उसकी पत्नी को विचलित करने लगती हैं। लड़का फिर भांग पीकर बीड़ा खाता हैं और अपनी प्रेमीका के पती (संजीव कुमार)

[84] https://www.youtube.com/watch?v=3P6J9ujKsAU

[85] https://www.youtube.com/watch?v=jffsUraO8ql

[86] https://www.hindilyrics4u.com/song/rang_barse_bhige_chunar_wali.htm

को चिढ़ाते हुए उसके साथ फिर से नृत्य करने लगता हैं। पूरे गीत मे नायक की पत्नी और नायिका का पति यह सब देखकर दुखी होते हैं।[87] खुले आम विवाहेतर प्रेम को इस गीत के माध्यम से बताया गया हैं।

यह फिल्म विवाहबाह्य प्रेम संबद्धों पर आधारित है। आजकी तारीख मे ये मुद्दा समाज के लिए सबसे बड़ी समस्या बन चुका हैं। आज सगाई टूटने या रिश्ता न होने के कारणों मे से एक बॉडी काउन्ट भी हैं। ये क्या होता हैं? इसका उत्तर नई पीढ़ी अपने अभिभावकों को समझा नहीं सकते। गूगल के अनुसार 'बॉडी काउन्ट' का अर्थ एक व्यक्ती के कितने अन्य व्यक्तियों के साथ शारीरिक संबंध है इसकी संख्या। नई पीढ़ी मे यह चलन बढ़ते जा रहा हैं। उसके लिए कही न कही सिनेमा उत्तरदायी हैं।
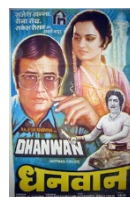
५३) धनवान:

राजेश खन्ना की १९८१ की फिल्म 'धनवान' का गीत 'बरस बरस' होली पर चित्रित हैं। इस गीत का आशय हैं की होली मन के मैल धोने का अवसर हैं। जिससे शिकायत हैं उसे माफ करने का मौका हैं।[88] गीत के बोल मे कही भी अभद्रता नहीं हैं एवं सकरात्मकता हैं।

५४) प्यार के राही:

१९८२ की फिल्म 'प्यार के राही' का 'दैया रे दैया मैं तो भई दंग' ये गीत होली पर चित्रित हैं। ये गीत अज़ीज़ नजान का हैं। गीत के बोल के अनुसार लड़की की होली मे चोली भीग गई हैं। लड़की लाज शर्म भूल चुकी हैं और उसके कदम बहक गए हैं। होली मे भांग का नशा लड़की ने किया हैं।[89] वासना और नशा दोनों को इस गीत मे बढ़ावा दिया गया हैं।

[87] https://youtube.com/watch?v=Jf92MOkrbEw

[88] https://www.hindilyrics4u.com/song/maaro_bhar_bhar_kar_pichkari_i.htm

[89] https://www.jiosaavn.com/lyrics/dayya-re-dayya-mein-to-bhai-dang-holi-mein-pyar-ke-rahi-soundtrack-version-lyrics/PREycgB9TQQ
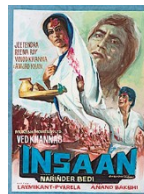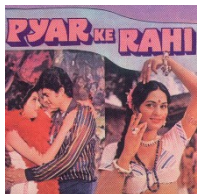
५५) इंसान:

१९८२ की फिल्म 'इंसान' का गीत 'होली मे दिल डोले होले होले' होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार लड़का लड़की को भिगोता हैं। शर्म छोड़कर अपने अरमान पूरे करना चाहता हैं। फिर गीत के दृश्य मे एक तरफ एक विधवा मंदिर से पूजा करके निकलती हैं और देखती हैं की सब लोग होली खेल रहे हैं। फ़ीर उसे अपने पती के साथ की होली याद आती हैं। और फिर गीत का नायक (जितेंद्र) उस विधवा पर रंग डाल देता हैं जीससे थोड़ा तनाव निर्माण होता हैं और गीत खत्म हो जाता हैं। इस गीत को मो. रफी ने गाया हैं और आनंद बक्शी ने लिखा हैं।[90]

होली के मौके पर शर्म छोड़कर क्या करना चाहिए? इसका जो उत्तर सिनेमा गीतों मे दिया गया हैं वो आज महिला उत्पीड़न के मामलों को बढ़ावा दे रहा हैं। जिस जमाने मे ये गीत फिल्माया गया था उस समय विधवा पुनर्विवाह होते थे और होने भी चाहिए। पर जिस तरह से इस मुद्दे को केवल हिन्दू धर्म से जोड़कर सिनेमा मे बताया गया हैं वो केवल हिन्दू समाज को कुरीतियों से भरा हुआ दिखाने के लिए हैं।

५६) सौतन:

१९८३ मे आई फिल्म 'सौतन' इस फिल्म मे 'मेरी पहले से तंग थी चोली' ये होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के बोल के अनुसार लड़की की चोली तंग हो रही हैं। लड़की अब सोलह साल की हैं। लड़की को उसकी चोली लड़का ही लाकर देगा। लड़का और लड़की के प्यार के चर्चे गली गली हो रहे हैं। गीत के चित्रण मे लड़की (पद्मिनी कोल्हापुरे किरदार का नाम 'राधा') अपने विवाहित दोस्त शाम (राजेश खन्ना) के साथ होली मना रही हैं। नृत्य मे महिला के अंग विशेष को खास तौर से प्रदर्शित किया गया हैं।[91] होली के अवसर पर विवाहेतर प्रेम को बढ़ावा देने वाला ये अश्लील गीत हिन्दू भावनाओ को आघात करता हैं। पारिवारिक आयोजन मे नई

[90] https://www.youtube.com/watch?v=Y_vHpxdugnw

[91] https://www.youtube.com/watch?v=BPKZS2zURDc

पीढ़ी के साथ ऐसे गीतों पर लोग नाचते हैं। फिर अगर किसी लड़की और लड़के के बीच आपत्तिजनक संबंध हो गए तो यही लोग सर पटक लेते हैं की ऐसा क्यू हुआ?

इस फिल्म के नायक का विवाह रुक्मिणी (टीना मुनीम) के साथ हो चुका हैं। नायक की पत्नी पढ़ी लिखी हैं और इसीलिए वह मा नहीं बनना चाहती हैं और इसके लिए वो कोई उपाय करती हैं जिसके कारण वो कभी माँ नहीं बन सकती और पती पत्नी मे दूरियाँ आ जाती हैं। नायक की बचपन की दोस्त के साथ नायक का प्रेमप्रकरण शुरू हो जाता हैं। बदले की भावना मे नायक की पत्नी उसे जेल भिजवाने का प्रपंच करती हैं।[92] ये फिल्म आधुनिकता के नाम पर युवा लड़कियों को मिथ्या नरिवादसे प्रभावित कर रही हैं। फिल्म विवाहबाह्य प्रेम प्रकरण को भी बढ़ावा देती हैं। फिल्म की कथा अंत मे स्त्री ने बदला लेनाही चाहिए ये भी बताती हैं। 'रुक्मिणी' ये नाम श्रीकृष्ण की आठ पटराणीयों मे से एक का हैं। राधा कृष्ण की बालसखी एवं प्रेमीका का नाम हैं जिसने लोक-कल्याण के लिए अपने प्रेम को त्याग दिया था। सिनेमावाले पर न इस प्रेम को समझ सकते हैं और न ही रुक्मिणी और कृष्ण के रिश्ते को, लेकिन फिर भी मनगढ़ंत कहानियाँ ये हमे परोसते आए हैं और हम देखते आए हैं।

मिथ्या नरिवादी लड़कियाँ इस विचारधारा के प्रभाव आज विवाह ही नहीं करना चाहती। लीव इन मे रहती हैं। गर्भवती हो गई तो गर्भपात करा लेती हैं। ऐसे करते करते जब चालीस के पार हो जाती हैं, तब इनके साथ कोई नहीं रहता हैं और फिर अकेलेपन के अंधेरे मे इनका जीवन बर्बाद होने लगता हैं। आधुनिकता के नाम पर किया गया व्याभिचार और गर्भपात लड़कियों के शरीर मे कोई बीमारी के रूप मे घर कर लेते हैं और फिर जीवनभर पछताती हैं।
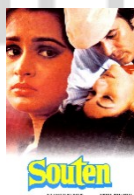
५७) नदिया के पार:

१९८२ की लोकप्रिय फिल्म 'नदिया के पार' का गीत 'जोगी रे धीरे धीरे' होली पर आधारित हैं। इस गीत मे दो अलग अलग जगहों पर होली खेली जा रही हैं। एक लड़कों की होली और दूसरी लड़कियों की होली। एक लड़का लड़कों की होली मे स्त्री वेशभूषा मे हैं। ये नृत्य का पारंपरिक स्वरूप हैं। इसे लौंढा नाच भी कहा जाता

[92] https://en.wikipedia.org/wiki/Souten

हैं। इसमे लड़कियों के ग्रुप मे एक लड़की पुरुष वेशभूषा मे नृत्य करती हैं। गीत के बोल के अनुसार जवान लड़का अपने लिए एक प्रेमीका की मांग जोगी से कर रहा हैं। दूसरी तरफ लड़कियाँ प्रेम रोग का उपाय जोगी जी से मांग रही हैं। लड़कियों के नृत्य मे भलेही गीले कपड़ों मे अंग प्रदर्शन न हो पर शरीर के कुछ अंगों की और ध्यान आकर्षित करता नृत्य हैं। लड़कों के नृत्य मे अश्लील और कामुक हावभाव हैं।[93]

जोगी यह शब्द आलंकारिक रूप मे हिन्दू साधु के लिए उपयोग मे लाया जाता हैं। पर इस गाने मे जोगीजी का स्वरूप कुछ और ही बताया गया हैं। इस गीत मे, जिसने सारी मोह माया त्याग कर सन्यास का रास्ता अपना लिया हो, उसे जवान लड़के लड़कियाँ प्रेम से जुड़ी समस्याओं का हल मांग रहे हैं। यह कही न कही सन्यास प्रथा के विपरीत बताया गया हैं। ऐसा विरोधाभास बताने का क्या कारण हैं?

५८) रजपूत:

१९८२ की फिल्म 'रजपुत' का गीत 'भागी रे भागी' होली पर चित्रित हैं। गीत की शुरुआत दुर्गा माता की पूजा से होती हैं। लड़के को नंदलाला और लड़की को राधा कहा गया हैं। दोनों एक दूसरे को जबरदस्ती रंग लगाते हैं। लड़के ने अपनी प्रेमीका को अकेले मे रंग लगाया तो उसका रूप खिल जाएगा ऐसा आशय गीत के बोल मे हैं। बीच रास्ते मे लड़के ने लड़की को आलिंगन किया। लड़का लड़की एक दूसरे को बाहों मे लिए नाचते हैं तब बाकी कलाकार हरे रंग की थालियाँ लेकर उनके चारों और घूमते हैं।[94]

पूरे फिल्म का प्लॉट ये बताता हैं की कैसे राजपूताना मे महिलाये सुरक्षित नहीं हैं। फिल्म मे दो बलत्कार के सीन हैं।[95] ऐसे अपराध का नाटकीय रूपांतरण एक ही फिल्म मे दो दो बार बताकर क्या संदेश दिया गया हैं? फिल्म के निर्माता मूषिर आलम और मो. रियाज हैं। ये फिल्म उस साल की सुपर डुपर हिट थी।

[93] https://www.youtube.com/watch?v=D7j5ugRDXfQ
[94] https://www.youtube.com/watch?v=eQuxkIs8jbs
[95] https://en.wikipedia.org/wiki/Rajput_(film)

५९) अनोखा बंधन:

१९८२ की फिल्म 'अनोखा बंधन' का गीत 'पिया तूने अपने रंग मे रंग दिया' हैं। शबाना आजमी के इस गीत मे पुरुष और महिला अपने आप को कृष्ण और राधा समझते हैं। होली के अवसर पर खुलेआम सबके सामने इश्कबाजी इस गीत के नृत्य मे हैं।[96]

६०) चटपटी:

१९८३ मे फिल्म आई चटपटी। उस फिल्म का होली गीत 'होली के दिन आए देखो' यह हैं। इस गीत के अनुसार लड़की चाहे राम या कृष्ण अर्थात भगवान की दुहाई दे फिर भी उसका पीछा करना हैं, उसकी कलाई मरोड़ना हैं। और ये लड़का इसलिए कर सकता हैं क्यू की होली के दिन वह लड़की घर के बाहर निकली थी।[97] छेड़छाड़ को बढ़ावा देने वाला यह गीत आज रोमिओगिरी को बढ़ावा दे रहा हैं। ढेरों मामले भारत भार मे दर्ज कराए गए हैं। गीत के शुरुआत मे एक चोरनी भागते हुए होली आयोजन की जगह आकर छीप जाती हैं। ये लड़की पूरे गाने मी छीप छीप कर लोगों की जेबे काटती हैं। उधर दूसरी लड़की और लड़का नृत्य कर रहे हैं और उनके नृत्य के स्टेप्स कमर, नितंब, वक्षस्थल बस इन्ही अंगों तक सीमित हैं। [98]
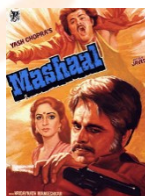
६१) मशाल:

१९८४ की फिल्म मशाल का गीत 'ओ होली आई, होली आई देखो होली आई रे' होली के अवसर पर चित्रित हैं। इस गीत के गीतकार जावेद अख्तर हैं। गीत का आशय जीवन मे मिले धोखे की दास्तान को बयान करता हैं। सिनेमा के बाकी गीतों की तरह इस गीत मे भी नृत्य सफेद कपड़े पहनी भीगी हुई महिला के अंग विशेष को दर्शाता हैं। दीवानगी की हद तक मदहोश हुई लड़की, जिसके पूरे शरीर पर

[96] https://www.youtube.com/watch?v=5mWgmOoQ0Vk&t=2s
[97] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_ke_din_aai_aai_re_holi.htm
[98] https://www.youtube.com/watch?v=E_AxEMUXwQE

सभी रंग लगे हैं, उसे इस गाने मे काली माता की उपमा दी गई हैं,[99] जिसका कोई औचित्य नहीं था। होली के समय ही धोखे की दास्तान बताने वाला गीत क्यू बताया गया?

इस फिल्म के मुख्य कलाकार मो. यूसुफ़ खान (दिलीप कुमार), वहीदा रहमान, अनिल कपूर और रति अग्निहोत्री हैं। फिल्म का आशय हैं की जुर्म को खत्म करने के लिए सच्चाई का रास्ता छोड़ कर जुर्म की दुनिया के बेताज बादशाह बन जाओ।[100]

६२) राज तिलक:

सार्वजनिक रूप से सजा मुस्लिम और ईसाई यूरोपियों के राज मे दी जाती थी। १९८४ की फिल्म 'राज तिलक' का 'आ गए रंग जमाने' ये गीत खून की होली का संकल्प बयान करता हैं। गीत के बोल के अनुसार बिना बुलाए हजारों लोग आए हैं जिन्होंने अपने सर पर कफन बांधा हैं। गीत के प्रारंभ मे हिन्दू राजपरिवार अपनी प्रजा के साथ एक मैदान मे बैठा हुआ हैं। एक बूढ़े (प्राण) को खंबे से बांधकर रखा गया हैं। सहसा आयोजन उस बूढ़े व्यक्ती को सार्वजनिक सजा देने का हैं। सार्वजनिक सजा के इस आयोजन मे अचानक नाचकर करतब दिखाने वाले कई लोग आ जाते हैं। ये लोग सर पर कफन बांधकर आए हैं। लड़कियाँ तंग कपड़ों मे हैं जो कमर और वक्षस्थल हिलाती हुई नाच रही हैं। लड़के बंजारों की तरह करतब वाला नाच कर रहे हैं। ये करतब करने वाले कलाकार उस दिन खून की होली खेल कर उस बूढ़े व्यक्ती को छुड़ाने आए हैं। इस मैदान का सेट ग्रीस राजाओं के स्टेडियम जैसा हैं जहा कई जानलेवा प्रतियोगिताए आयोजित की जाती थी। यहा करतब दिखाकर नाचने वाला नायक कमल हसन हैं।[101] ये किसी बंदी को छुड़ाने के लिए नाच गाना क्यू करते हैं सिनेमावाले? सार्वजनिक रूप से सजा आज की तारीख मे मानवाधिकारों (अरेऽऽऽ ह्यूमन राइट्स) का उल्लंघन हैं। १९४८ मे आए मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषणा (अरेऽऽऽ यूनीवर्सल डेक्लरैशन ऑफ ह्यूमन राइट्स) का मसौदा तयार करने मे भारत का विशेष योगदान रहा हैं।[102] लेकिन फिर भी ये फिल्मे मानवाधिकार उल्लंघन की कहानियाँ क्यू बताती हैं?

[99] https://www.hindilyrics4u.com/song/o_holi_aayee_holi_aayee.htm

[100] https://en.wikipedia.org/wiki/Mashaal

[101] https://www.youtube.com/watch?v=4TduxoDbZq4

[102] https://thewire.in/rights/indias-important-contributions-to-the-universal-declaration-of-human-rights

६३) आखिर क्यू?:

अगर आप सीधीसाधी भारतीय नारी हैं तो आपका पती आपको धोखा देगा। - सिनेमा!

१९८५ की फिल्म 'आखिर क्यू?' का 'सात रंग मे खेल रही हैं' ये होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के बोल के अनुसार लड़की का दामन और चोली भीग गए हैं। गीत के प्रारंभ मे पत्नी (स्मिता पाटील) सादगी पूर्ण तरीके से अपने पती (राकेश रोशन) को रंग लगती हैं। फिर पती भी पत्नी को रंग लगाता हैं और आगन मे चल रहे होली नृत्य मे सहभागी होने के लिए चला जाता हैं। पत्नी घर के बरामदे मे ही खड़ी रहकर ये सब देखती हैं। पती अपनी साली (टीना मुनीम) के साथ नृत्य करते हुए होली मनाता हैं। दोनों के नृत्य और हावभाव देख कर पत्नी विचलित होती हैं क्यू की दोनों जीजा साली की तरह नहीं पर प्रेमी जोड़े की तरह नृत्य करते हैं।[103]

इस फिल्म की कहानी विवाहेतर प्रेम प्रकरणों को बढ़ावा देने वाली हैं। यह फिल्म जय ओम प्रकाश ने निर्देशित की हैं। फिल्म का नायक कबीर व्याभिचारी प्रवृत्ति का है। वो सीधी साधी लड़की निशा से वो विवाह करता हैं। लेकिन फिर भी अन्य महिलाओं के साथ उसके संबंध बने रहते हैं। विवाह के पहले वो निशा की बहन इंदु से भी इश्कबाजी करता हैं जो आधुनिक विचारों की हैं। विवाह के बाद जब निशा गर्भवती रहती हैं तब कबीर और इंदु का प्रेम प्रकरण शुरू हो जाता हैं। निशा को जब ये बात पता चलती हैं और ये भी समझ जाता हैं की इंदु कबीर को नहीं छोड़ने वाली तो वो अपनी नवजात बेटी और कबीर का घर छोड़कर चली जाती हैं।[104] जीजा और साली मे प्रेम प्रकरण को बढ़ावा देकर हिन्दू कौटुंबिक मूल्यों का हनन इस फिल्म मे किया गया हैं।

६४) बाबू:

१९८५ की फिल्म 'बाबू' का गीत 'ऐसी रंग दे' ये होली पर चित्रित तो नहीं हैं पर होली आयोजनों मे बजाया जाता हैं। गीत के पहले लड़का साड़ी रंगने का काम कर

[103] https://www.dailymotion.com/video/x6f711s
[104] https://www.imdb.com/title/tt0247910/plotsummary/

रहा हैं। लड़की उसे अपने साथ चलने के लिए कहती हैं। लड़का जाने से मना करता हैं तो वो उसे मना कर देती हैं। गीत मे लड़की अपने कपड़ों को रंगने की बात करती हैं। जिन कपड़ों का नाम गीत मे लिया जा रहा हैं उनकी तरफ इशारा करते डांस के स्टेप्स हैं। गीत के दौरान फिल्म का खलनायक आता हैं जिसकी कामुक नजर नायिका पर होती हैं। खलनायक गीत के अंत मे नायिका के घर मे छिप जाता हैं। शराब पिया हुआ खलनायक इस गीत के बाद नायिका का बलात्कार कर देता हैं।[105] खुशी से अपने पड़ोसियों और प्रेमी के साथ नृत्य कर घर लौटी लड़की के लिए वो रात मनहूस हो जाती हैं।
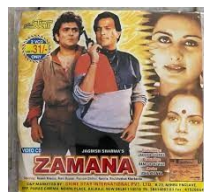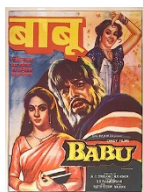
६५) जमाना:

१९८५ की फिल्म 'जमाना' मे मजरुह सुल्तानपुरी का लिखा 'रंगीला चला' होली पर चित्रित हैं। ऋषि कपूर अपनी प्रेमीका को रंग लगाने के लिए पूरी भीड़ लेकर उसके घर की तरफ निकलता हैं। रास्ते मे नाचते गाते थोड़ी शराब भी पी जाती हैं। प्रेमीका के घर के बाहर रंजीत और गुंडे पहरा दे रहे हैं। फिर हाथा पाई होती हैं। गुंडे रंग का सहारा लेकर चाकू निकाल लेते हैं। इस गीत के बाद लड़ाई का सीन हैं।[106]

इस फिल्म मे राजेश खन्ना और ऋषि कपूर सगे भाई हैं। राजेश खन्ना ईमानदार पोलिस इन्स्पेक्टर हैं और ऋषि कपूर गुंडा। भाइयों का ऐसा जोड़ तो केवल सिनेमा मे ही देखने मिलता हैं। और दोनों भाई एक ही लड़की से प्यार करते हैं। लड़की भी गुंडे को ही पसंद करती हैं। ऐसी गजब कहानी जावेद अख्तर और सलीम खान ने लिखी हैं।[107] एक भाई पोलीस और बाकी सब अपराधी ऐसी कोई घटना वास्तव जगत मे कही सुनी हैं क्या? ये फिल्म आपराधिक मानसिकता को बढ़ावा देने वाली हैं।

६६) यार कसम:

[105] https://www.hindilyrics4u.com/song/aesi_rang_de_piya_daag_na_lage_kabhi.htm
[106] https://www.youtube.com/watch?v=lK9gQ4OPngQ
[107] https://en.wikipedia.org/wiki/Zamana_(1985_film)

१९८५ की फिल्म ‘यार कसम’ का ‘रंग रस बरसे’ ये गीत होली पर आधारित हैं। लड़कीया लेटकर मटकी बजा रही हैं और लड़के उन्हे पिचकारी मार कर गीला कर रहे हैं। घुटने तक की साड़ी, घुटने तक घागरे जैसा स्कर्ट ऐसी अंग को प्रदर्शित करती कुछ इस गीत मी महिलाओं की वेशभूषा हैं। नायिका कमर और वक्षस्थल को हिलाते हुए और उनकी तरफ ध्यान आकर्षित करनेवाला नृत्य कर रही हैं। फिल्म का नायक (राज बब्बर) नायिका को भांग पीने के कहता हैं। लड़का लड़की की कलाई मरोड़ देता हैं। लड़की को राधा की उपमा दी गई हैं और उसके गाल लाल होने के बाद नंदलाला भी लाल हो गए हैं। कान्हा बंसी बजा रहे हैं ऐसा कहते समय लड़का और लड़की दोनों के चेहरे पर कामुक भाव हैं। गीत के अंत मे लड़का और लड़की सबके सामने एक दूसरे को चूमते हुए बताए गए हैं।[108] फिल्म के नायक नायिका के कामुकता के साथ कृष्ण और राधा का उल्लेख क्यू किया गया हैं?
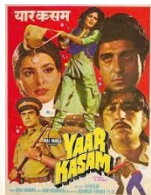
६७) माटी बलिदान की:

‘माटी बलिदान की’ इस १९८६ की फिल्म की समाप्ति मे होली पर चित्रित पूरा एक सीन हैं जिसमे ‘होरी आई होरी’ ये गीत हैं। इस फिल्म की कहानी मे एक तिलकधारी, व्याभिचारी बनिया हैं जो पूरे गाव पर अत्याचार करता हैं। इस बनिए के पास से गाव के हर व्यक्ती ने कर्जा ले रखा हैं। विधवा नायिका लक्ष्मी के दो बेटे हैं। नायिका के पती की लालची बनिए ने भरी जवानी मे हत्या कर दी थी। विधवा नायिका अपने दोनों बेटों को पालपोस कर बड़ा करती हैं। किसना का विवाह हो जाता हैं और रामू की सगाई के बाद होली आयोजन होता हैं। इस आयोजन मे पूरे गाव के साथ बनिए की बेटी भी शामिल हो जाती हैं। गीत मे लौंढा नाच कर के लिए एक पुरुष स्त्री के वेश मे आता हैं। जोड़ियों से नृत्य करने वाले पुरुष और स्त्रियाँ आपस मे एक दूसरे के गले मिलकर नृत्य करती हुई स्टेप हैं। रामू को अपनी होनेवाली पत्नी संग नाचता देख बनिए की बेटी को गुस्सा आता हैं और वो रामूको चिढ़ाने के लिए लक्ष्मी के गिरवी कंगन पहनकर नाचती हैं। मा के कंगन देख रामू बनिए की बेटी के हाथ से जबरदस्ती कंगन निकालने लगता हैं। फिर बनिया अपने

108 https://www.youtube.com/watch?v=PlI0FxS5nkQ

गुंडों के साथ उस आयोजन मे आ जाता हैं। रामू और किसना बनिए को पीटना शुरू कर देते हैं। उसके गुंडे फिर बंदूक लेकर आते हैं। लक्ष्मी इस लड़ाई मे बनिए की हत्या कर देती हैं। उसके बाद बनिए के गुंडे लक्ष्मी की हत्या कर देते हैं।[109] और इस तरह होली के दिन हत्याएं बता कर फिल्म निर्माता क्या बताना चाहते हैं? इस फिल्म की पूरी कहानी कही देखि देखि सी लग रही हैं – हा याद आया लालची व्यभिचारी बनिया का चलन लाने वाली मदर इंडिया। जिस समय ये फिल्म प्रदर्शित हुई थी तब तक भारतीय सरकार ने जमीनदारी पूरी तरह से खत्म कर दी थी। फिर भी ऐसी फिल्म क्यू बनाई गई?

६८) मान मर्यादा:

१९८७ की नसरुद्दीन शाह की फिल्म 'मान मर्यादा' मे 'आज बिरज मे' ये होली पर चित्रित गीत हैं। नायक (दीपक पाराशर) नायिका (रामेश्वरी) के गाल गुलाल बनके चूमना चाहता हैं। नृत्य के नाम पर नायक नायिका को बार बार अपनी बाहों मे जबरन पकड़कर इशबाजियाँ कर रहा हैं।[110]
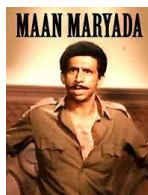
६९) ज़लज़ला:

१९८८ की धर्मेन्द्र की फिल्म ज़लज़ला का होली गीत 'होली आई रे' हैं। गीत के बोल के अनुसार होली के दिन सिंदूरी रंग भर कर लड़के ने लड़की की कवारी मांग भर दी हैं। फिर आगे होली आई हैं इसीलिए रंग और भांग की मस्ती छा गई हैं। होली का दिन शुभ हैं इसीलिए अविवाहित प्रेमीका ने अपने प्रेमी के संग प्रेम लीला करने मे शर्माना नहीं चाहिए।[111]

७०) गीता की सौगंध:

१९८८ की फिल्म गीता की सौगंध इस फिल्म मे अनवर उस्मान का 'पीकर प्याला भांग' इस शीर्षक का होली गीत हैं। गीत की शुरुआत मे शिव शंकर का जयकारा हैं इसीलिए आपको लगेगा ये तो भक्ति गीत हैं। पर ऐसा नहीं हैं। गीत के बोल के

[109] https://www.youtube.com/watch?v=51GGXeOk0eM
[110] https://www.youtube.com/watch?v=5TFRR-U6Lz4
[111] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_aayi_re_aayi_re_aayi_holi_aayi.htm

अनुसार अगर लड़की लड़के से प्रेम नहीं करेंगी तो वो उसे भांग पीकर तंग करेगा। लड़की आगे कहती हैं की उसे भी भांग पिलाई जाए और वो लड़के को उसे छेड़ने की अनुमति देती हैं। लड़का टाँगेवाला हैं और लड़की सरकारी अफसर हैं।[112] इस गीत के माध्यम से ये संदेश दिया जा रहा हैं की लड़की ने नशा करना चाहिए। लड़की भलेही पढीलिखी और सरकारी अफसर बन जाए फिर भी उसने उसी लड़के से प्रेम करना चाहिए जो उसे छेड़ता हैं, फिर चाहे लड़का कुछ भी नहीं करता हो फिर भी उसी लड़के से प्रेम करना चाहिए। ऐसे आशय के गीत देखकर ही आजकल लड़कियाँ ऐसे लड़कों से प्रभावित हो रही हैं जो उनके लायक भी नहीं हैं।

७१) दयावान:

१९८८ की फिल्म 'दयावान' का गीत 'दीवानी तुम जवानों की' ये होली पर चित्रित गीत हैं। इस गीत का चित्रण हनुमानजी के सामने किया हैं। हनुमानजी की पूजा करती कुछ महिलाये झूम रही हैं। फिर महिलाओं के नितंब पर फोकस करती डांस स्टेप्स हैं। जवान लड़कों ने महिलाओं की साड़ी भिगो दी हैं और लेकिन अभी भी रुके नहीं हैं। लड़की अगर होली खेलने निकली हैं तो फिर उसके कपड़े फिर चाहे साड़ी हो या चोली गीले तो कीये ही जाएंगे। फिर महिलाये मुर्गियों को गर्दन से पकड़कर उड़ा रही हैं। होली मे मुर्गियाँ कहा उड़ाई जाती हैं? फिर दो मित्र एक दूसरे के गले मिलकर जमीन पर लोटना शुरू करते हैं।[113]

यह गीत अज़ीज़ ने लिखा हैं। यह फिल्म फिरोज खान ने निर्देशित की हैं। फिरोज खान की इस फिल्म मे शक्ति और शंकर इन दो लड़कों को करीम चाचा पालते हैं और जुर्म के रास्ते पर भेजने वाले चाचा बड़े दयालु इंसान हैं। रतन सिंह नामक पोलीसवाला बड़ा निर्दयी हैं। पोलीस इन्स्पेक्टर को मारकर मुंबई का डॉन बनने

[112] https://www.lyricsmotion.com/song/lyrics/pee-ker-pyaala-bhang
[113] https://www.youtube.com/watch?v=Nebd8jqwc5w

वाला और अन्य गुंडों को भी रास्ते से हटाने वाला शक्ति वेलु दयावान हैं। यह फिल्म तमिल फिल्म नायकन का पुनर्निर्माण हैं।[114]

७२) शिवा शक्ति:

१९८८ की गोविंदा और शत्रुघ्न सिन्हा की फिल्म 'शिवा शक्ति' का 'होली मे दिल' होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के नृत्य मे कोई आपत्ति नहीं हैं। पूरे गीत मे कही कोई अश्लीलता नहीं हैं। गीत मे नायिका दुखी नायक को होली खेलने के लिए मना रही हैं। नायिका आगे अपने प्रेम का प्रस्ताव भी नायक के सामने होली के अवसर पर रखती हैं। फिर अंत मे नायक पर जब रंग गिरता हैं तब नायक अपने दुख की वजह बताते हुए खून की होली खेलने की इच्छा जाहीर करता हैं।[115]

होली के अवसर पर बदले की भावना को क्यू प्रकट किया गया हैं? होली को मनहूस बताने के लिए गीतों मे और संवादों मे 'खून की होली' जैसी बात कही जाती हैं।
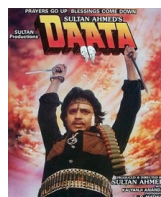
७३) दाता:

१९८९ मे सुल्तान अहमद की निर्देशित फिल्म दाता का होली गीत 'होली खेले नंदलाल हैं'। गीत के नृत्य मे कोई आपत्ति नहीं हैं। पर बोल के अनुसार लड़का कृष्ण हैं और वो लड़की को होली पर इतना भिगाता हैं की उसकी चोली गीली हो जाती हैं। बाद मे कुछ किन्नर आकार लड़की और उसके पिता को बधाई भी देते हैं। एक सीन मे डाकू हमला करने के हिसाब से आगे बढ़े जा रहे हैं ऐसा भी दिखाया गया हैं।[116] होली पर डाकुओं के हमले और होली को मनहूस बताने का चलन सिनेमा मे क्यू बताया जाता हैं?

इस फिल्म का नायक (मिथुन चक्रवर्ती) राष्ट्रपती से पुरस्कृत शिक्षक का बेटा हैं जो बदला लेने के लिए डाकू बन जाता हैं।[117] अगर किसी ने आपके साथ बुरा किया हैं तो आप उससे बदला लेने के लिए हथियार उठा लो, हिंसक बन जाओ यह संदेश इस फिल्म से दिया गया हैं। भारतीय सिनेमा अक्सर बदले की भावना वाली फिल्में

[114] https://en.wikipedia.org/wiki/Dayavan
[115] https://www.youtube.com/watch?v=tJDP-7eYeuQ
[116] https://www.youtube.com/watch?v=ayG0XxSGXiM
[117] https://en.wikipedia.org/wiki/Daata

बनाती आई हैं जिसमे हिंसा अपनी चरम पर हैं। ऐसी फिल्मे देखकर बदले की भावना मे जलता नवयुवक कोई गुनाह कर लेता हैं तब कोई इन फिल्मों को दोष नहीं देता!

७४) इलाका:

१९८९ की फिल्म 'इलाका' का गीत 'होली हैं' होली पर चित्रित हैं। नदीम सैफी और श्रवण राठोड (नदीम-श्रवण) के इस गीत के बोल के अनुसार नायक उन सबकी चीता जलाना चाहता हैं जिन्होंने उसे तकलीफ दी हैं।[118] गीत के बीच मे फिल्म का खलनायक (अमरीश पूरी) जिसने माथे पर कुमकुम का टीका लगाया हैं, पूरे होली आयोजन को अपने बरामदे से देख रहा हैं। फिल्म की नायिका (माधुरी दीक्षित) ठुमके लगाते हुए नाचती हैं। फिर खलनायक के लिए काम करनेवाले लोग राइफल्स, पिस्टल और बॉम्ब लेते हुए दिखाये गए हैं। एक तिलकधारी को गैरकानूनी हथियारों का संग्रहकर्ता बड़ी आसानी से बता दिया गया हैं। फिर एक नायक (संजय दत्त) उस जगह आता हैं और गोलियां बरसाते हुए सबको मारने लगता हैं। दूसरा नायक (मिथुन चक्रवर्ती) होली आयोजन मे दुखभरे स्वर मे बदले की भावना को व्यक्त करने लगता हैं।[119] होली के मौके पर ही बदले की भावना क्यू व्यक्त की गई हैं? 'होली के अवसर पर हत्याकांड' ये बड़ी गजब चीज सिनेमा मे बताई जाती हैं। इस चलन का एक ही उद्देश्य हैं होली को मनहूस साबित करना। पर अब इस अवसर पर कई जगहों पर होली आयोजन पर हमले होते हैं।[120]

७५) आवाज दे कहा हैं:

१९९० की फिल्म आवाज दे कहा हैं का 'आई रे होली आई' ये गीत होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार गोरी लड़की अपने साजन के रंग मे रंग गई हैं। लड़की का शरीर भीग जाने से लड़के का मन ललचाने लगता हैं। लड़का होली के बहाने बार बार लड़की को गले लगाता हैं और उसके शरीर के अलग अलग अंगों को

[118] https://www.hindilyrics4u.com/song/aayi_hai_aaj_to_holi_khelenge_jhoom.htm

[119] https://www.youtube.com/watch?v=tL-rxmhi8W4&t=4s

[120] https://www.opindia.com/2022/03/holi-amroha-uttar-pradesh-namazis-pelt-stones-hindus-dj-music-3-arrested-viral-video/

छूता हैं। लड़की मना करे तो लड़का उसे शर्म त्यागने के लिए कहता हैं। ये गीत हसन कमाल ने लिखा हैं।[121] पती पत्नी के नाते मे रात के अंधेरे मे बंद कमरे मे लाज शर्म को त्यागा जाता हैं। पर भारतीय सिनेमा के हिसाब से अविवाहित प्रेमी जोड़े ने भी खुलेआम होली के त्योहार के दिन अपनी लाज शर्म को त्यागना चाहिए।

७६) षड्यन्त्र:

१९९० की हेमामालिनी की फिल्म 'षड्यन्त्र' मे 'वो होली का दिन' होली पर चित्रित गीत हैं। फिल्म मे होली के एक दिन पहले ईद मनाई जाती हैं। इस फिल्म के खलनायक भवानी चौधरी की भूमिका मे आलोकनाथ हैं जो हरियाणवी भाषा मे बात करते हैं। दो नायकों मे से एक नायक तबरेज़ मो. खान (पंकज कपूर) और दूसरा देवदत्त दिवाकर (राजा बुंदेला) हैं। होली के दिन सभी हिन्दू मुस्लिम लड़के तथा हिन्दू लड़कियाँ और किन्नर मिलकर होली खेलते हैं। मुस्लिम लड़की दूर से होली देखती हैं। गीत के बोल मे होली और ईद दोनों को मनाया जा रहा हैं। इस गीत के अंत मे खलनायक का बेटा अपने गुंडों के साथ बस्ती मे आता हैं तब तबरेज उनसे कहता हैं 'आज त्योहार हैं कोई झगड़ा नहीं करेगा'। पर हिन्दू गुंडे मानते नहीं और हथियारों के साथ दंगे शुरू हो जाते हैं।[122]

'भवानी' ये हिन्दू देवी काली एक अवतार का नाम हैं, यह नाम हिन्दू लड़कों का भी रखा जाता हैं। खलनायक का नाम हिन्दू देवी अथवा देवता से ही क्यू जुड़ा होता हैं? एक तबरेज को दंगा रोकने की कोशिश करनेवाला और बाकी हिंदुओं को दंगे करनेवाला ही क्यू बताया जाता हैं? मुस्लिम लड़के होली खेल सकते हैं पर मुस्लिम लड़की केवल दूर से ही होली क्यू देखती हैं? खलनायक केवल हिन्दू समुदाय के ही बताए गए जो बार बार मुस्लिमों से घृणा करते हुए बताए गए हैं। इस फिल्म ने धर्म के आधार पर विद्वेष के बीज भारत के समाज मे बो दिए हैं जो भारतीय एकता और अखंडता के लिए घातक हैं।

७७) देशवासी:

121 https://www.hindilyrics4u.com/song/aayi_re_holi_aayi.htm

122 https://www.youtube.com/watch?v=gzmQtqoWIZU

१९९१ की फिल्म 'देशवासी' का गीत 'बरसों के बाद मे उठी मन मे तरंग' होली पर चित्रित हैं। गीत के बोल के अनुसार छेड़छाड़ कर लड़की के चोली के अंदर तक रंग डालने जैसी अश्लील बात की गई हैं। आगे एक लड़की को राधा की उपमा दी गई हैं जो घनशाम (श्रीकृष्ण) को याद कर रही हैं और कहती हैं की घनशाम कितना हरजाई हैं।[123] गीत के चित्रण मे पहले लड़कीया घुटने तक का घागरा और चोली पहनकर बिना दुपट्टे के ही वक्षस्थल की और आकर्षित करने वाला नृत्य कर रही हैं। भांग भी पीसी जा रही हैं। पूरे गीत मे नायक और नायिका इश्कबाजिया कर रहे हैं। दुरसे नायक को मन ही मन प्रेम करनेवाली एक और लड़की ये सब देखकर विचलित हो रही हैं। ये दूसरी लड़की अपने आप को राधा मानकर नायक को कृष्ण की उपमा दे देती हैं और नायक का किसी और लड़की से प्रेम देखकर दुखी हो रही हैं।[124] बदले की भावना पर आधारित राजीव गोस्वामी की इस फिल्म मे हेमा मालिनी, अनुपम खेर की प्रमुख भूमिकाये हैं। अगर कोई आपके पती को मार दे तो आप डाकू बन जाइए, हथियार उठाइए और अपने बेटे को भी अपने बदले को पूरा करने के लिए मजबूर करिए, ऐसा संदेश इस फिल्म से दिया गया हैं। ये भी दिखाया गया हैं की राजपूत राजाओं को देश की स्वतंत्रता मंजूर नहीं थी। यह राजपूत समाज के देशप्रेम का अपमान करने वाली फिल्म हैं।

वास्तव मे देवी राधा का कृष्ण के प्रति प्रेम समर्पण तथा त्याग से परिपूर्ण हैं। श्रीकृष्णजी को किसी और महिला के साथ देखकर राधाजी कभी विचलित नहीं हुई, पर सिनेमा के गीतों मे राधाजी का संदर्भ देकर किसी एक लड़की का दुख अथवा जलन जरूर बताई गई हैं। पहले अश्लीलता और बादमे राधा कृष्ण का संदर्भ देकर सिनेमा के न जाने कितने गीत लिखे गए हैं। यह सारे गीत हिन्दू देवता श्रीकृष्ण तथा हिन्दू देवी राधा की छवि धूमिल कर रहे हैं।

४८) दलपति:

१९९१ मे रजनीकान्त की तमिल फिल्म 'थलपती' का हिन्दी अनुवादित संस्करण 'दलपति' प्रदर्शित हुआ। इस फिल्म मे 'आई होली मनवा डोले' ये होली पर चित्रित गीत हैं। मूल तमिल गीत का शीर्षक 'कुट्टू कुईलू' हैं। आम प्रेमी जोड़े वाले गीत की जगह ये गीत दो मित्रों की मित्रता को दर्शाता हैं। यह गीत रंग खेल कर होली मनाने वाला गीत नहीं हैं, ये होलिकादहन पर चित्रित हैं। गीत के एक सीन मे सब

[123] http://www.junolyrics.com/lang-hindi-page-lyricsdetails-lyricsid-131029080646-lyrics-Aaj-Holi-Hei.html
[124] https://www.youtube.com/watch?v=fdX9JWaeYVQ

लोग होलिका मे जो हाथ मे आया वो डालते हुए बताया गया हैं।[125] पेपर, टायर तथा फर्नीचर अगर होली मे जलाएंगे तो प्रदूषण होगा।
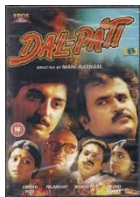
७९) डर: अ वाइलन्ट लव स्टोरी:

१९९३ की शाहरुख खान की फिल्म 'डर' का होली गीत हैं 'अंग से अंग लगाना'। इस गीत मे जो नृत्य हैं वो अत्यंत अश्लील हैं। फिर ढोल बजाने के बहाने लड़की का सनकी आशिक लड़की को छेड़ने अपना चेहरा रंग कर आता हैं। वो सनकी आशिक लड़की के प्रेमी के सामने लड़की को रंग लगाता हैं और लड़की तथा उसके साथी मित्र कोई कुछ नहीं कर पाते हैं।[126] एक सनकी आशिक का डर ही इस फिल्म मे बताया गया हैं। इस फिल्म मे शाहरुख खान की खलनायक की भूमिका हैं जो एक लड़की (जूही चावला) के रूप से प्रभावित हैं। पागल सनकी आशिक की भूमिका शाहरुख खान ने इस फिल्म मे की हैं। इस फिल्म मे बताए गए हिंसक दृश्य आजकी तारीख मे धरातल पर कई अपराधों जन्म दे रहे हैं। किसी लड़की का पीछा करना या उसपर नजर रखना अर्थात स्टॉकिंग एक कानूनी जुर्म हैं पर इस फिल्म मे और होली के गीत मे इस जुर्म को बढ़ावा दिया गया हैं। आज स्टॉकिंग से लेकर अपहरण, बलात्कार, तथा हत्या जैसे कई जुर्म लड़कियों के साथ हो रहे हैं उनके बीज आम जनमानस के मन मे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर डर जैसी फिल्मों ने बोए हैं।

८०) धनवान:

१९९३ की फिल्म 'धनवान' का गीत 'रंग दी रंग दी' होली पर चित्रित हैं। इस गीत के अनुसार बाली उम्र अर्थात टीनैज प्रेम के रंग मे रंग जाती हैं। इस बाली उम्र मे लड़का लड़की दोनों एक दूसरे के रंग मे रंग जाते हैं अर्थात दोनों एक दुरसे के अनुरूप हो जाते हैं। होली और फागुन आया हैं तो भांग पीना चाहिए। लड़की की चोली सतरंगी हैं।[127] गीत का नृत्य सामान्य हैं कोई आपत्ति नहीं हैं। परिवार और

---

[125] https://www.youtube.com/watch?v=rK4pb4gJv8M

[126] https://www.youtube.com/watch?v=bue7fClXlkI

[127] https://www.youtube.com/watch?v=MilEEA1iZxQ

गाव के लोग खुश होकर होली मना रहे हैं। इस आयोजन मे भांग का नशा और बाद मे सोबर से गाने मे महिला के वस्त्र विशेष का वर्णन करने की क्या आवश्यकता थी?
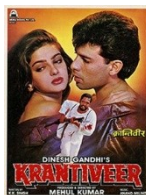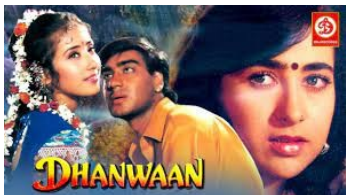
८१) क्रांतिविर:

१९९४ मे आई लिजेंडरी फिल्म 'क्रांतिविर' मे होली पर आधारित 'झनकारों झनकारों' गीत हैं। समीर अंजान ने लिखे इस गीत के बोल के अनुसार लड़की के सभी कपड़े गीले हो गए हैं और ये बात वो उन सब कपड़ों के नाम लेकर बताती हैं। लड़का लड़की के बदन की तारीफ करता हैं।[128] फिर एक बूढ़ा, जिसके मुह मे दात भी नहीं बचे हैं, अपने से आधी उम्र की महिला के साथ होली खेलता हैं और ये बताया जाता हैं की होली के दिन बूढ़े भी जवान हो जाते हैं। नृत्य महिला नितंब और वक्षस्थल हिलाते हुए और पुरुष नितंब हिलाते हुए कर रहे हैं।[129] होली के गीत पर अश्लील नाच यही तो सिनेमा का चलन हैं। ये फिल्म मो. इब्राहीम बलोच (मेहुल कुमार) ने निर्देशित की हैं। यही फिल्म के निर्माता भी हैं।[130]

८२) हिम्मतवाला:

१९९८ की फिल्म 'हिम्मतवाला' का 'होली हैं' ये गीत होली पर चित्रित हैं। गीत के प्रारंभ मे ही लोग भांग पीकर पागलों की तरह हरकतें कर रहे हैं। कुछ लोग भांग रगड़ रहे हैं। होली लाज का घूँघट खोलकर खेलनी चाहिए जिससे प्रेमी अपनी प्रेमीका को अंग लगाकर अर्थात बाहों मे भरकर रंग लगा सके। सुर ताल मे होली खेलते समय गाली भी देना हैं। नृत्य मे लड़का और लड़की वक्षस्थल और नितंब हीलाकर उनकी और ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। फिर एक अधेड़ उम्र का शराबी बार बार सामने आकर नाच रहा हैं। उस शराबी को एक बूढ़ी महिला जिसके मुह मे दात भी नहीं हैं उसे चूमती हैं। ये चूमने वाला सीन दो बार बताया गया हैं। फिर एक जगह लड़की हठगाड़े मे सीधी लेती हैं और उसके ऊपर लड़का घुटनों के बाल झुककर उसे चूमने की कोशिश कर रहा हैं। फिर किसी की गाड़ी मे एंट्री होती हैं

---

[128] https://www.hindilyrics4u.com/song/jhankaro_jhankaro.htm

[129] https://www.youtube.com/watch?v=LvIB4bdn_AY

[130] https://en.wikipedia.org/wiki/Mehul_Kumar

और वो जोर से चिल्लाकर होली आयोजन को रोक देता हैं। इस गीत की नायिका धनवान पिता की बेटी हैं और नायक गरीब मोहल्ले मे रहने वाला एक लड़का। इस गीत के बाद नायिका के पिता उसे अपने साथ लेकर चले जाते हैं।[131]

'इस धरती पर लड़कियों के जीवन का अगर कोई शत्रु हैं तो वो केवल उनके माता पिता' ऐसा संदेश देने वाली कई फिल्मे हैं उन मे से ये एक हैं। माता पिता को अपनी ही बेटी का दुश्मन बताकर फिल्मों ने कुटुंब व्यवस्था तथा कौटुंबिक मूल्यों पर अनेकों आघात किए हैं।
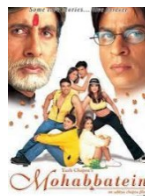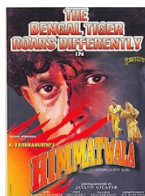
८३) मोहब्बतें:

२००० मे आई शाहरुख खान की फिल्म 'मोहब्बतें' मे 'सोनी सोनी अखियों वाली' ये होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के प्रारंभ मे अमिताभ बच्चन के गुरुकुल के शिक्षक और अन्य कर्मचारी होली आयोजन मे छात्रों के साथ सम्मिलित होते हैं। अर्चना पुरण सिंह के कपड़े जरूरत से ज्यादा तंग एवं वक्षस्थल को उभारकर बताने वाले हैं। फिर छोटे कपड़ों मे बगल के महिला गुरुकुल की छात्राये उस आयोजन मे आती हैं। फिर लड़के उन लड़कियों को रंगने के लिए जबरन कंधे पर उठाकर ले जाते हैं और जोर जबरदस्ती कर रंग देते हैं। इन प्रेमी जोड़ों को लड़कों के संगीत शिक्षक (शाहरुख खान) मिलाने का काम कर रहे हैं। शाहरुख खान खुद लड़के को भांग का प्याला देते हैं। एक और नायिका हैं इस फिल्म मे जिसने फौजी की विधवा की भूमिका की हैं वो भी इस आयोजन मे अपने जेठ के बच्चे के साथ सम्मिलित होती हैं, जिसके लिए इस गीत मे कहा गया हैं की दिल को मत रोको और खुलकर अपने प्रेमी को अपनाओ।[132] ये कैसा गुरुकुल हैं जहा शिक्षक खुद लड़कों को नशा दे रहे हैं? ये कैसा गुरुकुल हैं जहा कर्मचारी खुद छात्रों को पढ़ाई की जगह प्रेम-प्रकरणों मे लिप्त रहने के लिए प्रेरित कर रहे हैं? पुनर्विवाह आज समाज की आवश्यकता हैं पर उसके लिए घर की मान मर्यादा को भंग करने की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

[131] https://www.youtube.com/watch?v=GHtKAZo3_MI
[132] https://www.youtube.com/watch?v=OpLD97fG9Hw

आधुनिकता के नाम पर लड़कियों को जरूरत से ज्यादा छोटे कपड़े पूरी फिल्म मे पहनाए गए हैं।[133] पूरी फिल्म ही परंपरा, प्रतिष्ठा तथा अनुशासन को तोड़ने के लिए बनाई गई हैं। होली का गीत भी इन तीन मूल्यों को तिरस्कृत करने के लिए ही इस फिल्म मे चित्रित किया गया हैं। इस गीत के साथ साथ पूरी फिल्म का संदेश यही हैं की युवक युवतियों ने नियमों को तोड़ना हैं, परंपराओं का अपमान करना हैं तथा परिवार और समाज की प्रतिष्ठा को धूमिल करना हैं।

८४) बूंद:

२००१ मे आई रवि किशन की फिल्म 'बूंद' मे 'लाल लाल हो गए हैं' ये होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के पहले नायक खलनायक को 'खून की होली' की धमकी देता हैं। और गीत के बाद फिल्म मे दंगों का सीन हैं।[134] गीत के बोल के अनुसार लड़का लड़की के जवान बदन को बुरी नजर से देख रहा हैं।[135] भांग और अश्लीलता भरे नृत्य के साथ इस गीत का चित्रण किया गया हैं। होली के समय ही 'खून की होली' वाला चलन क्यू हैं?
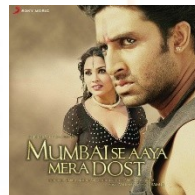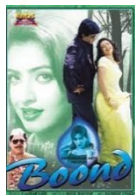
८५) मुंबई से आया मेरा दोस्त:

२००३ मे प्रदर्शीत 'मुंबई से आया मेरा दोस्त' इस फिल्म का होली गीत के बोल 'कोई भीगे हाँ रंग से' हैं। बोल के अनुसार होली हैं इसीलिए भांग पीकर गीला होना चाहिए। भांग और होली का संबंध किस संदर्भ मे बताया गया हैं? गीत मे नायिका लहंगा चोली मे है। लहंगा जरूरत से ज्यादा लो वैस्ट हैं और चोली से जरूरत से ज्यादा क्लीविज दिखाई गई हैं। गीत मे बार बार लड़का लड़की की कलाई मरोड़ता हैं। अंत मे लड़की का भाई जो गाव का प्रमुख हैं और फिल्म का खलनायक हैं, वो ये सब देखकर गुस्से मे अपनी बहन को वहा से ले जाता हैं।[136] गीत मे महिला को वस्तुनिष्ट किया गया हैं और फिल्म मे भाई को लड़की का दुश्मन बता कर कुटुंब व्यवस्था पर आघात किया गया हैं। खलनायक भाई का नायक और नायिका के प्रेम

[133] https://www.primevideo.com/detail/0G0VN7VDPSAA2IZMRZZNASASP4/ref=atv_dp_share_cu_r
[134] https://www.airtelxstream.in/movies/boond/EROSNOW_MOVIE_1000115
[135] https://www.hindilyrics4u.com/song/laal_laal_ho_gaye_hai_gori_ke_gaal_holi_me.htm
[136] https://www.youtube.com/watch?v=OUNgk6yM250

के विरोध का कारण नायक की नीची जाती बताया गया हैं। जातियों मे विद्वेष को बढ़ावा इस फिल्म मे दिया गया हैं।

८६) बागबान:

२००३ मे प्रदर्शीत बागबान फिल्म का होली गीत 'होली खेले रघुबीरा' काफी लिकप्रिय हैं। इस गीत मे पुरुष को रघुबीर (मर्यादा पुरुषोत्तम राम) कहा गाया हैं। पुरुष साठ साल का हो गया है लेकिन उसे शर्म नहीं हैं और वो खुलेआम अपनी पत्नी के साथ प्रेम लीला कर रहा हैं। गीत के आरंभ मे भांग रगड़ने वाले बैठे हैं और भांग पी जा रही हैं।[137] राम मर्यादा का प्रतीक हैं और इस गीत मे उनके नाम पर मर्यादाए लांघी गई हैं। राम का नाम लेने से कोई गीत भक्ति गीत नहीं होता!
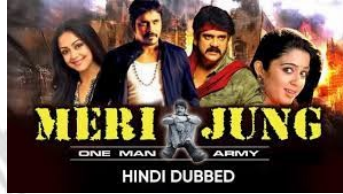
८७) मेरी जंग:

२००४ मे नागार्जुन की तेलुगु फिल्म आई थी मास। मास का हिन्दी भाषांतरण 'मेरी जंग' इस नाम से प्रदर्शीत किया गया था। इस फिल्म का गीत 'होली होली होली' होली पर आधारित हैं। मूल फिल्म मे यह गाना 'कुट्टू कुट्टू कुट्टू' इस नाम का हैं। लड़का लड़की जवान हैं। लड़की लड़के साथ प्रेम संबंध बनाने को आतुर हैं। लड़की सोलह बरस की हो गई हैं, मतलब अभितक न्यायिक दृष्टि से विवाह योग्य नहीं हुई हैं, पर वो अपने दिल को संभालना नहीं चाहती। गाने का नृत्य तथा कलाकारों के हावभाव एक महिला को वासना मे डूबी हुई बताते हैं। इस फिल्म मे लड़का पहले से किसी अन्य लड़की से प्रेम करता हैं। पर होली के इस गाने मे वो अन्य लड़की के साथ इश्कबाजी करता हैं।[138] इसका क्या अर्थ लेना चाहिए?

८८) मंगल पांडे द राइज़ींग:

२००५ मे आमिर खान की फिल्म मंगल पांडे द राइज़ींग प्रदर्शीत हुई। इस फिल्म मे जावेद अख्तर का लिखा होली गीत हैं 'होली रे'। भीगी चोली मतलब होली, घड़ा भरकर भांग पीना मतलब होली, बस यही इस गाने का आशय हैं। नृत्य मे अश्लीलता हैं, लड़की को छेड़ना हैं, जबरदस्ती महिला को रंग लगाना हैं। मंगल पांडे जैसे

[137] https://www.youtube.com/watch?v=87FYp3YLEBM

[138] https://www.hotstar.com/in/movies/mass/1000070202/watch?utm_source=gwa

महान स्वतंत्रता सेनानी को ये अश्लीलता करते दिखाया गया हैं।[139] इस फिल्म मे मंगल पांडे का जो चरित्र बताया गाया हैं उसपर संशोधन करने की आवश्यकता हैं। पूरा साल लेकर हिन्दू परंपरा या इतिहास के हिन्दू नायकों की छवि को धीमे से धूमिल करने मे आमिर खान को महारत मिली हैं।

८९) वक्त: द रेस अगैन्स्ट टाइम:

२००५ मे प्रियांका चोपड़ा तथा अक्षय कुमार अभिनीत फिल्म 'वक्त: द रेस अगैन्स्ट टाइम' मे होली पर चित्रित 'डू मी अ फ़ेवर लेट्स प्ले होली' ये गीत हैं। गीत की शुरुआत के अनुसार लड़के को शाम (श्रीकृष्ण) और लड़की को राधा कहा गया हैं। लड़का लड़की के पीछे जाता हैं। वो लड़की की चोली भी छू लेता हैं। होली के मौके पर ही वासना का (प्यार का) जुनून सवार होता हैं और ये होली हमेशा चलन (फैशन) मे रहनी चाहिए।[140]

वासना के लिए जुनून और लड़की या महिला की चोली को छूना बस यही होली हैं और यही राधा-कृष्ण के जैसा पवित्र प्रेम हैं ऐसा इस गीत के बोल का आशय हैं। इस गीत को संगीतबद्ध अनवर (अनु) मालिक ने किया हैं।[141] सिनेमा के गाने लिखने वाले, गानेवाले, संगीतबद्ध करने वाले क्या अपने असल जीवन मे राधा और कृष्ण के तरह बलिदान दे सकते हैं? राधा कृष्ण का प्रेम वास्तव मे एक दूसरे को सहयोग देनेवाला हैं और फिल्मी गानों का प्रेम केवल वासना को बढ़ावा देने वाला हैं।

९०) बनारस: अ मिस्टिक लव स्टोरी:

२००६ की फिल्म 'बनारस: अ मिस्टिक लव स्टोरी' मे 'बड़ा दर्द होये' ये गीत होली पर चित्रित हैं। गीत के आरंभ मे लड़कियाँ भांग पीस रही हैं और इससे लड़कियों की कलाइयों मे दर्द हो रहा हैं। चोली से लड़की के अंग को झलकता देख लड़के का मन बेकाबू हो रहा हैं। पारिवारिक माहौल मे लड़का लड़की को लेकर एकांत मे जाता हैं। बैकलेस चोली पहनी हुई लड़कियाँ नितंब एवं वक्षस्थल की और ध्यान आकर्षित

[139] https://www.youtube.com/watch?v=9A8qbrnKKKE
[140] https://www.hindilyrics4u.com/song/do_me_a_favour_lets_play_holi.htm
[141] https://en.wikipedia.org/wiki/Anu_Malik

करती नृत्य कर रही हैं।[142] होली जैसे भक्तिमय पर्व पर आधारित गीत के नाम पर महिला को वस्तुनिष्ट बनाया गया हैं। नशा और महिलाओं के साथ मर्यादा लांघना ही होली हैं ऐसा इस गाने मे बताया गया हैं।

९१) आग:

२००७ की फिल्म 'आग' जिसे 'राम गोपाल वर्मा की आग' भी कहते हैं, उसमे 'होली' नाम से होली पर चित्रित एक गीत हैं। इस गीत मे लड़का होली के बहाने लड़की का पीछा करता हैं। लड़की उसे मना करती हैं। वह फिर भी होली का वास्ता देकर उसे छेड़ता हैं। लड़की के पीछे जाते जाते वो अपनी भाभी, अर्थात बड़े भाई की पत्नी, को भी छेड़ता हैं। नृत्य महिला के अंग विशेष को दर्शाता हुआ तथा महिला को वस्तु की तरह बताता हैं। गीत मे एक और लड़की आती हैं जिसके पीछे लड़का और उसका भाई जाकर उस तीसरी लड़की को भी छेड़ते हैं। गीत के बोल सलीम खान ने लिखे हैं।[143] होली पर पानी की बर्बादी पर छाती पीटने वाले फिल्मी दुनिया के लोग होली गीत की शूटिंग के समय न जाने कितना गैलन पानी बर्बाद करते हैं?

९२) दिल्ली हाइट्स:

नेहा धूपिया की २००७ की फिल्म 'दिल्ली हाइट्स' मे 'ऐ गोरी' होली पर चित्रित गीत हैं। नायिका (नेहा धूपिया) अपने पती के साथ इस होली आयोजन मे सम्मिलित होने आती हैं जहा उसका प्रेमी (रोहित रॉय) उसकी पत्नी के साथ हैं। गीत के बोल के अनुसार जोगी (सन्यासी) ने नायिका की चोली रंग दी हैं। होली के दिन विवहित स्त्री के न कोई सास-ससुर हैं और न ही कोई बलम हैं, वो फिर से कुवारी हैं। नायिका ने शर्म छोड़कर कहा हैं की उसकी चोली उसके साजन (रोहित रॉय) ने रंगनी चाहिए। दोनों का नृत्य देखकर नाईक का पती (जिमी शेरगिल) और

[142] https://www.youtube.com/watch?v=bNJ2eapnIl0
[143] https://www.dailymotion.com/video/x11fb27

प्रेमी की पत्नी व्यथित होते हैं।[144] इस फिल्म मे विवाहबाह्य प्रेम प्रकरण की कहानी बताई गई हैं और प्रेमी एक ही बिल्डिंग मे रहते हैं। प्राइवेट कॉम्पनियों मे काम करने वाले पती-पत्नी और उनके विवाहबाह्य प्रेम प्रकरण की इस कहानी ने बड़े शहरों मे नौकरी के लिए स्थायी हुए कई परिवारों मे शक के बीज बोए हैं।

९३) कर्मा और होली:

२००८ मे सुष्मिता सेन और रणदीप हुडा अभिनीत फिल्म 'कर्मा और होली' का समीर अंजान (समीर पांडे) ने लिखा गीत 'आई होली' ये होली पर चित्रित गीत हैं। ये गीत होली पार्टी के आयोजन पर चित्रित हैं। सभी लोग इस पार्टी मे अपने हिसाब से मजे करने आए हैं और विदेश मे बसे भारतीय जोड़े ने अपने इस आयोजन मे अपनी अफ्रीकन सहयोगी को भी बुलाया हैं। पूरी फिल्म इस पार्टी पर ही आधारित हैं। पर इस गीत का नृत्य फूहड़ता से भरा हैं। गीत के बोल के अनुसार होली की पार्टी मे भांग या नशा तो होता ही हैं। बूढ़े हो या जवान सभी लोग एक दूसरे के साथ शर्म त्यागकर नाचते हैं। भलेही होली कृष्ण को समर्पित हैं पर कृष्ण भक्ति के नाम पर ये सब चलता हैं ऐसा आशय पूरी होली पार्टी का हैं।[145]

९४) मेरी पड़ोसन:

२००९ की फिल्म 'मेरी पड़ोसन' का गीत 'आजा मेरे संग संग' होली पर चित्रित हैं। लड़कियों के नृत्य के स्टेप्स नितंब की और ध्यान आकर्षित करने वाले हैं।[146]
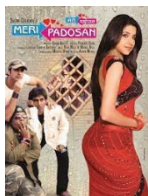
९५) दो दिलों के खेल में:

२०१० की 'दो दिलों के खेल में' इस फिल्मका 'रंग डालूँगा चुनरी' ये होलीगीत हैं।

[144] https://www.youtube.com/watch?v=mQlUIMmTRD8
[145] https://www.youtube.com/watch?v=Nxfemp8fDeM
[146] https://www.youtube.com/watch?v=sxVVGJr3i0A

पूरे गाने मे फूहड़ता हैं। लड़का और लड़की को कृष्ण और राधा की उपमा दी गई हैं। लड़के को लड़की की चोली के अंदर ही रंग डालना हैं। इसके लिए वो लड़की के पीछे हैं। अश्लील नृत्य के साथ पूरे गीत मे छेड़छाड़ को बढ़ावा दिया गया हैं। लड़का भांग पीकर नशे मे धुत हैं। अश्लीलता और नशे को कृष्ण को जोड़कर कृष्ण भक्तों की भावनाओं को आहत किया गया हैं।[147] धार्मिक भावनाए आहत करना यह एक कानूनी अपराध हैं। सिनेमा चाहे फ्लॉप हो या सुपरहिट, हिन्दू धर्मिक भावनाओं को बार बार आहत किया गया हैं।

९६) ये जवानी हैं दीवानी:

२०१३ की फिल्म 'ये जवानी हैं दीवानी' मे होली पर चित्रित गीत के बोल हैं 'बलम पिचकारी जो तूने मुझे मारी'। गाने के बोल के अनुसार जीन्स पहने लड़के को नाचते देख पास पड़ोस की विवाहित युवतियाँ उसकी दीवानी हो जाती हैं। होली के समय लड़की शराबी हो जाती हैं। होले के समय हवा मे ही भांग घुल जाती हैं।[148] मतलब होली का पर्व ही नशे का हैं। लड़की के साथ छेड़छाड़ इस गीत मे हैं। गीत के बीच मे एक लड़का लड़की जिनका पहले से प्रेम संबंध रहता हैं अकेले मे जाकर अपनी वासना की पूर्ति करते हैं। गीत के अंत मे एक लड़का, जीसे नशे और जुए की लत हैं, वो बस मे रखी अन्य यात्रियों की बैग्स मे कुछ ढूंढते हुए दिखाया गया हैं।

९७) बंदूक:

२०१३ की फिल्म 'बंदूक' का 'यूपी की होली' होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के पहले एक रुद्राक्ष की माला पहना हुआ व्यक्ति, पिस्टल लाल गुलाल की थाली मे रखकर, हनुमानजी के सामने अपने किसी गुंडे को देकर इशारा देता हैं 'अबकी बार खून की होली'। फिर एक महिला अपने आप को बचाते हुए भागती हुई दिखाई गई हैं। बादमे लोग रंग और कीचड़ से होली खेलते हैं। लठमार होली भी कहलते हैं – लठ सब पुरुष मिलकर कीसे मार रहे हैं ये नहीं दिखाया। दो लोग मिलकर एक बच्चे

[147] https://www.hindilyrics4u.com/song/jogira_sarara.htm

[148] https://www.youtube.com/watch?v=0WtRNGubWGA

को रंग देते हैं तो बच्चा बंदूक निकालकर उनके पीछे दौड़ता हैं और गोली चलाता हैं।[149] बच्चों के हाथ मे बंदूक देकर क्या संदेश दिया जा रहा हैं?

९८) यारियाँ:

२०१४ मे फिल्म आई यारियाँ। इसमे एक गाना हैं 'आज दिन हैं सनी सनी'। ये गाना बीच पर चित्रित हैं। इसका होली से वैसे कोई संबंध नहीं हैं। पर ये गाना हर होली आयोजन पर लगाया जाता हैं। गीत मे लड़कियाँ बिकनी मे हैं और लड़के ओवरड्रेस्ड! नितंब और वक्षस्थल पर फोकस करते हुए नायिका का नृत्य चित्रित किया गया हैं। नायक हर लड़की से इशबाजी कर रहा हैं। गायक हर लड़की को कामुक नजरों से घूर कर देख रहा हैं। शराब को पीकर सब लोग नाच रहे हैं। ये सब लड़के लड़कियाँ महाविद्यालय (अरेSSS कॉलेज) के छात्र हैं। गीत के बीचोंबीच लड़का लड़की अकेले मे जाकर अपनी वासना को पूरा करते हैं। इस गाने का आशय हैं की लड़की लड़के साथ दुनिया से दूर सागर के बीच नशे मे धुत होकर रहे।[150] लड़कियों मे नशे की लत को बढ़ावा इस गीत मे दिया गया हैं। गाना बीच पर आधारित हैं तो कपड़े और नृत्य अश्लीलता की हद पार कर रहे हैं। नशे और अश्लीलता को बढ़ावा देने वाला ये गीत हर पार्टी मे जोरशोर से बजाया जाता हैं।

इस फिल्म मे एक और गीत हैं जहा भारत मा को निर्वस्त्र किया गया हैं। एक दृश्य मे फिल्म की नायिका और उसकी सहेलियाँ माता की चौकी का बहाना बना कर लड़कों के साथ रातभर पार्टी करती हैं।[151] भारत माता का अपमान कानूनी अपराध हैं। पूजा और पढ़ाई इन दोनों का बहाना देकर हर साल फरवरी माह मे न जाने कितनी लड़कियाँ अपने चरित्र को मलिन कर देती हैं। और उसके बाद जो होता हैं वो पहले खुद उन लड़कीयों को भुगतना पड़ता हैं।

९९) आई लव देसी:

[149] https://www.youtube.com/watch?v=c2vcMroWRCo

[150] https://www.youtube.com/watch?v=MXJCnccDLA0

[151] https://www.hotstar.com/in/movies/yaariyan/1000019457/watch?utm_source=gwa

२०१५ की 'आई लव देसी' फिल्म का 'रंग भरी मारी' ये गीत होली पर चित्रित हैं। देहाती लड़का अपनी आधुनिक पत्नी को लेकर होली मे सम्मिलित होने आता हैं। आधुनिक लड़की को ये सब पसंद नहीं था। पूरे गीत मे लड़का अपनी पत्नी को रंगों से बचाते रहता हैं। फिर होली की खुशियों को वो भी महसूस करती हैं और रंगने के लिए राजी हो जाती हैं। उसके बाद उसका पती उसे रंगों मे भिगो देता हैं और उसे अपनी बाहों मे भरना चाहता हैं पर वो मना कर देती हैं।[152] इस गीत मे कुछ भी ऐसा नहीं हैं जीपर आपत्ति हो सकती हो।

१००) रणबंका:

२०१५ की फिल्म 'रणबंका' फिल्म का 'आ रंग लगा दे' ये गीत होली पर चित्रित हैं। गीत के प्रारंभ मे पुजारी के भेस मे एक आदमी भांग पीसकर सबको दे रहा हैं। फिर लड़के लड़कियाँ भांग पीते हैं। लड़की कमर, पेट, वक्षस्थल और नितंब की तरफ आकर्षित करने वाला नृत्य कर रही हैं और इन अंगों पर ही पूरा फोकस किया गया हैं। कामुकता भरे इशारों के साथ लड़की कहती हैं की उसे अंग से लगालो। लड़की ही खुद कह रही हैं कि उसकी चोली भिगाई जाए। एक घर मे एक बच्चा उसकी माँ (फिल्म की नायिका) को मरा हुआ मिलता हैं।[153] अश्लीलता से भरे इस गीत मे महिला के शरीर के कुछ अंगों की और फोकस कर महिला को वस्तुनिष्ट बना दिया गया हैं। होली जैसे आनंद और भक्ति के पर्व पर ही एक माँ को सबसे ज्यादा पीड़ित करने वाला सीन क्यू बताया गया हैं? ये गीत मंदिर के सेट पर चित्रित किया गया हैं। इस गीत के बोल तनवीर ग़ाज़ी ने लिखे हैं। यह फिल्म शाकिर आली ने लिखी हैं और मनीष पॉल और रविकिशन प्रमुख अभिनेता हैं। इस फिल्म मे खलनायक का नाम 'राघव' (श्रीराम का एक नाम) हैं।[154] सिनेमावाले भगवान राम को ही क्यू खलनायक दिखाना चाहते हैं? खलनायक को नायक की पत्नी जो नायक के बेटे की माँ हैं उससे प्रेम हो जाता हैं और नायिका को पाने के लिए वो नायिका के बेटे को मार देता हैं। भगवान राम ने कभी मर्यादाए नहीं लांघी पर इस फिल्म मे खलनायक को 'राघव' नाम देकर रामभक्तों की भावनाओं को आहत किया गया हैं।

[152] https://www.youtube.com/watch?v=lfqIDnYzdP8

[153] https://www.youtube.com/watch?v=rwqt8DI-1NQ

[154] https://en.wikipedia.org/wiki/Ranbanka
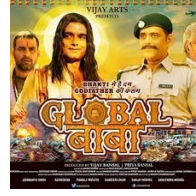
१०१) ग्लोबल बाबा:

२०१६ की फिल्म 'ग्लोबल बाबा' मे 'होली मे उड़े' यह होली के अवसर पर चित्रित तड़काता भड़कता आइटम सॉन्ग हैं। इस गीत का आशय इस प्रकार हैं, लड़की की चोली भीगी हैं और उसके इर्दगिर्द लड़कों की टोली घूम रही हैं। भांग से होली खेलकर लड़की की मांग भर दी हैं। इतनी भांग होली मे पीनी चाहिए की नशा चढ़ता ही रहना चाहिए। होली के दिन भक्तों को भांग पीने के साथ नैन मटक्के की भी आजादी होती हैं और इसीमे उनकी समझदारी दिखकर आती हैं।[155] इस गीत को सूर्या उपाध्याय ने लिखा हैं। इस फिल्म की कहानी भी सूर्या उपाध्याय ने लिखी हैं।[156] ये फिल्म हिन्दू साधु संतों पर सटायर की तरह लिखी गई हैं। फिल्म के लेखक, कलाकार, निर्माता, निर्देशक क्या ऐसा सटायर किसी अन्य धर्म के लिए चित्रित कर सकते हैं?

फिल्म से जुड़े अधिकतर लोग हिन्दू ही हैं और उन्होंने ही धार्मिक प्रथाओं तथा मान्यताओं का मखोल उड़ाया हैं। ऐसे लोग जो केवल नाम के लिए हिन्दू हैं वो समाज के लिए सबसे ज्यादा घातक हैं।

१०२) नवरत्न:

२०१५ मे अरुणाचलम् शेखर दिलीप कुमार मुदलियार (ए आर रहमान) के अल्बम 'नवरत्न' का गीत 'रंग डारूँगी' होली पर चित्रित हैं। इस गीत की गायिका इला पालीवाल हैं। इस गीत मे भारतीयों के साथ विदेशियों को भी होली मनाते दिखया गया हैं। वसुधैव कुटुम्बकं के आदर्श को इस गीत के माध्यम दिखाया गया हैं और यह वास्तव मे सराहनीय गीत हैं। जैसे होली इस गीत मे लोग मना रहे है – पूरी सादगी से वैसी ही मनानी चाहिए।[157] एक उचित अंतर पर खड़े होकर एक दूसरे पर रंग डालने वाली होली और पूरी तरह अपने आप को कृष्ण को समर्पित करने वाली होली ही असली होली हैं।

---

[155] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_mein_ude.htm

[156] https://en.wikipedia.org/wiki/Global_Baba

[157] https://www.youtube.com/watch?v=JOh98r9XiQc
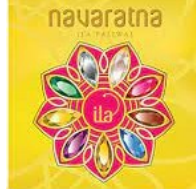
१०३) लाल रंग:

२०१६ की फिल्म 'लाल रंग' का 'भांग रगड़ के' होली के आयोजनों मे बजाया जाने वाला एक और गीत हैं। इस गीत मे लड़का अपने आप को एक अवदूत दरसनी बाबा कहता हैं जिसके घर मे नाग रहते हैं। गीत के अनुसार लड़का भांग रगड़ कर पिता हैं और उसकी प्रेमीका धनवान पिता की बेटी हैं। गीत के बोल के अनुसार लड़के पास पहनेने के लिए केवल लंगोट हैं, उसके पास कंबल तक नहीं हैं, वो राख घोलकर पिता हैं।[158] ये वर्णन शिवभक्त हिन्दू साधु का हैं। एक साधु जिसने मोहमाया त्याग दी उसकी उपमा प्रेमी को देकर हिन्दू साधु लोग भांग और नशा करते हैं ये मिथक इस गीत मे बार बार बताया गया हैं। इस फिल्म के लेखक और निर्देशक सय्यद अहमद अफजल हैं।[159]

१०४) फर्स्ट डेट म्यूज़िकल शॉर्ट फिल्म:

२०१६ मे पेटीएम एप ने एक होली का म्यूज़िकल शॉर्ट फिल्म प्रदर्शीत किया था। कई गायकों ने मिलकर यह गीत गाया था। गीत का शीर्षक हैं, 'दीवारें: यूनिटी सॉन्ग फॉर होली'। ये गीत देश मे एकता बढ़े इसके लिए लिखा और गाया हैं। गीत के बोल मे कुछ भी आपत्ति नहीं हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिख और अन्य धर्म के सभी लड़के मिलकर होली खेल रहे हैं और उनकी एकता से सभी रंग मुक्त होकर होली मे सहभागी हो गए हैं ऐसा बताया गाया हैं। इस विडिओ मे आपको गायकों के साथ बच्चे दिखेंगे। गीत अच्छा संदेश दे रहा हैं। बस जब सभी रंग अपने अपने पिंजरे से बाहर आते हैं तब जिन रंगों का किरदार लड़कियाँ निभा रही थी उन्हे एक गोल टोपीवाला लड़का ही पिंजरे से बाहर निकालता हैं ऐसा बताया गया हैं।[160]

---

[158] https://www.hindilyrics4u.com/song/bhaang_ragad_ke.htm

[159] https://en.wikipedia.org/wiki/Laal_Rang

[160] https://www.youtube.com/watch?v=2KI6h878g0s

टोपीवाले के साथ जाने के बाद लड़की के जीवन मे रंग तो बहुत दूर हो गए अगर प्राण भी बच जाए तो बहुत बड़ी बात हैं। ऐसा एकता का ज्ञान क्या किसी अन्य धर्म के पर्वों पर सिनेमा के गायक या पेटीएम जैसी बड़ी बड़ी कॉम्पनियाँ दे सकती हैं?

१०५) होलियाँ मे उड़े रे गुलाल:

२०१६ मे इला अरुण नामक गायिका ने एक हिन्दी होली गीत प्रदर्शीत किया 'होलियाँ मे उड़े रे गुलाल'। यह गीत राजस्थान मे गाए जाने वाले पारंपरिक लोकगीत पर आधारित है। गीत के बोल इला अरुण ने ही लिखे हैं। इस गीत मे लड़के को नवाब (मुस्लिम राजकर्ता) कहा गया हैं। लड़की हिन्दू हैं।[161] इस बोल के साथ क्या संदेश गीतकार देना चाहते हैं?

१०६) बेगम जान:

२०१७ मे आई बेगम जान मे होली पर चित्रित गीत के बोल हैं 'होली खेले ब्रिज की हर बाला'। इस गीत मे एक लाइन हैं 'भांग रगड़कर शंकर हमारी दर पर आए'। शंकरजी का भांग के साथ क्या संबंध हैं? शंकरजी भांग पीते हैं यह मिथक केवल सिनेमा मे ही देखने मिलेगा। इसका कोई प्रमाण किसी भी हिन्दू धार्मिक ग्रंथ या इतिहास मे नहीं मिलेगा। गीत का संगीत अनवर (अनु) मालिक ने दिया हैं और गीतकार कौसर मुनिर हैं।[162] क्या ये गीतकार भांग का संबंध किसी अन्य मान्यता के ईश्वर के साथ कर सकता हैं? यह फिल्म एक वैश्यागृह की कथा पर आधारित हैं। गीत मे जो महिलाये होली मना रही हैं वो वैश्याएं हैं। यह फिल्म मूल बंगाली फिल्म राजकहिनी का पुनर्निर्माण हैं।[163] हिन्दू धर्म मे होली मनाने तथा अपनी मान्यता के अनुसार भक्ति करने का अधिकार किन्नरों और वैश्याओं को हैं।

१०७) बद्रीनाथ की दुल्हनिया:

२०१७ की फिल्म 'बद्रीनाथ की दुल्हनिया' का होली गीत 'बद्री की दुल्हनिया' हैं। यह गीत युवा धड़कनों मे गूँजते रहता हैं। होली पर चित्रित इस गीत मे नृत्य की

---

[161] https://www.youtube.com/watch?v=uX4rYBXC0Ww

[162] https://www.youtube.com/watch?v=w5mO4PbjMX4

[163] https://www.hotstar.com/in/movies/begum-jaan/1260105565/watch

अश्लीलता, भांग, महिला के संग छेड़छाड़ और अंग विशेष पर पहने कपड़ों को रंगने की बात की गई हैं।[164] प्रेमीका के शरीर के ढके हुए हिस्से को खुलेआम छूना ही असली प्रेम हैं यह संदेश पूजा भट हो या उनके पापा महेश भट हो दोनों ने भर भर के अपनी फिल्मों मे दिया हैं। बद्रीनाथ विष्णुजी के रूप तथा धाम का नाम हैं।

१०८) दशहरा:

२०१८ मे नील नितिन मुकेश कुमार अभिनीत फिल्म आई थी दशहरा। इस फिल्म मे 'जोगनियाँ ले गई ले गई सब लूट लाट के' इस शीर्षक का एक आइटम सॉन्ग हैं जिसे होली के अवसर पर चित्रित किया गया हैं। यह गीत फिल्म के खलनायक के घर पर हो रही होली पार्टी मे प्रस्तुत हो रहा हैं। घुटने के ऊपर तक लो वेस्ट स्कर्ट, डीप नेक छोटी ब्लॉउज पहनी आइटम डान्सर शरीर के कुछ अंगों को हिलाते हुए नृत्य कर रही हैं।[165] इस लड़की को जोगनियाँ कहा गया हैं। बोल के अनुसार ये लड़की सब कुछ लूट कर ले जाती हैं। एक कप कॉफी या एक अंग्रेजी फिल्म देखकर ये जोगनियाँ पट जाती हैं। लड़का लौढियाबाज हैं। लड़का चिलम और हुक्का भी पिता हैं और जोगनियाँ ने उसे चूमना चाहिए।[166]

जोगन यह शब्द हिन्दू साध्वी के लिए आलंकारिक रूप से प्रयोग मे लाया जाता हैं। एक साधु या साध्वी का जीवन मोहमाया को त्यागकर जिया जाता हैं। इस गीत मे जोगन या साध्वी को कुछ और ही स्वरूप मे बताकर हिन्दू सन्यास प्रथा को विकृत किया गया हैं। और लौढियाबाज तथा नशेड़ी लड़के ही प्रेम के लायक होते हैं ये संदेश भी इस गीत के माध्यम से दिया गया हैं। लड़कियाँ ऐसे गीत सुनती हैं, ऐसे ही कुसंस्कारी लड़कों के प्रेमजाल मे फसती हैं और अपना जीवन दुखद कर लेती हैं।

२०१२ मे घटी निर्भया केस के बाद आइटम गीतों को वयस्क श्रेणी (अरेsss ऐडल्ट केटेगरी) मे वर्गीकृत किया गया हैं। ये गीत केवल ऐडल्ट सर्टिफिकेट के साथ ही प्रदर्शीत कीये जा सकते हैं। जिन फिल्मों या फिल्म के किसी दृश्य या गीत को

[164] https://www.youtube.com/watch?v=1YBl3Zbt80A

[165] https://www.youtube.com/watch?v=nf89UnvQuTg

[166] https://lyricsing.com/dassehra/joganiya-song-lyrics.html

वयस्क श्रेणी मे वर्गीकृत किया जाता हैं वो अठारह साल से कम उम्र के बालक नहीं देख सकते।[167] यह गीत टी-सीरीज के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं तथा इस पर कोई आयु प्रतिबंध (अरेsss ऐज रीस्ट्रिक्शन) नहीं हैं।

१०९) जीनियस

२०१८ की फिल्म 'जीनियस' का गीत 'होली हैं' होली पर चित्रित हैं। इस गीत के बोल मनोज मुंतशीर शुक्ला ने लिखे हैं।[168] गीत का चित्रण मंडीरे के सेट पर किया गया हैं। गीत के अनुसार लड़का प्रेम के सारे मंत्र रटके राधाजी को घूँघट उठाने कहता हैं। राधा जी का रूप देखकर लोग रस्ता भटक जाते हैं।[169] राधाजी भक्ति की केंद्र हैं, पर इस गीत मे तो उन्हे आम कन्या की तरह प्रेमीका समझा गया हैं। जिन राधाजी के स्मरण मात्र से लोगों को उचित समाधान मिल जाता हैं उन्हे देखकर रस्ता भटकने की बात ही गलत हैं।
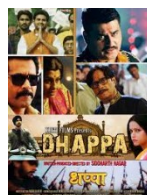
११०) धप्पा:

२०१८ की फिल्म 'धप्पा' का गीत 'आज बिरज मे' होली पर चित्रित गीत हैं। गीत का आशय राजनीति की गंदगी को बयान करती हैं। एक राजनेता जिसने भगवा गमछा पहना उसे रावण कहा गया हैं, जो राम के भेस मे आया हैं। फिर दूसरा राजनेता जिसने नीला कोट पहना हैं, एक लड़के साथ आता हैं। ये लड़का उस भगवाधारी से बदला लेने हेतु बंदूक लेकर होली आयोजन मे आता हैं। नीले कोट वाले राजनेता के कहने पर लड़का भगवाधारी राजनेता को मार देता हैं।[170] नीला रंग दलित हिन्दू और बौद्ध जातियों को दर्शाता हैं और भगवा रंग सवर्ण हिन्दू जातियों को दर्शाता हैं। जातीय विद्वेष को बढ़ावा देनेवाला सीन इस गीत मे हैं।

---

[167] https://www.youtube.com/watch?v=VADPTf7TKo4

[168] https://www.hindilyrics4u.com/song/holi_biraj_ma.htm

[169] https://www.youtube.com/watch?v=2tL1xaMhKD4

[170] https://www.youtube.com/watch?v=YfQxwlGdxfQ

१११) इश्केरिया:

२०१८ की फिल्म 'इश्केरिया' का 'जीन्स पैन्ट' ये होली पर चित्रित गीत हैं। गीत के बोल के अनुसार जीन्स, पैंट और चोली मिलकर होली खेलेंगे। लड़के के कपड़े तंग करते हैं। लड़की शर्ट का एक बटन खोल कर होली खेलेगी। गोपियों ने माखन के साथ भांग मिलाकर रखी हैं। लड़की को राधा और लड़के को माखनचोर (श्रीकृष्ण) कहा गया हैं। गीत का नृत्य वक्षस्थल की और ध्यान आकर्षित करने वाला हैं और कलाकारों के भाव अश्लील तथा कामुक हैं। पूरा गीत रेन डांस के फ्लोर पर शूट किया गया हैं।[171] कृष्णजी माखन चोरी करते थे इसके कई प्रमाण मिल जाएंगे पर कृष्णजी या उनके सखा या गोकुल की गोपियाँ भांग का सेवन करते थे इसका कोई प्रमाण नहीं हैं। माखन कई जगहों पर कृष्ण के प्रसाद के रूप मे आज भी दिया जाता हैं। इस गीत मे राधा-कृष्ण की छवि धूमिल की गई हैं।

११२) फॅमिली ऑफ ठाकुरगंज:

२०१९ की जिमी शेरगिल की 'फॅमिली ऑफ ठाकुरगंज' का 'आसमान से बरसे रंग' होली पर चित्रित गीत हैं। गीत मे भांग पीसी जा रही हैं और उसे दूध मे मिलाकर पिया भी जा रहा हैं। बोल के अनुसार लड़के ने लड़की की कमर पर ही रंग लगाना चाहिए इससे कमर रंगीन हो जाती हैं। गीत के नृत्य मे केवल नितंब और वक्षस्थल हिलाना ही हैं। कलाकारों के चेहरे के भाव अश्लील और कामुक हैं।[172] नशा और कामुकता को इस गीत मे बढ़ावा दिया गया हैं।

११३) मिलन टॉकीज:

२०१९ की 'मिलन टॉकीज' फिल्म मे 'माइन्ड न कर होली हैं' ये होली पर चित्रित गीत हैं। अमिताभ भट्टाचार्य ने लिखे इस गीत मे भांग तथा नशा होली के साथ मे जोड़ा गया हैं। लड़का लड़की को छेड़ता हैं और कहता हैं की होली का मौका हैं तो छेड़खानी चलती हैं। लड़का लड़की को भांग का लड्डू भी खिलाता हैं।[173] लड़कियों

---

[171] https://www.youtube.com/watch?v=vEYtE487QG8

[172] https://www.youtube.com/watch?v=w1Rl9mo9loo

[173] https://www.youtube.com/watch?v=d4wbju0Bsv0

को नशा करवा के उनके साथ शारीरिक संबंध बना कर, उनके आपत्तिजनक वीडियोज़ कैप्चर कर बाद मे उनका भयादोहन (अरेsss ब्लॅकमेलिंग) के कई मामले आए दिन सामने आते हैं, पर सिनेमा के प्रभाव से लड़कियाँ दोस्ती के नाम पर किसी से भी कुछ भी लेकर पीने या खाने से हिचकिचाती नहीं। इस फिल्म के हीरो अली फजल हैं। इस प्रेमकहानी मे प्रेमीका के माता पिता प्रेमी जोड़े के रिश्ते से सहमत नहीं होते। फिल्म मे माँ पिता को प्रेम और जीवन का दुश्मन बताने का प्रयास किया गया हैं।[174] असल जीवन मे माँ पिता के अलावा और कोई सबसे बड़ा शुभचिंतक नहीं होता पर सिनेमा मे सबसे बड़े खलनायक तो प्रेम से पालने वाले ही बताए जाते हैं। यह कुटुंब व्यवस्था पर आघात करने वाली साजिश हैं।

१ १ ४) अँगने मे आया कलरफुल कन्हैया:

नेहा कक्कर का २०२० मे प्रदर्शीत गीत 'अँगने मे आया कलरफुल कन्हैया' होली पर आधारित हैं और यह गीत टी-सेरिस का हैं। गीत के शुरुआत मे लड़की के घर पर किसी मुगल आक्रांता की तस्वीर दिखाई गई हैं। कन्हैया आता हैं और महिलाये रुपया फेकती हैं। ये बोल क्या दर्शाना चाहते हैं? वैसे कुछ जगहों पर रुपया मृत व्यक्ति के शव पर फेका जाता हैं। आगे लड़की के बदन पर पानी गिरते ही वो और हॉटर दिखने लगती हैं ऐसा भीगी लड़की का वर्णन हैं। वास्तव मे नग्न लड़की को नहाते और कपड़े पहनते बताया गाया हैं, जिसे लड़का छिपकर ताड़ रहा हैं। लड़की हुक्का पी रही हैं और नशा कर रही हैं। जो लड़का आया हैं उसे तो कन्हैया (श्रीकृष्ण) की उपमा देने के बाद उसे लड़की के पीछे दीवाना, छलिया और अनाड़ी कहा गया हैं। इस गाने का नृत्य अश्लीलता से भरा हैं। इस गीत मे लड़के की पहले से एक प्रेमीका हैं और उसके रहते हुए वो अन्य लड़कियों के साथ अश्लील नृत्य करता और दूसरी लड़की को नहाते हुए देखता हैं।[175] यह कृष्ण के चरित्र की अवमानना हैं।

१ १ ५) होली रंगीली होली:

[174] https://www.imdb.com/title/tt3679070/

[175] https://www.youtube.com/watch?v=f8L3KSAvawM

२०२१ मे अंतर्जाल पर साजिद वाजीद का 'होली रंगीली होली' यह गीत प्रदर्शीत हुआ। गीत की शुरुआत श्रीनाथजी की पूजा से हो रही हैं तो आपको लगेगा ये तो भक्ति गीत हैं। राजस्थान मे कृष्णजी को श्रीनाथजी के रूप मे पूजा जाता हैं और इनकी सेवा काफी कठीण हैं। पर अगले ही पल आप देखेंगे श्रीनाथजी के मंदिर मे ही साधु के भेष मे कोई भांग रगड़ रहा हैं। फिर लड़का लड़की की कमर का वर्णन करता हैं और लड़की की कमर पर केंद्रित नृत्य किया गया हैं।[176] यह अश्लीलता हिन्दू त्योहार पर ही क्यू की गई हैं?

११६) जुगजुग जियो:

२०२२ की करण जौहर की फिल्म जुगजुग जियो मे होली पर चित्रित एक गीत हैं 'रंगी सारी चुनरियाँ'। यह गीत शास्त्रीय गायिका शोभा गुर्टू की प्रसिध्द ठुमरी 'रंगी सारी चुनरियाँ' का पाश्चात्य संगीत के साथ मिश्रण हैं (अरेsss रिमिक्स) हैं। मूल गीत के बोल बहुत अद्भुत हैं। अगर किसी चीज का सत्यानाश करना हो तो उसे बॉलीवुड को दे दो। बस ऐसा ही कुछ इस ठुमरी के साथ इस गीत के संगीतकार तथा गायक कनिष्क सेठ और कविता सेठ ने किया हैं। इस गीत मे कलाकारों ने पहने कपड़े आधुनिकता के नाम पर नग्नता को बढ़ावा देने वाले हैं। गीत का नृत्य बेहद कामुक हैं।[177] और इस गीत को २०२२ के ६८वे फिल्मफेयर पुरस्कारों मे तथा झी सिने अवार्ड्स के सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्वगायिका पुरस्कार मिले हैं।[178] ऐसे गीतों को पुरस्कृत किया जाएगा तो ऐसे ही गीत बनेंगे – रिमिक्स कर मूल गीतों का सत्यानाश करने वाले। जब बच्चों की शादियाँ होने की उम्र हैं, दादा-दादी बनने की उम्र हैं तब तलाक लेने की ये कहानी हैं। तलाक का कारण विवाहबाह्य प्रेम प्रकरण हैं। जीवनभर का साथ छोड़ दो क्यू की आपको कोई और पसंद या गया हैं। बस यही इस फिल्म की कहानी हैं। पूरी फिल्म मे विवाहबाह्य प्रेम प्रकरण और जीवनसाथी की अवहेलना यही बताया गया हैं। और ऐसी फिल्मे देखने लोग सहपरिवर गए थे। शांतिपूर्ण समाज मे तलाक जैसा जहर घोलने का काम यह फिल्म कर रही हैं।

[176] https://www.youtube.com/watch?v=GQwOti2ahmY
[177] https://www.dailymotion.com/video/x8by4nl
[178] https://en.wikipedia.org/wiki/Jugjugg_Jeeyo
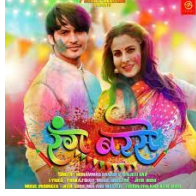
११७) रंग बरसे:

२०२३ मे अंतर्जाल पर होली के उपलक्ष मे एक गीत प्रदर्शीत हुआ 'रंग बरसे'। इस गाने के बोल के अनुसार होली के दिन पानी टकीला (एक तरह की शराब) जैसा हो जाता हैं। होली इतनी खेलनी हैं की चोली भीग जाए।[179] होली और चोली को इस तरह से बांध दिया हैं की होली के गीतों मे केवल महिला के अंतरवस्त्र के गीले होने की ही बात आप सुनेंगे। मा बाप खुद ऐसे गीत अपने परिवार के साथ होली जैसे पर्व पर सुनते हैं। फिर जब बच्चे नशे के आदि हो जाते हैं या उनमे अतीव कामुकता के भाव जागते हैं तो आपके सामने माथे पर हाथ रखने के अलावा और कुछ नहीं बचता।

११८) सफेद:

२०२३ मे एक हिन्दी फिल्म प्रदर्शीत हुई थी सफेद नाम की। फिल्म एक विधवा स्त्री और एक तृतीयपंथी (अरेsss ट्रांसजेन्डर) की प्रेम कहानी हैं। इसमे एक होली गीत हैं 'रंग रसिया'। गीत के बोल के अनुसार होली के अवसर पर प्रेमियों को एक हो जाना चाहिए। गीत का आयोजन एक विधवा आश्रम मे किया गया हैं। सब विधवाये होली खेल रही हैं। तभी विधवा नायिका का तृतीयपंथी प्रेमी नायक वहा उसके साथ होली मनाने वहा आ जाता हैं। नयिका उसे लेकर एक कमरे मे जाती हैं और साड़ी का पल्लो गिराकर उसे कामपूर्ति के लिए आमंत्रित करती हैं। नायिका का ये असहज रूप देख नायक वहा से चला जाता हैं। [180]

जवान विधवा की भी शारीरिक अवश्यकताए हो सकती हैं पर उनका ऐसा अश्लील प्रदर्शन करना क्या उचित हैं? फिल्म मे एक सामाजिक संदेश देने का प्रयास किया गया हैं। विधवा का नाम काली हैं और तृतीयपंथी का नाम चंडी।[181] फिल्म निर्माता समाज प्रबोधन का संदेश देना चाहते हैं पर इसके लिए केवल हिन्दू धर्म को ही दूषित बताने की जरूरत नहीं हैं। केवल हिन्दू धर्म ऐसा हैं जहा तृतीयपंथी को कई

---

[179] https://www.youtube.com/watch?v=RoYs7kkSCHE

[180] https://www.youtube.com/watch?v=PNh57qb5vs0

[181] https://en.wikipedia.org/wiki/Safed_(film)

मौलिक अधिकार के साथ साथ राजनैतिक अधिकार भी थे। ये सारे अधिकार क्रिमिनल ट्राइब ऐक्ट १८७१ के तहत अंग्रेजों ने छिन लिए और तृतीयपंथी समाज को अपराधी घोषित कर दिया और तब से तृतीयपंथी जन सामाजिक बहिष्कार को झेल रहे हैं। विधवाये और तृतीयपंथी सभी धर्मों मे होते हैं। भारत मे आजतक अन्य धर्मों के तृतीयपंथी समस्याओं को लेकर क्या कोई फिल्म बनी हैं?

तो ये थे सन १९४० से लेकर सन २०२३ तक के होली पर चित्रित हिन्दी फिल्मों के गीत। ये पढ़ने के बाद कई ऐसे भी लोग रहेंगे जो कहेंगे भांग तो कई दशकों से होली और शिवरात्रि पर पी जा रही हैं। तो उन सबको मेरा एक प्रश्न हैं, 'भांग के सेवन के बाद जब कोई होश मे ही नहीं रहता तो वो पूजा या भक्ति कैसे कर सकते हैं?'

कार्यप्रणाली, अभिस्वीकृती, प्रकल्पना:

कार्यप्रणाली:

यह चिंतन पुस्तिका गुणात्मक शोध प्रणाली के आधार पर लिखी गई हैं। इस चिंतन पुस्तिका को लिखने के लिए अनेकों गीत, फिल्में देखी गई। कई फिल्मों के प्लॉट भी पढे गए। गीतों के बोल अर्थात लीरिक्स भी अंतर्जाल के माध्यम से पढे गए हैं। उचित स्थानों पर इन सब के उद्धरण हेतु अन्तर्जालीय पता (लिंक) दी गई हैं। इस पूरे शोध एवं चिंतन के लिए ३० दिनों तक लेखिका ने अथक प्रयास किए हैं। इस चिंतन पुस्तिका का उद्देश्य, सिनेमा के होली गीतों की फूहड़ता के परिणाम से वाचकों को अवगत कराना हैं।

अभिस्वीकृति:

लेखिका अपने सभी परिवारजनों का धन्यवाद देती हैं जिन्होंने इस शोध पुस्तिका के लेखन के समय लेखिका को सहयोग दिया। लेखिका जेम्स ऑफ बॉलीवुड का हृदय की गहराई से धन्यवाद देती हैं जिनके कार्य ने लेखिका को इस चिंतन पुस्तिका को लिखने के लिए प्रेरित किया। गूगल सर्च को धन्यवाद क्यू की सभी गीत, फिल्में, लीरिक्स गूगल सर्च के माध्यम से सहजता से मिले। रिलायंस जिओ का विशेष आभार जिनके निरंतर अंतर्जाल सेवा के कारण यह पुस्तिका लिखने के लिए लगनेवाले सभी गीत तथा फिल्में बिना किसी व्यवधान के देख सकी।

प्रकल्पना:

१) गीतों का विशेष असर जनमानस पर होता आया हैं तभी वन्देमातरम जैसा राष्ट्रगीत लोगों को एकसूत्र मे बांधे रखता आया हैं।

२) फिल्मों का भी अपना प्रभाव समय समय पर जनता के मस्तिष्क पर होते आया हैं।

३) फिल्मी गीतों का असर भी धरातल पर अनेक घटनाओं को प्रेरित करता आया हैं।

निष्कर्ष, सुझाव, लेखिका का परिचय एवं सहयोग:

निष्कर्ष:

इतने गीत सुनने, देखने तथा उनके बोल ध्यान से पढ़ने के बाद ये निष्कर्ष निकलता हैं की अधिकांश फिल्मी गीत महिलाओं के साथ अभद्रता को बढ़ावा देने वाले हैं। अधिकांश गीतों मे महिलाको वस्तुनिष्ट बनाया गया हैं, एक उपभोग की वस्तु बताया गया हैं। भांग और अन्य तरह के नशे को भी हिन्दू त्योहार होली के साथ जोड़ा गया हैं। राधा और कृष्ण की प्रेमलीला को एक आम वासना से भरी प्रेमकहानी को बार बार बताया गया हैं। अधिकांश गीतों मे श्रीकृष्ण का चरित्रहनन (अरेsss कैरेक्टर असासिनेशन) किया गया हैं। फिल्मी दुनियाँ से जुड़े लोग, भलेही वो हिन्दू धर्म के मानने वाले हो, केवल व्यापार करने के लिए होली जैसे हिन्दू भक्ति पर्व को गलत तरीके से प्रदर्शीत कर रहे हैं।

सुझाव:

इस चिंतन पुस्तिका को लिखने के बाद सुझाव तथा इस समस्या के समाधान निम्न प्रकार से हैं:

१) होली आयोजनों के लिए, होली से जुड़े भजन सभी भजन लेखक तथा गायक प्रदर्शित करें। ऐसे भजन लगाकर भी आप होली मे नृत्य का आनंद ले सकते हैं।

२) मंदिरों ने फुलेरा दूज के दिन से ही निम्नलिखित सूचना लिखनी चाहिए:

होली मे भांग का सेवन नहीं करना चाहिए

३) कुछ गीत बोल के अनुसार ही वयस्क श्रेणी मे आते हैं, उसके लिए ऐसे गीतों पर आयु प्रतिबंध की मांग उस वेबसाईट पर करनी चाहिए जहा ये प्रदर्शित हुए हैं।

४) अगर लड़कियाँ इन गीतों से प्रभवित होकर या इन फिल्मों से प्रभावित होकर, अपनी वासना के सामने विवश हो जाती हैं और किसी ऐसे लड़के की प्रेम मे अंधी हो जाती हैं जो उनके लायक भी नहीं हैं, तो वे अपने आप के साथ सबसे पहले गलत कर रही हैं। अगर लड़कियाँ विवाहपूर्व ही ये करने के बाद गर्भवती होती हैं तो उन्हे ही इस अवस्था के परिणाम स्वयं भुगतने पड़ते हैं। गर्भपात करने के बाद शरीर मे अन्य स्वास्थ्य समस्याए उत्पन्न हो सकती हैं, जिनका असर बड़े लंबे समय के बाद पता चलता हैं। ऐसी समस्याएं गर्भाशय तथा स्तनों के कर्करोग मे भी परिवर्तित हो सकती हैं। इसीलिए सोच समझकर अपनी भावनाओं पर अंकुश रखना लड़कियों को सीखना चाहिए।

५) बहिष्कार एक उपाय हैं। पर ये तबतक प्रभावी नहीं हैं जबतक इन गीतों के लिए पर्याय नहीं मिलता। और यही पर्याय भक्तिभाव वाले भजन लिखना और उन्हे संगीतबद्ध कर प्रदर्शित करना हैं।

६) पारंपरिक लोकगीत जिनमे फूहड़ता और नशा नहीं हैं ऐसे गीतों को भी संगीतबद्ध कर प्रदर्शित किया जा सकता हैं।

लेखिका का परिचय:

इस शोध पत्रिका की लेखिका रिंकू ताई एक सामान्य गृहिणी हैं तथा एल्.एल्.एम्. की पदवी की पढ़ाई कर रही हैं। इसके पहले अयोध्या निर्णय पर आधारित प्रश्नावली लेखिका ने लिखी हैं। हिन्दू मंदिरों से जुड़े न्यायिक निर्णयों पर लेखिका लेख लिखती हैं।

सहयोग की प्रार्थना:

आपकी इस शोध-पुस्तिका पर जो भी टिप्पणी हैं वो अवश्य rinkutaibackup@gmail.com पर भेजे।

अगर आप मेरे कार्य से सहमत हैं तो कृपया इस पुस्तिका को अन्य भाई-बहनों के साथ साझा करें।

ऐसी ही और चिंतन पुस्तिकाये आपके मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन के लिए मैं लिख सकु इसके लिए अपनी शक्ति के अनुसार नीचे दिए क्यू आर कोड को स्कैन कर दान दे।

यहा तक पढ़ने के लिए धन्यवाद!

जय श्री राम